स्वामी ज्ञान नाथ जी महाराज के
रूहानी प्रवचनों को सुनने के लिये उमड़ता जन सैलाब

सम्पर्क सूत्र :-

www.nirakarijagritimission.com

निराकारी जागृति मिशन (रजि०) की शुरुआत

निराकारी सत्संग धाम

नारायणगढ़ (अम्बाला) हरियाणा

निराकारी जागृति मिशन (रजि०)
की
शुरूआत

सतगुरू शहनशाह
हुजूर लक्ष्मण सिंह जी महाराज
के मुखारबिंद से पावन सत्संग
प्रवचनों का संग्रह
एवं
सदगुरूओं का जीवन परिचय

निराकारी सत्संग धाम
नारायणगढ़ (अम्बाला) हरियाणा

निराकारी जागृति मिशन (रजि०) की शुरुआत

प्रथम संस्करण-2011

प्रकाशक :-
मौजीलाल
प्रभारी
शाखा-कानपुर
एम.आई.जी. ई-67,
कल्याणपुर, कानपुर
दूरभाष :
09450583985, 09451220589 (यू.पी)
09992054888, 09416499873 (हरियाणा)

© सर्वाधिकार सुरक्षित

लेखक :-
स्वामी ज्ञान नाथ
एडवोकेट
मौजूदा गद्दीनशीन राष्ट्रीय अध्यक्ष
निराकारी जागृति मिशन

मुद्रक -

सहयोग राशि - 100रु.

लेखक की कलम से ....

भौतिकवाद एवं पदार्थवाद की चकाचौंध और नाना प्रकार की लौकिक कामनाओं की पूर्ति के लिए हर समय व्यस्त जिंदगी की भागमभाग के चलते दौर में मानव जीवन के चहूँमुखी विकास पर सवालिया चिंह लग गया है। पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण आज का मानव भारतीय सभ्यता और संस्कृति को निरंतर भूलता जा रहा है और असलियत से कोसों दूर चला गया है।

मनुष्य जीवन 84 लाख योनियों के बाद मिलता है। इस मानव जीवन का सबसे पहला और अंतिम उद्देश्य जीते जी निर्गुण-निराकार एवं सर्वाधार परमात्मा का खुली ऑखो से दर्शन-दीदार करना है। संसार की आसक्ति और रंग रूप आकार के आकर्षण से छुटकारा पाकर मोक्ष-मुक्ति को प्राप्त करना है। अज्ञानता और अविद्या के वशीभूत होकर आज इंसान भौतिकवाद में बुरी तरह से फंस गया है और जीवन में अक्षय आनंद, सुख-शांति सिर्फ एक सपना सा बनकर रह गया है।

बियावान जंगलों और गुफाओं में लंबे समय तक निरंतर कठोर तपस्या, बाहरमुखी अनाप-शनाप कर्मकाण्ड, जप तप, व्रत उपवास, ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ, तरह-तरह की करामातें एवं चमत्कार और अनेकों प्रकार की अघोर साधना-अराधना तथा धार्मिक कृत्य, तीर्थों पर घूमना-फिरना तथा स्नान आदि करके भी जब कुछ हाथ नही लगता तो निश्चय ही ऐसी असमंजस में उलझा हुआ हताश और निराश साधक यह सोचने-विचारने पर मजबूर हो जाता है। आखिर परमात्मा क्या है, कैसा है, कहाँ रहता है, अगर सृष्टि के कण-कण में समाया है तो फिर नजर क्यों नही आता।

जन्म-जन्मांतरों से उलझी हुई इस पहेली को सुलझाने के लिए हमेशा अंतःकरण में एक कसक सी उठती है और दिल में न जाने कहाँ गुम हो जाती है। ख्यालातों के इन्ही छोटे-बड़े उतार-चढ़ावों से गुजरते हुऐ बे-चैन दिल में निरंतर यह कुरेद होती है कि आखिर अब क्या किया जाये, किससे मिला जाये, किस धर्म की बात को माना जाये, कहाँ और कैसे किस तौर-तरीके से परमात्मा की खोज की जाये, किस नाम से पुकारा जाये, किस गुरू की बात को माना जाये।

इस प्रकार के अनेकों प्रश्न जब चारों तरफ से घेर लें, निरंतर झकझोरने लगें और जीवन ऐसे मोड़ पर खड़ा हो तो इन उपरलिखित तमाम सवालों का जबाब हमे सिर्फ वक्त के ब्रह्मज्ञानी आत्मदर्शी और तत्ववेत्ता सतगुरू की तन, मन, वचन और कर्म से समर्पण और शरणागतभाव तथा बाखूबी उनके आदेश और उपदेश की पालना करने से मिल सकता है। इसके अलावा दूसरा और कोई तौर-तरीका है ही नही। क्योंकि तत्वदर्शी वक्त का सतगुरू ही निर्गुण-निराकार परमात्मा के साथ मिलाने और पल भर में खुली आँखों से दर्शन दीदार करने और कराने में सक्षम होता है।

जैसे इंसान की भूख भोजन से मिटती है और प्यास पानी से बुझती है ठीक इसी प्रकार से सभी को सुख-शांति, अक्षय परम आनंद और मोक्ष-मुक्ति की प्राप्ति भी निज स्वरूप आत्मा के ज्ञान से ही हो सकती है। इसके लिए दूसरा कोई सटीक और कारगर तौर-तरीका नही है। संसार में जहाँ झूठ है वहाँ सच भी है, जहाँ जहर है वहाँ अमृत भी है, जहाँ अधूरापन है वहीं पर परिपूर्ण ब्रह्मज्ञानी सतगुरू भी है जो हमें पलभर में खुली आँखों से इस अंग-संग निर्गुण-निराकार परमात्मा का दर्शन करा सकता है। बस जरूरत है सच्चे दिल से खोजबीन करने की।

प्रस्तुत पुस्तक निराकारी जागृति मिशन की शुरूआत में आध्यात्मिक जिज्ञासुओं को समय समय के अनुसार आये वक्त के तत्वदर्शी सतगुरूओं के मुखारबिन्द से आध्यात्मिक अमर संदेश तथा पावन उपदेश और मिशन की विचारधारा एवं उद्देश्य के बारे में पढ़ने को मिलेगा।

निराकारी जागृति मिशन के सबसे पहले सदगुरू निराकारलीन परमवंदनीय हुजूर बाबा बूटा सिंह जी

महाराज हुऐ जिनका जन्म अविभाज्य हिन्दुस्तान पेशावर में हुआ। दूसरे सतगुरू परमपूजनीय निराकारलीन हुजूर बाबा महताब सिंह जी महाराज का जन्म भी पेशावर में ही हुआ लेकिन बाद में हुजूर महाराज कानपुर यू.पी. में आ गये थे। उपरांत तीसरे सतगुरू निराकारलीन परमपूजनीय हुजूर बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज का जन्म गाँव बब्याल जिला अम्बाला हरियाणा में हुआ।

काफी समय से महापुरूषों और मातृशक्ति की यह पुरजोर मांग थी कि निराकारी जागृति मिशन के सदगुरूओं और मिशन की विचारधारा के बारे में कोई धार्मिक पुस्तक छपवाई जाये।

प्रस्तुत पुस्तक को लिखने का दासनदास ने सतगुरू की कृपा और इस ओत-प्रोत निर्गुण-निराकार एवं सर्वाधार परमात्मा के अनुग्रह से एक छोटा सा प्रयास किया है। दास कोई ज्यादा पढ़ा-लिखा, और विद्वान नही है। ना ही कोई कवि, शायर और लेखक है।

जो भी लिखने का प्रयास किया गया है यह सब सतगुरू शहनशाह बूटा सिंह जी महाराज, परमपिता हुजूर बाबा महताब सिंह जी महाराज और मेरे हृदय के सम्राट परमपूजनीय, प्रातः स्मरणीय हुजूर शहनशाह लक्ष्मण सिंह जी महाराज की अपार कृपा से ही संभव हो सका है।

अगर लिखने में कोई गलती हुई होगी तो मेरी समझना और अच्छाई होगी तो साधू-संगत और सदगुरू की

आशीष और आर्शीवाद समझना।

अगर प्रस्तुत पुस्तक के दो शब्द पढ़ने से आध्यात्मिक जिज्ञासुओं को ब्रह्मज्ञान के बारे में प्रेरणा मिले और जीवन का उत्थान हो जाये तो मैं समझूगाँ कि मेरा जीवन धन्य हो गया है।

धन निराकार जी।

निवेदक :-

स्वामी ज्ञान नाथ
एडवोकेट
वर्तमान गद्दीनशीन राष्ट्रीय अध्यक्ष
निराकारी जागृति मिशन (रजि0)
वार्ड नं0-6, नाहन रोड
नारायण गढ़, अम्बाला (हरियाणा)

आर्शीवाद एवं धन्यवाद के पात्र

प्रस्तुत पुस्तक के प्रथम संस्करण को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। मुझे आशा ही नही बल्कि पूर्ण विश्वास है कि पाठकों को इस में छपी सामाग्री को पढ़कर आत्मज्ञान के प्रति एक नया दृष्टिकोण, नया उत्साह और नित नयी प्रेरणा मिलेगी। निश्चय ही साधक आत्म विकास की दिशा में अग्रसर होने में सक्षम होकर लाभान्वित होंगे।

संयोजन और सफल प्रकाशन के लिए जिन महापुरूषों एवं मातृशक्ति से विशेष सहयोग प्राप्त हुआ है निश्चय ही ऐसे सहयोगी सत्संगी सतगुरू के आर्शीवाद एवं धन्यवाद के पात्र है।

इस पुस्तक के मुख पृष्ठ एवं अंतिम पृष्ठ की साज–सज्जा करके बेहतर आकर्षक बनाकर एवं संयोजन के सराहनीय कार्य के लिए महापुरूष भूपेन्द्र वर्मा, डायरेक्टर, जी. डी. वर्मा आई. आई. टी कैमिस्ट्री क्लासेस, काकादेव, कानपुर को बहुत–2 साधुवाद एवं धन्यवाद।

साफ्टवेयर इंजीनियर राहुल कुमार, चेन्नई का निराकारी जागृति मिशन की वेबसाइट की डिजाइनिंग एवं समय–2 पर साइट की अपडेटिंग तथा अन्य सराहनीय टेकनिकल कार्य करने के लिए गुरूघर की तरफ से बहुत–2 आशीष एवं धन्यवाद।

पुस्तक की प्रुफ रीडिगं के कठिनतम कार्य के लिए महापुरूष राजा राम राजू, मैनेजर, यूनियन बैंक, उरई, दर्शन सिंह, स्टेशन मास्टर, कल्याणपुर, कानपुर, खुशीराम गौतम,

मैनेजर बड़ौदा उत्तर प्रदेश ग्रामीण बैंक, मेवालाल, विद्या राम गोयल, कानपुर, मैनेजर, बड़ौदा उतर प्रदेश ग्रामीण बैंक, कानपुर श्रीमती सरस्वती, वीना दीदी मीडिया प्रभारी निराकारी जागृति मिशन, कानपुर शाखा का विशेष योगदान रहा है।

इस पुस्तक के प्रकाशन के लिए उदार हृदय से पर्याप्त धन राशि जुटाने के लिऐ निम्नलिखित महापुरूषों एवं मातृशक्ति का विशेष योगदान रहा। ये सभी गुरूघर की सेवा के लिए धन्यवाद एवं आर्शीवाद के पात्र हैं।

1.	महापुरूष कंवर भान कमल,	डेराबसी, पंजाब	आजीवन सदस्य
2.	" दाताराम	नारायणगढ़ अम्बाला, हरियाणा	"
3.	" मौजीलाल	कानपुर, यू0पी0	"
4.	" राजाराम	कानपुर, यू0पी0	"
5.	" श्याम मदान	संगरूर, पंजाब	"
6.	" यशपाल भट्टी	पिंजौर, हरियाणा	"
7.	" राजकुमार	बलदेव नगर, अम्बाला	"
8.	" विजेन्द्र	अम्बाला शहर, हरियाणा	"
9.	" जसमेर सिंह	अम्बाला शहर, हरियाणा	"
10.	" मेहर चन्द सारन,	यमुना नगर, हरियाणा	"
11.	" कमल	तोपखाना, हरियाणा	"
12.	" इंजि. हेमराज सिंह	चण्डीगढ़	"
13.	" बलविन्दर सिंह	भूरेवाला, हरियाणा	"
14.	" बक्शा राम	कुराली, हरियाणा	"
15.	" चौ.पवन कुमार	अम्बाला, हरियाणा	"
16.	" प्रीत मदान	पटियाला, पंजाब	"
17.	" कैप्टन तेजा सिंह	कुराली हरियाणा	"
18.	" सपट्टर सिंह	बोह–अम्बाला	"
19.	" रमेश चन्द	मोहाली, पंजाब	"
20.	श्रीमती दर्शना देवी	नारायणगढ़	"

विषय-सूची

जीवन परिचय

1. पहले सत्गुरू शहंशाह हुजूर बूटासिंह जी महाराज..... 13

2. दूसरे सत्गुरू शहंशाह हुजूर महताब सिंह जी महाराज..... 17

3. तीसरे सत्गुरू शहंशाह हुजूर लक्ष्मण सिंह जी महाराज 37

4. चौथे मौजूदा गद्दीनशीन सत्गुरू शहंशाह हुजूर स्वामी ज्ञान नाथ जी महाराज. 41

हुजूर लक्ष्मण सिंह जी महाराज के मुखारबिन्द से रूहानीसत्संग प्रवचनों का संग्रह

5. 15 मार्च 1998 बब्याल, हरियाणा 65

6. 10 मार्च 1999 कल्याणपुर, कानपुर, यू0पी0 71

7. 20 मार्च 1999 संजय नगर, कानपुर यू0पी0 89

8. 10 फरवरी 2001 रतनपुर, कानपुर, यू0पी0 99

9. 20 मार्च 2001 अर्मापुर, कानपुर, यू0पी0 109

10. 23 दिसम्बर 2001 गाँव बोह, अम्बाला, हरियाणा 115

11. 5 अप्रैल 2002 पनकी, कानपुर, यू0पी0 123

12. 7 मई 2002 तोपखाना, अम्बाला कैण्ट, हरियाणा 129

13. 15 जुलाई 2002 बलदेव नगर, हरियाणा 137

14. 2 सितम्बर 2002 कैथल, हरियाणा 149

15. 17 जनवरी 2003 कुराली, हरियाणा 159

16. 30 मार्च 2003 रोहतक, हरियाणा 169

17. 15 मई 2003 सिन्धी धर्मशाला, कानपुर यू0पी0 183

18. 10 अक्टूबर 2003 संगरूर, पंजाब 197

" समर्पित "

उन श्री चरणों को
जो अज्ञान से ज्ञान
अपूर्णता से पूर्णता
अंधकार से प्रकाश
एवं
मोक्ष–मुक्ति की
ओर ले जाते हैं।

सत्गुरू शहंशाह हुजूर बूटासिंह जी महाराज

हिन्दुस्तान की पावन पवित्र वसुन्धरा पर समय समय के अनुसार तत्वदर्शी आत्मवेत्ता–

'जो परमात्मा को तत्व से जानता हो'

संत महापुरूषों ने अवतार लिया। इसीलिए भारत अनादि काल से ऋषि–मुनि एवं पीर–फकीर पैगम्बरों की जन्म भूमि के रूप मे जाना जाता है। इतिहास इस बात का गवाह है कि हिन्दुस्तान के धर्म गुरूओं से विश्व की अनेकों महान विभूतिओं ने आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त किया। यही कारण है कि विश्व के मानचित्र पर भारत सबसे पहला महान अध्यात्मिक गुरू कहा जाता है।

जब अज्ञानता–अविद्या, हठधर्मिता चरम सीमा पर पहुँच जाती है और समाज तरह–तरह की कुरीतियों और असमानता से ग्रस्त हो जाता है तब पारब्रह्म निर्गुण–निराकार एवं सर्वाधार परमचैतन्य सर्वशक्तिमान परमात्मा स्वयं संत–महापुरूषों का रूप धारण करके संसार में आता है और भूले भटके पथभ्रष्ट लोगों को सद्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। ऐसी ही महान विभूति निराकारलीन परमपूजनीय सदगुरूदेव बाबा बूटा सिंह जी महाराज हुए जिनका जन्म सन् 1873 में अविभाज्य हिन्दुस्तान के जिला कैमलपुर के गाँव हदवाल मे पूजनीय पिता सरदार बिशन सिंह और पूजनीय माता मायावन्ती के घर हुआ।

बचपन से ही बाबा बूटा सिंह जी महाराज को आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने की तीव्र जिज्ञासा थी और मन

में तीव्र वैराग्य होने के कारण बाबा जी अपना ज्यादातर समय साधु-संतो की सगंत और प्रभु के भजन-सिमरण एवं धार्मिक सदग्रथों के पठन-पाठन में बिताया करते थे शुरू में बाबा जी ने कुछ दिन फौज में नौकरी भी की लेकिन बाद में नौकरी छोड़ने के बाद अपना और परिवार का पालन पोषण करने के लिए बाबा जी हाथों-बाजूओं और शरीर के अगों पर फूल, नाम, देवी-देवताओं के चित्र और अपने किसी प्रिय का नाम गोदने का काम जगह-जगह जाकर करते थे और साथ-साथ इस अंग-संग निर्गुण-निराकार परमात्मा के ज्ञान-ध्यान का प्रचार-प्रसार भी करते थे। बाबा जी को हिन्दी, फारसी, पंजाबी और उर्दू का पूर्ण ज्ञान था ।

परमपूजनीय सदगुरू बाबा बूटा सिंह जी महाराज का विवाह 18 वर्ष की आयु में सरदार आशा सिंह जग्गी की सुपुत्री लाजवंती से हुआ लेकिन सन् 1904 में प्लेग की भयानक बीमारी के कारण वह स्वर्ग सिधार गईं। बाबा जी की दूसरी शादी माता वंती से हुई लेकिन मालिक को कुछ और ही मंजूर था दोनों माताओं से कोई संतान नहीं हुई।

सद्गुरू बाबा बूटा सिंह जी महाराज को निज-स्वरूप आत्मा का बोध और निर्गुण-निराकार परमात्मा का दर्शन-दीदार परमपूजनीय परमवंदनीय सदगुरू बाबा काहन सिंह जी महाराज से हुआ। बाबा बूटा सिंह जी महाराज को यह ज्ञान होते ही अपने और परमात्मा के बीच का अंतर समाप्त हो गया और जीते जी इस ओत-प्रोत

निर्गुण-निराकार परमात्मा को जानकर और पहचानकर धन्य हो गये। आत्मबोध होने के बाद बाबा जी ने अपना सारा जीवन इस अमोलक ज्ञान को जन-जन तक पहुँचाने में लगा दिया ऐसे महान और परोपकारी व्यक्तित्व के धनी थे बाबा बूटा सिंह जी महाराज।

सन् 1943 मे 70 साल की आयु के बाद प्रातः स्मरणीय सदगुरू बाबा बूटा सिंह जी महाराज ने एक दिन कोहमरी में सत्संग फरमाने के बाद सभी महापुरूषों को अपने पास बुलाकर यह आदेश दिया कि आप सब मालिकेकुल निर्गुण-निराकार परमात्मा का सिमरण करो अब हमारी सांसारिक यात्रा पूरी हो गई है। सदगुरू बाबा बूटा सिंह जी महाराज ने अपने सर्वप्रिय जानशीन दोनों शिष्यों बाबा महताब सिंह जी महाराज और बाबा अवतार सिंह जी महाराज को अपना प्यार और दुलार भरा अंतिम उपदेश दिया और साथ ही इस अमोलक ज्ञान को जन-जन तक पहुँचाने का आदेश भी दिया। सभी यह सुनकर हैरान और परेशान थे कि बाबा जी यह क्या कह रहे हैं। सभी महापुरूष मन ही मन में यह सोच रहे थे कि आज कोई विशेष घटना घटेगी लेकिन सदगुरू का हुक्म मानते हुए सभी ने उनके आदेश की पालना की। बाबा जी आराम की मुद्रा में लेट गए और सभी को दोनों हाथ जोड़कर अलविदा कहा और तू ही निराकार, तू ही निराकार, तू ही निराकार महामंत्र का सिमरण करते हुए निराकारलीन हो गये।

सत्गुरू शहंशाह हुजूर महताब सिंह जी महाराज

निराकारी जागृति मिशन की शुरूआत

निराकारी जागृति मिशन रजि. के दूसरे सद्गुरू परमपूजनीय निराकारलीन बाबा महताब सिंह जी महाराज के बारे में कुछ कहना और लिखना चमकते सूर्य को दीपक दिखाना है लेकिन आध्यात्मिक ज्ञान के जिज्ञासुओं और मानव जीवन के सही उद्देश्य को पूरा करने के लिए बाबा जी का जीवन महान प्रेरणा का स्रोत साबित होगा।

सद्गुरू बाबा महताब सिंह जी महाराज का जन्म पावन कार्तिक पूर्णिमा सन् 1913 में अविभाज्य हिन्दुस्तान पेशावर में परमवंदनीय पिता श्री सुधान सिंह जी के घर हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद सयोंग से एक दिन जब बाबा महताब सिंह जी महाराज अपनी दिनचर्या में व्यस्त थे तो उनकी भेंट परमवंदनीय सद्गुरू बाबा बूटा सिंह जी महाराज से हुई और निज-स्वरूप आत्मा के ज्ञान की अमोलक दात प्राप्त हुई। जब बाबा बूटा सिंह जी महाराज को याद करते हैं तो हम सब का सिर श्रद्धा के साथ सद्गुरू बाबा महताब सिंह जी महाराज के पावन श्री चरणों में स्वतः ही झुक जाता है।

नश्वर शरीर छोड़ने से पहले सद्गुरू बाबा बूटा सिंह जी महाराज ने अपने दोनों जानशीन प्रिय शिष्यों सद्गुरू बाबा अवतार सिंह जी महाराज और सद्गुरू बाबा महताब सिंह जी महाराज को इस निर्गुण-निराकार परमात्मा का ज्ञान जन-जन तक पहुँचानें का आदेश दिया। बाबा अवतार सिंह जी महाराज ने अपना प्रचार-प्रसार का केन्द्र राजधानी दिल्ली

में बना लिया और बाबा महताब सिंह जी महाराज ने यह पुनीत कार्य कानपुर यू.पी, से शुरू किया और सद्गुरू बाबा बूटा सिंह जी महाराज के आदेश–उपदेश की पालना करते हुए अपना सर्वस्व त्यागकर अनेकों आध्यात्मिक ज्ञान के जिज्ञासुओं का मार्ग दर्शन किया और सर्वशक्तिमान सर्वव्यापी निर्गुण–निराकार एवं सर्वाधार परमात्मा का प्रत्यक्ष रूप में खुली आँखों से दर्शन–दीदार कराया और यह सिद्ध कर दिया कि सद्गुरू अर्थात वक्त के रहबर की आज्ञा का पालन करना ही तमाम वेदों–शास्त्रों सदग्रथों उपनिषदों और पुराणों, महापुराणों का सार और जीवन का आधार है।

सद्गुरू शहनशाह हुजूर बाबा महताब जी महाराज आमतौर पर यह कहा करते थे कि–

यह गुरमतलाईन कथनी का नहीं
बल्कि करणी का मार्ग है।

जब तक कथनी और करणी बराबर नहीं होगी तब तक संतमार्ग में सफलता कदापि नही मिल सकती। जैसे जलता हुआ दीपक ही दूसरे दीपक को जला सकता है ठीक इसी प्रकार से इस ओत–प्रोत निर्गुण–निराकार परमात्मा की पहचान और इस परमगोपनीय रहस्य का ज्ञान सिर्फ एक परिपूर्ण वक्तगुरू आत्मवेत्ता रूहानी फकीर के द्वारा ही दूसरे को हो सकता है। यह युक्ति ही अध्यात्म में सफलता की कुँजी है।

सद्गुरू बाबा महताब सिंह जी महाराज अपना

और अपने परिवार का भरण–पोषण करने के लिए पेशावर पाकिस्तान में बेकरी का काम किया करते थे लेकिन जब हिन्दुस्तान–पाकिस्तान का बंटवारा हुआ उस समय बाबा महताब जी महाराज कानपुर आ गये और वहाँ पर बाबा जी ने साईकिलों का व्यापार शुरू किया और धीरे–धीरे बाबा जी की लगन, कठिन परिश्रम, सतगुरू महाराज के प्रति अटूट विश्वास, प्रेम भक्ति, नित्यप्रति निर्गुण–निराकार परमात्मा के सिमरण में लगने लगी और सद्गुरू की दया–मेहर से बाबा जी का नाम कानपुर के जाने माने सम्माननीय धनाड्य महापुरूषों में गिना जाने लगा।

कानपुर में कुछ महापुरूषों से जो बाबा जी के ज्यादा नजदीक रहते थे व्यक्तिगत तौर पर सम्पर्क किया गया उन्होंने बताया कि अपने दैनिक काम काज के साथ–साथ बाबा जी पंजाब, हरियाणा, यू.पी. और हिमाचल प्रदेश में जगह–जगह जाकर रूहानी सत्संग प्रवचनों और ज्ञान गोष्ठियों के माध्यम से भूले–भटके जीवों को हमेशा ज्यों–का–त्यों रहने वाले निर्गुण–निराकार परमात्मा की पहचान और प्रत्यक्ष में साक्षात्कार करने की अति गोपनीय कला से अवगत कराते थे। बाबा जी के पास आध्यात्मिक ज्ञान का भरपूर खजाना था और रूहानी ईलम के इतने माहिर थे कि जिसके ऊपर उनकी दया की मात्र एक भी झलक पड़ जाती वह उनका ही होकर रह जाता।

बाबा जी का यह कथन वास्तव में सत्य है कि

आपके घर में सुख–शान्ति, समृद्धि, सम्पन्नता खुद–ब–खुद आ जाऐगी। जब वक्त के हाकिम परिपूर्ण रूहानी सतगुरू का प्रेम–प्रीति, प्यार एवं दुलार भरा हाथ आपके सिर पर होगा। इसीलिए चिंता मत करो चितंन करो अगर आप–

चिंता करोगे तो परमात्मा निश्चिंत हो जाऐगा और अगर आप प्रभु का चिंतन करोगे तो आपकी चिंता स्वयं मालिकेकुल निर्गुण-निराकार एवं सर्वाधार परमात्मा करेगा। आप अपना काम करो और परमेश्वर को अपना काम करने दो।

कभी कुछ प्राप्त करने की चिंता कभी कुछ खो जाने की चिंता बस इसी असमंजस में हीरा सा अमूल्य जीवन व्यर्थ में बीत जाता है। इसीलिए हाथों से काम, वाणी से प्रभु का पावन नाम और हृदय में राम तभी परमात्मा का दर्शन–दीदार होगा और मानव जीवन सार्थक सिद्ध होगा।

परमात्मा को सिर्फ बाहरमुखी कर्म–काण्ड, पूजा–पाठ, धार्मिक पोथियों के पठन–पाठन और किसी की कही–सुनी बातों तक सीमित मत रखो सबसे पहले सर्वशक्तिमान ओत–प्रोत, दाँये–बाँये, ऊपर–नीचे, आगे–पीछे तमाम सृष्टि के कण–कण में व्यापक इस निर्गुण निराकार एवं सर्वाधार परमात्मा की पहचान और इसे

तत्ववेत्ता सद्गुरू की कृपा से खुली आँखों से देखो फिर इसी

"परमसत्ता का निरंतर ध्यान करते हुए एकाग्रता से इसमें स्थिर होते जाओ। ध्यान करते हुए अनेकों लुभावने, मनमोहक और भयभीत करने वाले दृश्य, रंग, रूप, आकार-प्रकार की आकृतियाँ सूर्य चन्द्रमा, सितारों आदि को छोड़ते जाओ। जब तक देखने वाला तथा दिखने वाला दृश्य और द्रष्टा, साकार और निराकार, ध्यान करने वाला और जिसका ध्यान किया जा रहा है, एकरूप ना हो तब तक ध्यान की प्रक्रिया जारी रखो। सूरत-शब्द योग को अपनाकर अनहद शब्द को एकाग्रता-समग्रता से सुनने का अभ्यास जारी रखो।"

भारतीय सनातन–पुरातन संस्कृति में इसी को सर्वश्रेष्ठ स्वरमयी उपासना कहा गया है। ध्यान प्रखर होना चाहिये, जिसका ध्यान सिद्ध है समझो उसका अध्यात्म भी सिद्ध है।

ध्यान साधना जितनी प्रगाढ़ होगी अध्यात्म के द्वार उतने ही खुलते जाऐंगे

ज्ञान और प्रकाश की नयी से नयी अनुभूति होगी। इसे सच्चे हृदय से स्वीकार करो और अपने आप को

जानो कि आप तन, मन, बुद्धि, चित अहंकार से पार एवं परे एक पावन पवित्र आत्मा है। हमेशा इस अकाट्य सच्चाई को याद रखो कि जाति, धर्म, वर्ण, संम्प्रदायवाद, वेशभूषा और बाहरमुखी धार्मिक क्रिया-क्लापों से, बेकार की बहसबाजी और सिर्फ कहे-सुने शब्दों के मकड़जाल के आधार पर तर्क-वितर्क सिर्फ अपने आप को धोखा देना, आध्यात्मिक विचारधारा आत्मदर्शी तत्ववेत्ता सद्गुरूओं के आदर्श एवं सिद्धान्तों का उल्लघंन और भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का निरादर होगा।

निरर्थक विचारों को भीतर प्रवेश न होने दो
ज्यादा से ज्यादा समय प्रभु चिंतन में बिताओ
तभी वास्तविकता सामने आऐगी

यही निर्गुण-निराकार परमात्मा ही तमाम् संशयों-संदेहों और समस्याओं का समाधान एवं मूल आधार है।

यह कोई अतिश्योक्ति नहीं बल्कि एक हकीकत है कि आज के भौतिकवाद, पदार्थवाद एवं पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के चलते दौर में यह सवाल सब के आगे हिमालय की तरह एक दीवार बनकर खड़ा है कि-

परमात्मा क्या, कैसा और कहाँ है, अगर
सब जगह है, सृष्टि के तमाम कण-कण में
व्यापक है, तो फिर नजर क्यों नहीं आता।

निर्गुण-निराकार प्रियतम परमात्मा को मिलने के लिए हरेक इसांन का दिल बेचैन है। हर समय ख्यालात उठते हैं, हरेक के दिल में कसक होती है कि किस धर्म की बात मानी जाए, किस गुरू से मिला जाए, कहाँ तलाश किया जाए किस नाम से पुकारा जाए, किस योग युक्ति को अपनाया जाए। आमतौर पर कुछ ऐसे ही उद्गार अंतःकरण में निरंतर उठते रहते हैं। जब जीवन ऐसे मोड़ पर खड़ा हो तो निश्चय ही परमात्मा को जानने-पहचानने और मिलने की जिज्ञासा तीव्र हो जाती है। यह जिज्ञासा तब ही शांत होगी जब इस अडोल निर्गुण-निराकार परमसत्ता को खुली आँखों से देख लेंगे और इसका हमेशा अंग-संग रहने का एहसास हो जाएगा, मैं और तुम का द्वैत खत्म होगा तभी जीव मोक्ष-मुक्ति और परमगति को प्राप्त होगा, और नश्वर संसार में बार-बार जन्म-मरण का गोरखधंधा और चौरासी के चक्कर से छुटकारा मिल सकेगा।

यह निर्गुण-निराकार परमात्मा हमारे इतना नजदीक और हमेशा अंग-संग है कि परिर्वतनशील संसार की कोई भी दूसरी वस्तु इतनी नजदीक नहीं है। जैसे हमारी परछाई हमेशा हमारे साथ-साथ चलती है लेकिन अज्ञानतावश हमें पता ही नहीं होता। क्योंकि-

जितनी कोई चीज ज्यादा नजदीक होती है
उतनी इंसान उसकी कदर नहीं करता

ठीक इसी तरह से इस परमसत्ता की भी हमें खबर नहीं है। जैसे अगर दर्पण न हो तो आँखें स्वयं अपने-आप को नहीं देख सकती ठीक इसी तरह से निज स्वरूप आत्मा के ज्ञान के बिना अपने असली स्वरूप और अस्तित्व का बोध कदापि नहीं हो सकता। जन्म-जन्मांतरों से उलझी हुई इस गुत्थी को सुलझाने के लिए आत्मदर्शी वक्तगुरू की चरण-शरण अति जरूरी है।

जहाँ आत्मदर्शी संत होंगे, वहाँ विवेक होगा,
जहाँ विवेक होगा, वहाँ ज्ञान होगा
और जहाँ ज्ञान होगा, वहाँ आत्मदर्शन होगा,
जहाँ आत्मदर्शन होगा, वहाँ सभी समस्याओं का समाधान होगा।

निज स्वरूप आत्मा के ज्ञान से बढ़कर कोई भी ज्ञान नही है। वेदों-शास्त्रों, उपनिषदों और सभी आत्मदर्शी तत्ववेत्ता महापुरूषों का भी यही मानना है कि आत्मबोध ही मनुष्य जीवन की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि, अध्यात्म की पराकाष्ठा और भक्ति मार्ग में सफलता की कुंजी है।

जैसे दर्पण में स्वयं अपना ही रूप देखा जा सकता है ठीक इसी प्रकार से ज्ञानचर्चा और तत्ववेत्ता सद्गुरू की ज्ञानदृष्टि के द्वारा आत्मदर्शन का अनुभव किया जा सकता है। आराधना-साधना के द्वारा जब प्रारब्ध, संचित और वर्तमान कर्मो का जखीरा खत्म हो जाएगा तब आत्मज्ञानी स्वयं ही खोजता हुआ आपके पास पहुँच जाएगा।

जैसे फसल तैयार होने पर पौधे पर लगी पत्तियाँ स्वतः ही झड़ जाती हैं और असली फसल शेष रह जाती है ठीक इसी तरह से कर्म और कर्मफल कर्ताभाव, अहंभाव, भोक्ताभाव के मिट जाने पर पीछे सिर्फ निज स्वरूप आत्मा ही रह जाती है बस यही वास्तविकता और अकाट्य सत्य है।

इसीलिए जो विनाश होने वाला और व्यर्थ है उसको त्याग देना चाहिये और जो यथार्थ है उसको अपना लेना चाहिये। जब तक कर्मफल की चाहत अतःकरण में बनी रहेगी तब तक कर्म बंधन बना रहेगा। कर्म तो करना है लेकिन निष्फल भाव से, इसीलिए किनारे पर पहुँचने से पहले नाव नहीं छोड़नी चाहिये, जब तक खोई हुई वस्तु मिल ना जाए तब तक खोजते रहना चाहिये और दीपक को बुझाना न चाहिये। ऐसे ही जब तक आत्मज्ञान न हो जाए तब तक आराधना-साधना और सत्कर्म नहीं छोड़ने चाहिये। क्योंकि अगर सोना बनना है और बनाना है तो अग्नि में तपने का कष्ट सहन करना ही पड़ेगा।

यह निर्गुण-निराकार महाशून्य और परमसत्य स्वरूप है। यही हमारा निज स्वरूप है इसी स्वः स्वरूप का ज्ञान और इसकी पहचान ही मानव जीवन की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि है। यह स्वः स्वरूप निर्गुण-निराकार तन, मन, बुद्धि, चित, अहंकार, सृष्टि के तमाम रंग रूप, आकार-प्रकार और सभी तर्क-वितर्क, संकल्प-विकल्प और विचारों से पार एवं बिल्कुल परे है। यह अकाट्य

परमसत्य स्वः स्वरूप अपने आप में परिपूर्ण और सबकुछ करने में समरथ है। इस परम सत्य परमात्मा को पहले आत्मदर्शी सदगुरू के द्वारा खुली आँखों से देखकर और इसकी पहचान करके ही इसके साथ जुड़ सकते हैं। इसके अलावा और कोई दूसरा तरीका है ही नही। इस परम भावदशा और कैवल्य ज्ञान की अवस्था की अनुभूति निरर्थक विचारों की उलझन और उधेड़बुन में नही बल्कि निर्विचार होकर ही हो सकती है।

जहाँ विचार नहीं, शास्त्र नहीं
किसी प्रकार के लौकिक शब्द नहीं और
उपाधि-उपलब्धि नहीं ऐसी अवस्था ही
आत्मबोध और परमआनंद की अवस्था है।

यह निर्गुण–निराकार परमात्मा सभी देवों का महादेव और सबसे श्रेष्ठ है। सृष्टि की तमाम दिव्य शक्तियों का विश्राम स्थान यही है। नाना आकार प्रकार वाली प्रकृति इसी से उत्पन होती है इसी में स्थिर रहती है और अंततः इसी में समा जाती है। यही अध्यात्म और संतमार्ग का सार है। जिसने इस निर्गुण–निराकार परमात्मा को खुली आँखों से नहीं देखा और जब तक इसका बोध नही किया उसी को परिर्वतनशील अज्ञानजन्य और मायामय संसार का कल्पित रूप दिखाई देता है। लेकिन जब वक्तगुरू समय के रहबर की कृपा रूपी ज्ञान दृष्टि प्राप्त हो जाती है और स्वः स्वरूप आत्मा के ज्ञान का उदय हो जाता है तब सब प्रकार के ज्ञान

इसी में विलीन हो जाते हैं।

इसको जानकर–पहचानकर सभी संशय और भ्रम समाप्त हो जाते है और चारों ओर इसी का आभास होने लगता है और देहधारी होते हुए भी आप शरीर, मन, बुद्धि, चित, अंहकार के आधीन नहीं होंगे। इसी स्वः स्वरूप आत्मा के ज्ञान की परिपूर्णता से निश्चय ही परिपूर्णता की प्राप्ति होगी।

इसकी नित्यता से ही यह जग नित्य
और गतिशील है। इसका कोई आदि,
मध्य और अंत नहीं है। यह आदि-अनादि है।

आप इसका अनुभव तत्वदर्शी वक्तगुरू की कृपा से स्वंय करो। इसकी माया अपरम्पार है। यह गोल–मटोल निर्गुण–निराकार परमात्मा अवर्णनीय गुणों से भरपूर है। मनुष्य जीवन में भगवत प्राप्ति ही सबसे जरूरी है। इस पारब्रह्म निर्गुण–निराकार का दर्शन तभी होगा। इसीलिए अटूट श्रद्धा, विश्वास के साथ तीव्र वैराग्य से, व्याकुल होकर आर्तभाव से पुकारो। बाहरमुखी संसार में अनेकता में बिखरे मन को एकाग्र करके ध्यान करो जरूर सफलता मिलेगी। पहले इसी एक का दर्शन फिर अनेक, पहले यह निर्गुण–निराकार परमात्मा फिर जीव और जगत आदि।

इस निर्गुण–निराकार का प्रभात अर्थात प्रातःकाल ब्रह्म है मध्यकाल अर्थात दोपहर विष्णु है और संध्याकाल शिव है, संकल्प–विकल्प इसके दो प्रिय मित्र है। इसमें तीन

गुण रजोगुण, सतोगुण और तमोगुण हमेशा मौजूद रहते हैं। सतोगुण सबसे श्रेष्ठ है, रजोगुण मध्यम है और तमोगुण अधम है। यह निर्गुण–निराकार परमात्मा सारी सृष्टि का परमपिता है, त्रिगुणात्मक प्रकृति माता है और नाना प्रकार से दिखने वाले जीव–जन्तु, पशु–पक्षी, पेड़–पौधे आदि चौरासी लाख योनियॉ इसकी संतान है। अनेकों रूपों मे दिखने वाला यही है। तमाम प्रकृति का आकार–प्रकार इसी में स्थित है और यह सारी सृष्टि मे ओत–प्रोत है। इसकी त्रिगुणात्मक माया जब गतिशील है तब माया है जब यही माया निष्क्रिय हो जाती है तो यह ब्रह्म स्वरूप बन जाती है।

इसलिए जो सत्गुरू की दया मेहर से यह जान लेता है कि इस त्रिगुणात्मक प्रकृति से पार एवं परे भी एक हस्ती यह निर्गुण–निराकार है। जिसको वास्तव में स्पष्ट रूप से यह बोध हो जाता है कि हम सब का मूलभूत आधार यही है, तमाम प्रकृति इसी का प्रतिबिम्ब है। जो इस प्रकार ठीक ढंग से इसे समझ लेता है वह देहातीत होकर कर्म करता हुआ भी अलिप्त रहता है। जिस प्रकार घर में रहने वाले सभी अपना–अपना काम करते हैं और घर कुछ नही करता ठीक इसी तरह से प्रकृति के गुण अपने आप स्वतः ही काम करते रहते हैं लेकिन यह निर्गुण–निराकार परमसत्ता दृष्टा बनकर सबकुछ तटस्थ होकर देखता रहता है और ज्यों–का–त्यों अपने स्वरूप में स्थिर बना रहता है। यह इसका अद्भुत खेल है।

यह किसी एक विशेष स्थान और आकार–प्रकार में नहीं बल्कि सभी जगह तमाम सृष्टि के कण–कण में, सभी भावों में, सभी कालों में ज्यों–का–त्यों अखण्ड–अडोल रूप में बरकरार रहता है। इसकी कल्पना करने में चिंतन शक्ति भी समरथ नहीं, इसकी साधना करने में कोई भी साधन कामयाब नहीं है। इसको जानने और पहचानने का सिर्फ एक ही कारगर तरीका है सद्गुरू के द्वारा बख्शी हुई ज्ञान दृष्टि। मन, बुद्धि, चित्त सब कुछ इसी के आधीन है। इसको जानकर जिसके अंतःकरण से भेदभाव खत्म हो गया हो,

जैसे पृथ्वी अमीर और गरीब मे फर्क नहीं समझती, जैसे पानी शेर और गाय में फर्क नहीं समझता ठीक इसी तरह से तत्वज्ञानी महापुरूष की भेद दृष्टि इस अमोलक ज्ञान को प्राप्त करके समाप्त हो जाती है।

और ऐसे ज्ञानवान महापुरूष का जीवन सार्थक सिद्ध हो जाता है।

इस आत्म ज्ञान से बढ़कर दूसरी और कोई वस्तु नहीं है सत्गुरू की कृपा से जिसको यह ज्ञान हो जाता है कि यह सारा विश्व मेरा अपना ही स्वरूप है सहज में ही उसका भेदभाव समाप्त हो जाता है। ऐसा ज्ञानवान महापुरूष स्वः स्वरूप ज्ञान की प्रत्यक्ष मूर्ति बन जाता है।

जैसे दीपक अच्छे और बुरे को बराबर रूप से प्रकाश देता है और जैसे वृक्ष लगाने वाले और काटने वाले को बराबर रूप से छाया देता है ठीक इसी तरह से आत्मज्ञानी महापुरूष भी अपने-पराये, अच्छे-बुरे का भेदभाव छोड़कर समदर्शी हो जाता है।

अपने आप में स्थिर होकर संसार में विचरण करता है। सिर्फ ऐसा ज्ञानवान महापुरूष ही निर्गुण–निराकार परमात्मा की आशीष और आर्शीवाद का पात्र बनता है। यही समदृष्टि और समभाव वाली अवस्था है।

जब तक चेतना जो परम चैतन्य निर्गुण–निराकार परमात्मा की अंश है तन, मन, बुद्धि चित, अहंकार के स्तर पर गोते खाती रहेगी तब तक यह संसार के होने का भ्रम ऐसे ही बना रहेगा। यही वह भव सागर है जिससे पार एवं परे जाना है। क्योंकि अज्ञानता–अविद्यावश जब परमचैतन्य निज–स्वरूप आत्मा विस्मृत हो जाती है तब देह अभिमान, कर्ताभाव, अहम्भाव का आभास होने लगता है। यह अभागा जीव यह सोचता है कि प्रकृति के द्वारा किये गये तमाम कार्य मैं कर रहा हूँ और परिपूर्ण ज्ञान की कमी के कारण इस उधेड़बुन का सिलसिला जीवन पर्यन्त चलता रहता है और इसी असमंजस में हीरा सा जन्म कौड़ियों के भाव लुट जाता है। यह परमसत्ता निर्गुण–निराकार स्वयं अपने आप में परिपूर्ण है। इसको किसी के द्वारा बनाया नहीं

जाता।

किता ना होवे, थाप्या ना जावे, आपे आप निरंजन सोये। यह अपने आप में स्वंय सिद्ध है। यह इस पार भी है और उस पार भी हैं। सृष्टि के रोम-रोम मे स्वतः ही कायम और दायम है।

इसको जानकर समस्त भावनाओं को एकाकार करके समभाव, समरस होकर सारी सृष्टि को इसी परमसत्ता में ही स्थिर समझकर निरंतर इसी का ध्यान करना ही सबसे सच्ची और ऊँची भक्ति है। इसका साक्षात्कार करके ही अहंकार और द्वैतभाव का अंत होगा।

यह अमृत रूपी, विशुद्ध, बुद्ध, मुक्त, और स्वतंत्र दिव्य ज्ञान देवी–देवताओं को भी प्राप्त नहीं हो सकता। अनेकों तरह की अनोखी साधनाऐं करके भी इस अदभुत स्वः स्वरूप को नहीं देखा जा सकता। ऋषि–मुनि हजारों वर्ष जप, तप, संयम व्रत–उपवास करके भी इस निर्गुण–निराकार परमात्मा का दर्शन–दीदार नही कर सके मात्र ऋद्धि–सिद्धि, चमत्कार, करामात, वरदान–श्राप आदि तक ही सीमित रह गये। इस अवस्था वाले तपस्वियों ने इस लौकिक जगत में ख्याति, मान सम्मान और–प्रतिष्ठा भी प्राप्त कर ली, लेकिन यह सबकुछ प्राप्त करने के बाद भी मोक्ष–मुक्ति का सवाल ज्यों–का–त्यों सामने खड़ा रहा। लेकिन कुछ दाना–बीना गिने–चुने वक्तगुरू समय के हाकिम तत्ववेत्ता आत्मदर्शी संत–महापुरूष भी जरूर होते हैं

जो इस परमसत्ता के साथ हमेशा ज्ञान की दृष्टि से हर पल जुड़े रहते हैं। ऐसे ब्रह्मज्ञानी तत्ववेत्ता ज्ञानवान महापुरूष की दया–मेहर से ही ज्ञानदृष्टि प्राप्त करके आमने–सामने बैठकर इशारे मात्र से इस निर्गुण–निराकार–परमात्मा का पलभर में खुली आँखों से दर्शन कर सकते हैं।

जब इस अडोल एवं परमचैतन्य विराट सत्ता का दर्शन–दीदार होगा तो आपको ऐसा लगेगा कि यह देखने में कुछ भी नहीं है। जब यह स्वः स्वरूप आत्मा का ज्ञान पूरी तरह से अंतःकरण में धारण कर लोगे और जब मन, बुद्धि, चित्त पर इस ज्ञान का रंग परिपूर्ण तौर से चढ़ जायेगा तो ऐसा अनुभव होगा कि यह कुछ नही ही सबकुछ है।

"यह बिल्कुल स्थिर है, ज्यों का त्यों है। यह न हिलता है, न डुलता है, ना ही कहीं जाता है, ना ही कहीं से आता है ना ही कभी समाप्त होता है, ना ही किसी बाहरी और आंतरिक ऋिद्धि-सिद्धि शक्ति, किसी विद्या, कला, चमत्कार, करामात से प्रभावित होता है। यह हमेशा विशुद्ध रहता है कभी भी दूषित नही होता, सभी भावों में, सभी कालों में, सभी स्थितियों-परिस्थितियों में बराबर बरकरार, कायम-दायम रहता है। अपने आप में परिपूर्ण और आंनद से भरपूर, अपने स्वः स्वरूप में स्थिर रहता है।

यह सार्वभौम अकाट्य परमसत्य है कि इसको सिर्फ आत्मदर्शी वक्त के रहबर के द्वारा ही जाना और

पहचाना जा सकता है और कोई दूसरा सहज तौर–तरीका है ही नही। जब पाँचो तत्व अर्थात पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश, रजोगुण, सतोगुण, तमोगुण तीनों गुण ब्रह्म, विष्णु, शेष, महेश और गणेश, कोई वेद–शास्त्र, उपनिषद्, पुराण तथा ब्रह्मवाणी, अक्षर एवं दृष्टिमान जगत का तमाम रंग, स्वरूप, आकार–प्रकार भी नहीं था तब भी यह निर्गुण–निराकार प्रियतम परमात्मा अपने रूप में स्वयं ही कायम–दायम था। इसको देश, काल और किसी प्रकार की संज्ञा और सीमा में नहीं बांधा जा सकता क्योंकि यह अपने आप में एक स्वतंत्र हस्ती है। इसके अलावा दृष्टिमान जगत में जो कुछ भी दिखाई दे रहा है यह सब परिवर्तनशील, कृत्रिम, दिखावा, छलावा और भटकावा है।

अंतःकरण में मन, बुद्धि, चित्त पर चढ़े हुए अनेकों जन्म–जन्मांतरों के जाति, धर्म, वर्ण, ऊँच–नीच, अमीरी–गरीबी, वेशभूषा, नाम, चिन्ह, प्रतीक, रंग रूप आकार, एवं किसी प्रकार की उपाधि–उपलब्धि, विद्या–कला, ऋद्धि–सिद्धि, बहुदेववाद, सम्प्रदायवाद, अनेकों प्रकार के भ्रम, संशय, ईर्ष्या, द्वेष, निंदा–चुगली, आत्मग्लानि, आपसी खींचातानी, अहम भाव, कर्ताभाव आदि के चढ़े आवरण उतारने का और जीते जी मालिकेकुल निर्गुण निराकार परमात्मा के साथ एकाकार होकर जीवन को ज्ञानमय और आनंदमय बनाने का यही एक सरल, सहज, सटीक एवं कारगर तरीका है। यही ज्ञान अपने और

परमतत्व के बीच अंतर समाप्त करने का और इस परिवर्तनशील संसार में रहते हुए शुद्ध, बुद्ध, एवं मुक्त स्वरूप आत्मा में स्थिर रहकर समभाव से आनंदमय जीवन जीने की कला है।

बस सबसे अहमियत वाली यही एक युक्ति है। सबसे पहले इसकी पहचान कर लो, जब जान पहचान हो जाएगी फिर इसका ध्यान एवं दर्शन पल-पल, क्षण-क्षण स्वतः ही होता रहेगा। आपको अलग से कुछ नही करना पड़ेगा। कर्ताभाव, अहंभाव को बिल्कुल तिलांजलि दे दो। तभी आप इसको अपने-आप में और अपने आप को इसमें ओत-प्रोत होने का अनुभव एवं एहसास कर सकोगे। इसको जानने पहचानने के लिऐ सिर्फ अंदर की सच्ची श्रद्धा, अडिग आस्था एवं तीव्र जिज्ञासा का होना नितांत जरूरी है। इसको जानकर और पहचानकर बिल्कुल मौन हो जाओ, दुनियावी ध्यान से खाली हो जाओ क्योंकि यह सबकुछ होते हुए भी कुछ भी नहीं है और कुछ भी नही होते हुए भी सबकुछ है। दुनियावी पदार्थों से कुछ लेना-देना नहीं है। इसको जानकर अपने आप को मात्र यही समझकर इसी में स्थिर रहते हुए यही हो जाओ। इसी प्रयोजन के लिए यह हीरा सा मानव जन्म मिला है।

चिंता मत करो चितंन करो अगर आप चिंता करोगे तो परमात्मा निश्चिंत हो जाऐगा और अगर आप प्रभु का चिंतन करोगे तो आपकी चिंता स्वयं मालिकेकुल निर्गुण-निराकार एवं सर्वाधार परमात्मा करेगा। आप अपना काम करो और परमेश्वर को अपना काम करने दो। कभी कुछ प्राप्त करने की चिंता कभी कुछ खो जाने की चिंता बस इसी असमंजस मे हीरा सा अमूल्य जीवन बीत जाता है।

सत्गुरू शहंशाह हुजूर लक्ष्मणसिंह जी महाराज

निराकारी जागृति मिशन रजि. के तीसरे सदगुरू परमपूजनीय निराकारलीन बाबा लक्ष्मण सिंह महाराज का जन्म गाँव बब्याल जिला अम्बाला हरियाणा में परमपूजनीय पिता सरदार छज्जा सिंह एवं परमपूजनीय माता परमेश्वरी देवी के घर 10 मार्च सन् 1924 मे हुआ। अपने पैतृक गाँव से शिक्षा लेने के बाद बाबा जी भारतीय सेना में भर्ती हो गये और दिलोजान से देश की सेवा की। भारतीय सेना में नौकरी के दौरान जब बाबा जी का तबादला कानपुर यू.पी. में हुआ उनकी मुलाकात एक उच्चकोटि के महात्मा श्री रामचन्द्र जी से हुई बस यहीं से ही बाबा जी का आध्यात्मिक जीवन शुरू हो जाता है। महात्मा रामचन्द्र जी के माध्यम से बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज को सदगुरू शहनशाह महताब सिंह जी महाराज का सानिध्य प्राप्त हुआ। नित्यप्रति रूहानी सत्संग सुनने से धीरे-धीरे सदगुरू बाबा महताब सिंह जी महाराज के मुखारबिन्द प्रवचनों का रंग बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज पर चढ़ने लगा।

सयोंगवश एक दिन हुजूर महताब सिंह जी महाराज ने बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज को अपने पास बुलाया और उनके बारे में भाई रामचन्द्र जी से जानना चाहा बस उसी दिन से बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज सदगुरू शहनशाह महताब सिंह जी महाराज के दिवाने हो गये और बाबा जी के मन मे तीव्र वैराग्य और निर्गुण-निराकार एवं सर्वाधार परमात्मा को खुली ऑखों से देखने की जिज्ञासा

दिन–प्रतिदिन बढ़ती चली गई। जैसे संत महापुरूषों का कथन है कि

"होये वही जो राम रचि राखा।"

आखिर वह दिन आ ही गया जब हुजूर बाबा महताब सिहं जी ने बाबा लक्ष्मण सिंह जी को इस मालिकेकुल निर्गुण–निराकार परमात्मा का खुली ऑखों से दर्शन–दिदार कराके निज स्वरूप आत्मा का बोध कराया और वास्तविकता से परिचित कराया। वैसे तो बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज बचपन से ही साधु–सन्तो की संगत में अपना ज्यादातर समय बिताते थे लेकिन अमोलक ज्ञान की दात प्राप्त करने के बाद बाबा जी इसी ओत–प्रोत निर्गुण–निराकार परमसत्ता के मनन–चिंतन में ज्यादा तल्लीन रहने लगे।

बाबा महताब सिंह जी महाराज ने उन्हें इस ज्ञान का प्रचार–प्रसार करने का आदेश दिया और बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज ने अपनी नौकरी के साथ–साथ जगह–जगह जाकर लोगों को इस सच्चाई से अवगत कराया। जैसा कि बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज सदगुरू बाबा महताब सिंह जी महाराज के जानशीन एवं प्रिय शिष्य थे इसीलिए बाबा महताब सिंह जी महाराज ने हुजूर लक्ष्मण सिंह जी महाराज को भारतीय सेना की नौकरी से मार्च सन् 1964 में रिटायर होने के तुरन्त बाद अपने पास बुला लिया। बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज अपना सबकुछ छोड़कर अपने सद्गुरू की

सेवा में हाजिर हो गये और सद्गुरू बाबा महताब सिंह जी महाराज के आदेश अनुसार इस अमोलक ज्ञान का प्रचार–प्रसार करने में लग गये।

जब बाबा महताब सिंह जी महाराज बुजुर्ग हो गये तो उन्होने बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करके निराकारी जागृति मिशन की बागडोर उन्हें सौंप कर 8 जनवरी सन् 1983 में तू ही निराकार, तू ही निराकार, तू ही निराकार का सिमरण करते हुए निराकारलीन हो गये अर्थात ज्योति–ज्योत समा गये। उसी दिन से बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज ने यह जिम्मेवारी बाखूबी बड़ी लगन और पूर्ण निष्ठा के साथ निभाते हुए अपना सारा जीवन इसी अगं–संग निर्गुण निराकार एवं अद्वैत स्वरूप परमात्मा के प्रचार–प्रसार में बिताया। सद्गुरू बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज रूहानी ज्ञान के भण्डार थे उनके मार्ग दर्शन में अनेकों महापुरूषों ने आत्मज्ञान लेकर अपना जीवन धन्य किया। ऐसे महान व्यक्तित्व के पूर्ण धनी और

"सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय एवं
वसुधैव कुटुम्बकम"

सिद्वान्त में पूर्ण आस्था रखने वाले थे सद्गुरू शहनशाह बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज।

सत्गुरू शहंशाह हुजूर स्वामी ज्ञान नाथ जी महाराज
वर्तमान गद्दीनशीन

निराकारी जागृति मिशन रजि. के चौथे एवं मौजूदा गद्दीनशीन सतगुरू स्वामी ज्ञान नाथ जी महाराज का जन्म गाँव बधौली, तहसील नारायणगढ़ जिला अम्बाला हरियाणा में परमपूजनीय पिता स्वर्गीय श्री केशो राम एवं परमवंदनीय माता लाजवंती के घर शिव-रात्रि के दिन सन् 1963 में हुआ। इनका बचपन का नाम करनैल सिंह था। परमपूज्यनीय पिता श्री स्वभाव से ही धार्मिक वृत्ति के थे इसीलिए सतों-महात्माओं का घर में आना-जाना लगा रहता था।

सयोंगवश एक दिन शिव-रात्रि के पावन पर्व पर पिता श्री ने संत-महात्माओं को पावन हवन-यज्ञ एवं भण्डारे पर आमंत्रित किया। भण्डारे के उपरांत संतो को पूजा विदायगी देने के समय प्रातः स्मरणीय स्वामी प्रियतम नाथ जी महाराज ने आपके माता-पिता को कहा कि तुम्हारा यह बालक एक दिन त्यागी-वैरागी और उच्चकोटि का सन्यासी एवं आत्मदर्शी संत महापुरूष बनेगा। यह भूले भटके लोगों को मानवता का पाठ पढ़ाएगा और आध्यात्मिक ज्ञान तथा परमात्मा से मिलने का मार्ग दर्शन करेगा। बिल्कुल वैसा ही हुआ, और वास्तव मे यह सत्य सिद्ध हुआ कि संत वचन कभी ना पलटे पलटे खण्ड ब्रह्मण्ड। स्वामी प्रियतम नाथ जी महाराज की भविष्यवाणी सच्ची सिद्ध हुई।

बचपन से त्यागी-वैरागी वृत्ति होने के कारण मात्र 9-10 वर्ष की आयु में ही एक दिन आप घर-बार

छोड़कर हुजूर बाबा प्रियतम नाथ जी महाराज की चरण-शरण में चले गये। आप नित्यप्रति पूजा-पाठ करते और साथ-साथ आपने अनेकों धार्मिक सद्ग्रंथों का गहनतम् अध्यन किया। आप के अंतःकरण में हमेशा यही उद्गार उठते रहते थे कि आखिर वह कौनसी हस्ती है जो इस सारी सृष्टि को एक व्यवस्थित ढंग से चला रही है। क्या हम ऐसी शक्ति का दर्शन-दीदार कर सकते हैं? हमेशा आप इसी तीव्र जिज्ञासा को अपने अंदर संजोये हुए इसी खोज में रहते थे। आप ज्यादातर एंकातसेवी और मौन रहते थे और किसी के ज्यादा आग्रह करने पर ही बात-चीत करते थे।

एक दिन आपने हुजूर बाबा प्रियतम नाथ जी महाराज से नम्र निवेदन किया कि क्या मुझे जीवन में मालिकेकुल परमात्मा का कभी खुली आँखों से दर्शन होगा? बाबा जी ने काफी देर ध्यान और सोच विचार करके कहा कि आपको जैसा हुक्म होता है वैसा करते रहो एक दिन आपके जीवन में अवश्य ऐसा आएगा जब आपकी यह इच्छा पूरी होगी और यह तीव्र जिज्ञासा शांत होगी। लेकिन गाँव के कुछ प्रतिष्ठित लोगों एवं माता-पिता के आग्रह करने पर बाबा जी ने आपको वापिस अपने पैतृक गाँव बधौली जाने का आदेश दिया और साथ में यह भी कहा कि आप पहले अपनी दसवीं तक की शिक्षा प्राप्त करो फिर मेरे पास वापिस आ जाना।

बाबा प्रियतम नाथ जी महाराज की आज्ञा का

पालन करते हुए आप अपने पैतृक गॉव बधौली से दसवीं तक की शिक्षा ग्रहण करने के बाद वापिस हुजूर बाबा प्रियतम नाथ जी महाराज के पास आ गये। सयोंगवश फिर वही शिव-रात्रि का दिन आया और बाबा जी ने उस दिन गाँव खेड़की, नारायणगढ़ आश्रम में श्रीमद्भगवत महापुराण का पाठ रखा हुआ था और हवन-यज्ञ एवं भण्डारे का आयोजन भी किया हुआ था। इस भण्डारे में आस-पास के साधु-संतों को भी निमंत्रण दिया हुआ था। इसी शिव-रात्रि के पावन अवसर पर सभी साधु-सतों की मौजूदगी में आप ने भगवां चोला धारण करके सन्यास ले लिया और हुजूर बाबा प्रियतम नाथ जी महाराज को अपना आध्यात्मिक गुरू मानकर उनसे गुरूदीक्षा ग्रहण कर ली। संतो-महात्माओं ने नामकरण करके आपका नाम स्वामी ज्ञान नाथ रख दिया। इसके बाद आपका नाम करनैल सिंह की बजाये स्वामी ज्ञान नाथ पड़ गया। बस यहीं से ही आपका आध्यात्मिक जीवन शुरू हो जाता है।

आपकी परवरिश ज्यादातर परमवंदनीय माता त्रिबैणी नाथ और परमपूजनीय बाबा प्रियतम नाथ जी महाराज की देख-रेख में हुई। बाबा जी और माता त्रिबैणी नाथ जी महाराज का आपको भरपूर प्यार और दुलार मिला। दोनो ही आपको बहुत प्यार करते थे। उनके ही प्रयास और आर्शीवाद से आप अपने जीवन में निरंतर सफलता को प्राप्त करते रहे। आपका बचपन, यौवन और पढ़ाई का समय बाबा

प्रियतम नाथ और माता त्रिबैणी नाथ जी महाराज की चरण–शरण में बीता। आपको जीवन के हर क्षेत्र में उनसे ही प्रेरणा मिलती रही। आपने बारहवीं तक की शिक्षा गाँधी मेमोरियल नेशनल कालेज, अम्बाला कैंट हरियाणा से प्राप्त की।

सौभाग्य से आपकी सर्विस पी. जी. आई. चण्डीगढ़ में लग गई। आपने नौकरी के साथ–साथ अपनी पढ़ाई भी जारी रखी और पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ से ग्रेजूएशन और फिर वकालत की उपाधि प्राप्त की। जैसा कि आपको हुजूर बाबा प्रियतम नाथ जी महाराज का आदेश था कि आपको इसी भगवें चोले में ही रहना है और इसी सन्यासी के रूप में उच्च शिक्षा ग्रहण करनी है, साथ में अपनी कीर्त–कमाई करनी है। किसी के ऊपर निर्भर होने की बजाए आत्मनिर्भर होना है। आप अपनी धुन के पक्के थे और वही आपने कर दिखाया जो बाबा जी ने आपको हुक्म दिया था। बाबा जी के आदेश–उपदेश की बाखूबी पालना करते हुए आपने इसी भगवे चोले में ही तकरीबन 23 वर्ष पी. जी. आई. चण्डीगढ़ में पर्सनल सचिव के पद पर सर्विस की। आप छुटटी वाले दिन बाबा जी के पास निरंतर आते रहते थे।

जब आप जी. एम. एन. कालेज अम्बाला कैंट हरियाणा में पढ़ते थे, गॉव बोह अम्बाला में अपनी बड़ी बहन बिमला देवी जीजा श्री दीना नाथ जी के पास रहते थे। इसी गाँव बोह में महापुरूष बरखा राम के माध्यम से आपका

परिचय सद्गुरू शहनशाह हुजूर बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज से हुआ। क्योंकि बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज महापुरूष बरखा राम और बहन बिमला देवी के घर अकसर संत्सग फरमाने आते रहते थे। आपको भी बाबा जी के सत्संग में जाने का मौका मिल जाता था। आप बाबा जी के रूहानी सत्संग प्रवचनों को पूरी तवज्जो से सुनते थे। धीरे–धीरे आपके ऊपर हुजूर महाराज जी के रूहानी सत्संग प्रवचनो का रंग चढ़ने लगा।

हुजूर बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज हमेशा सत्संग प्रवचनों में यह फरमाया करते थे कि इस सारी सृष्टि का मालिकेकुल निर्गुण–निराकार एवं सर्वाधार परमात्मा हमेशा हमारे अंग–संग है। इस निर्गुण–निराकार परमतत्व को हम आत्मदर्शी वक्तगुरू की कृपा से पलभर में खुली आँखों से देख सकते हैं और इस अडौल एवं सर्वशक्तिमान परमात्मा का निरंतर ध्यान करते हुऐ जीते जी इसके साथ एकाकार होकर जन्म–जन्मांतरों से मोक्ष–मुक्ति प्राप्त करने की उलझी हुई गुत्थी को सुलझा सकते हैं। क्योंकि इसके अलावा तमाम दृष्टिमान जगत परिर्वतनशील होते हुए भी वास्तव में नहीं है। आप हुजूर बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज के मुखारविंद से यह बार बार सुनते थे कि हम निर्गुण–निराकार परमात्मा का पलभर में खुली ऑखों से दर्शन–दीदार कर सकते हैं। इस परमसत्ता का खुली आँखों से दर्शन करके ही हम जन्म–जन्मातंरों की प्रभु मिलन की तीव्र इच्छा

को पूरी कर सकते हैं।

आप को हुजूर महाराज जी के प्रति अटूट प्रेम और अडिग आस्था होने लगी और दिन-प्रतिदिन आप बाबा लक्ष्मण सिंह महाराज के दीवाने होने लगे। आपको यह विश्वास होने लगा कि मेरी उलझन का समाधान यहाँ जरूर होगा। तकरीबन आप 15-16 वर्ष हुजूर लक्ष्मण सिंह जी महाराज के सानिध्य में इस आमने-सामने, चारों तरफ हमेशा ज्यों-का-त्यों मौजूद निर्गुण-निराकार परमात्मा की चर्चा सुनते रहे। संयोगवश पी. जी. आई. चण्डीगढ़ में एक विशाल संत समागम का आयोजन किया गया। इस संत समागम में सदगुरू बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज बतौर मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। बाबा प्रियतम नाथ जी महाराज और अन्य संत महात्मा भी इस संत-समागम में शरीक हुए। जब संत समागम सम्पन्न हुआ और संत महापुरूषों की विदायगी का समय आया तो बाबा प्रियतम नाथ जी महाराज ने मुझे अपने पास बुलाकर प्रेम से कहा कि स्वामी जी अब आगे जीवन में आपका मार्ग दर्शन हुजूर बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज करेंगे।

यह कोई अतिश्योक्ति नहीं बल्कि हकीकत है कि फिर सयोंगवश शिव-रात्रि का महान पर्व आया और परमपूजनीय परमवंदनीय मेरे हृदय के सम्राट सदगुरू बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज महापुरूष बरखा राम जी के साथ चण्डीगढ आये। हम बाबा जी के साथ पी.जी.आई कैन्टीन में

चाय पीने चले गये। अचानक बाबा जी कहने लगे स्वामी जी आज हम एक विशेष काम के लिए आप के पास आए हैं। आज का दिन आपके लिए और मेरे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण और हमेशा याद रखने वाला दिन होगा। हुजूर महाराज के मुख से यह वचन सुनकर मैने यह अंदाजा लगा लिया था कि आज बाबा जी मुझे खुली आँखों से परमात्मा का दर्शन-दीदार करायेगें। जिस समय का मुझे वर्षो से इंतजार था वास्तव में आज वह महान दिन आ ही गया है।

जैसे मैने सुना था और पढ़ा था कि जब परमेश्वर से मिलने की तीव्र इच्छा होती है और दिल दर्शन करने के लिए व्याकुल होता है तब यह पारब्रह्म निर्गुण-निराकार परमात्मा स्वयं ही किसी संत-महापुरूष का रूप धारण करके आता है और इस परम रहस्य को खोलकर समझाता है। वास्तव में मेरे साथ ऐसा ही हुआ निर्गुण-निराकार भगवान स्वयं ही सद्गुरूदेव हुजूर बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज के रूप में मेरे पास चण्डीगढ़ आए और मुझे इस ओत-प्रोत निर्गुण-निराकार परमात्मा का ज्ञान कराकर इसका बोध कराया। स्वामी जी आओ हम कहीं एकांत में बैठते हैं ओर एक अति गोपनीय विषय पर चर्चा करते हैं। बाबा जी के मुखारविंद से ये शब्द सुनकर मेरी खुशी का कोई ठिकाना न रहा। बाबा जी के ओजस्वी और तेजस्वी चेहरे से यह साफ झलक रहा था कि आज हुजूर महाराज बिल्कुल अपनी मौज और आनंद की मुद्रा में है। निश्चय ही

आज सतगुरू भगवान की कोई खास रहमत होगी।

संयोगवश उस दिन महापुरूष दिनेश जो बहुत ही सरल स्वभाव वाले तथा सतगुरू महाराज के प्रति बहुत ही आस्था रखने वाले महात्मा हैं और निराकारी जागृति मिशन, शाखा दिल्ली के प्रभारी भी हैं अपनी बहन श्रीमती दर्शना देवी के पास चण्डीगढ़ आये हुऐ थे। दोनो भाई बहन उस दिन मेरे पास मिलने के लिये अचानक ही आ गये। हुजूर महाराज ने दोनो को देखकर कहा कि स्वामी जी लगता है कोई महापुरूष आया है इनको भी अंदर बुला लो। ज्यों ही दोनो ने बाबा जी को धन निराकार कहकर चरण स्पर्श किये तो सतगुरू महाराज बड़े प्रेम भाव से मुस्कराकर बोले स्वामी जी ये दोनो ही महान आत्मायें हैं इनका आपने खास ख्याल रखना है वैसे भी महापुरूष दिनेश और दर्शना बीबी हमेशा तन, मन और धन से मिशन और साध संगत की सेवा करते रहते हैं।

जब भी बाबा जी चण्डीगढ़ आते थे तो अकसर मुझे कहते थे कि स्वामी जी उस बीबी/श्रीमति दर्शना देवी के घर जरूर जाना है क्योंकि यह परिवार मुझे दिलो जान से प्यार करता है और इस बीबी में सदगुरू के प्रति बहुत ही श्रद्धा, पूरी निष्ठा और दृढ़ विश्वास है। स्वामी जी ऐसे महापुरूषों और मातृशक्ति के प्रयास से निश्चय ही यह मिशन आगे बढ़ेगा। स्वामी जी इनको ज्ञान देकर आपने इस बीबी और इस महापुरूष का कल्याण जरूर करना है, यह पिछले जन्मों से बिछड़ी हुई आत्मायें है इस जन्म में सद्गुरू

की दया–मेहर से इनका कल्याण अवश्य हो जायेगा। हुजूर महाराज ने कहा कि बीबी जी आपके पास सतगुरू महाराज की दया से सबकुछ है ऐसा मुझे नजर आता है बस आप दोनो स्वामी जी से ज्ञान प्राप्त कर लेना और इनके आदेश–उपदेश की पालना करते रहना। चाहे जीवन मे लाख अटकलें और परेशानियॉ आ जाये लेकिन घबराना मत।

हुजूर महाराज ने कहा कि बीबी जी जितना सोना आग में तपता है, उतना ही ज्यादा निखार आता है और चमकता है ठीक इसी प्रकार से जितनी ज्यादा मुश्किलों का सामना करोगे उतनी ही प्रतिभा में निखार आयेगा और जीवन में सचेत और सजग रहोगे। इसीलिए हमेशा इस पारब्रह्म निर्गुण–निराकार का शुकराना करो। आपको दुनिया में रहना है सभी अपनी जिम्मेवारियॉं निभानी है। बीबी जी दुनिया से पलायन नही करना अर्थात अपने कर्तव्यों से भागना नही है बल्कि जागना है। इस काल की प्रबल त्रिगुणात्मक माया से सचेत रहना है। समय समय के अनुसार अपनी तमाम जिम्मेदारियों को निभाना है। लौकिक और अलौकिक जगत तभी सिमर सकते है जब हम अपने सतगुरू की हर बात को सत सत करके जानेंगे और उनकी हर आज्ञा का पालन करेंगे।

जीवन में अनेकों उतार–चढ़ाव आते है हमेशा सतगुरू की दया और इस अंग संग निर्गुण–निराकार परमात्मा पर पक्का विश्वास रखना चाहिये। जैसे माता अपने बच्चे के

साथ कभी भी अन्याय नहीं करती, चाहे वह बच्चे को धमकाती भी है लेकिन दिल से फिर भी प्यार करती है। ठीक इसी प्रकार से भगवान भी अपने भक्तों पर किसी न किसी तौर–तरीके से दया करता ही रहता है। इसीलिए बीबी जी मेरी बात को अच्छी तरह से समझो कि आप ऐसे निर्गुण–निराकर परमात्मा के बच्चे हैं, जो सारी सृष्टि का मालिकेकुल और हमेशा आपके अंग–संग है, सबकुछ करने में समरथ है संत महापुरूषों ने सच ही तो कहा है कि–

"जाके राम जी धनी उसे काहे की कमी'।

आप दोनो के प्रारब्ध कर्म बहुत ही अच्छे तभी आज आपको परमेश्वर ने यहा भेजा है।

महापुरूष दिनेश ने कहा हुजूर महाराज एक विनती है अगर इजाजत हो तो दास अर्ज करे। बाबा जी ने कहा हॉ जी क्यों नही आप भी अवश्य अपने दिल की बात कहो। दिनेश ने कहा कि बाबा जी जितना ज्यादा लोग भजन सिमरण करते है उतनी ही ज्यादा मुश्किलें क्यों आती है। हुजूर महाराज ने कहा कि भाई साहिब जी आपने कभी गीता पढ़ी होगी, अगर ना पढ़ी हो तो जरूर पढ़ना। भगवान श्री कृष्ण से अर्जुन ने भी यही सवाल पूछा था। पता है आपको भगवान जी ने क्या कहा। हे अर्जुन जो मेरा सबसे प्यारा भक्त होता है, जो मुझे दिल की गहराईयों से प्यार करता है, श्वास–श्वास में मुझ अविनाशी निर्गुण–निराकार का सिमरण करता है। पल पल मुझे याद करता है अर्थात मेरा अनन्य

भक्त हो, हे धर्नुधर अर्जुन उसको मै तीन उपहार देता हुँ। महापुरूषों ध्यान रखना यह बहुत ही अनोखा सवाल है और बिल्कुल ऐसा ही अनोखा इसका जबाब है। सुनो तीनों उपहार कौन से हैं। सबसे पहला निरादर दूसरा दुःख तीसरा संयोग और वियोग। हुजूर महाराज ने बड़े गंभीर स्वर में कहा भाई साहब इतने क्यों सहम गये हो यह मेरी अपनी बनाई हुई बात नहीं यह भगवान के मुख से निकले हुए अकाट्य सत्य वचन हैं और बिल्कुल सोलह आने सच है। सतगुरू महाराज ने आगे कहा कि महापुरूषों क्या आपको भी इनमें से कोई उपहार मिला है। भाई साहब दिनेश ने हुजूर महाराज के श्री चरणों को स्पर्श करते हुए और नतमस्तक होते हुए कहा कि बाबा जी मेरे साथ तो हमेशा बिल्कुल ऐसा ही होता है। अरे फिर इसमें इतना घबराने की क्या बात है। आप गुरमुख हैं अपना जीवन इस निर्गुण–निराकार परमात्मा की मर्जी पर छोड़ दो जो भी यह करेगा ठीक करेगा। यह निराकार परमात्मा महापुरूषों वही करता है जो इसको अच्छा लगता है और जो यह हमारे लिए ठीक समझता है। जो कुछ भी होता है यह सब हमारे ही कर्मो का लेखा–जोखा है। महापुरूष सुख–दुख सब इस दातार की सौगात समझकर स्वीकार करते चले जाते हैं और इसकी रजा मे रहकर ही संसार में जीवन बसर करते है। जितना ज्यादा जीवन में दुख आता है उतना ही संसार से मोह खत्म होता है और अंततः जीवआत्मा सद्गति को प्राप्त होती है। इसीलिए बेटा दिनेश बस भजन

सिमरण करते रहो और इस निर्गुण–निराकार परमात्मा का शुकराना करते रहो। हुजूर महाराज ने कहा कि तभी तो आपके आते ही मैने कहा था कि स्वामी जी यह दोनो भाई–बहन महान आत्मायें है। हुजूर महाराज ने दिनेश के सिर पर अपना दया भरा हाथ रखते हुए कहा कि अरे दुःख ही तो सबसे बड़ा दोस्त है क्योंकि दुःख और मुसीबत के समय सभी यार–दोस्त, सगे सम्बंधियों एवं रिश्तेदारों की पहचान हो जाती है कि कौन आप को कितना चाहता है और कौन ऐसी विषम परिस्थितियों में आपकी सहायता करता है। इसीलिए कभी भी घबराना नही चाहिये। यह निर्गुण–निराकार परमात्मा साक्षात सतगुरू के स्वरूप में हमेशा बैठा है कभी भी आपका साथ नही छोड़ेगा। सत्संग, सेवा और सिमरण निरंतर करते रहो आपके ऊपर सदगुरू की रहमत हमेशा बनी रहेगी। अब आप जाओ समय काफी हो गया है। क्योंकि आज स्वामी जी के साथ भी बहुत ही विशेष और जरूरी बात करनी है शायद ये भी बेचारे उस घड़ी का इंतजार कर रहे हैं और जाते जाते सुनो जो आज मैने आप दोनो को यह रहस्य बताया है जीवन मे इसे जरूर याद रखना। गुरमतलाईन की कुछ बातें जो आपकी जीवन में मदद करेंगी आप फिर कभी स्वामी जी से मिल लेना ये आप की समस्या का हल करने में आपकी सहायता जरूर करेंगे। दोनो ने हुजूर महाराज को धन निराकार कहा और अपने घर वापिस चले गये।

सबसे पहले सर्वशक्तिमान ओत-प्रोत, दाँये-बाँये, ऊपर-नीचे, आगे-पीछे तमाम सृष्टि के कण-कण में व्यापक इस निर्गुण निराकार एवं सर्वाधार परमात्मा की पहचान और इसे तत्ववेत्ता सद्गुरू की कृपा से खुली आँखों से देखो फिर इसी परमसत्ता का निरंतर ध्यान करते हुऐ एकाग्रता से इसमें स्थिर होते जाओ। ध्यान करते हुए अनेकों लुभावने, मनमोहक और भयभीत करने वाले दृश्य, रंग, रूप, आकार-प्रकार की आकृतियाँ सूर्य चन्द्रमा, सितारों आदि को छोड़ते जाओ। जब तक देखने वाला तथा दिखने वाला दृश्य और दृष्टा, साकार और निराकार, ध्यान करने वाला और जिसका ध्यान किया जा रहा है, एकरूप न हो तब तक ध्यान की प्रक्रिया जारी रखो।

10 मार्च 2002 को गाँव कुराली, हरियाणा में
हुजूर लक्ष्मण सिंह जी महाराज
स्वामी ज्ञान नाथ जी को गद्दीनशीन करते हुए

निराकारी जागृति मिशन की शुरूआत

10 मार्च सन् 2002 को गाँव कुराली अम्बाला हरियाणा में एक विशाल संत सम्मेलन का आयोजन किया गया और सदगुरू शहनशाह हुजूर बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज ने गुरूगद्दी की रस्म परम्परागत तरीके से निभाते हुए अपने सर्वप्रिय जानशीन शिष्य स्वामी ज्ञान नाथ जी महाराज को सर्व साद संगत की मौजूदगी में अपना उतराधिकारी घोषित करके गद्दीनशीन किया और अपने गले मे पहना हुआ सिरोपा स्वामी ज्ञान नाथ जी महाराज के गले में पहनाकर नतमस्तक होकर नमस्कार किया और साथ ही सभी महापुरूषों को स्वामी जी के श्री चरणों में नमस्कार करने का आदेश दिया। बाबा जी ने कहा कि स्वामी ज्ञान नाथ जी महाराज और मैं आत्म ज्ञान की दृष्टि से एक ही रूप है सिर्फ शरीर देखने में दो लगते हैं

हुजूर शहनशाह लक्ष्मण सिंह महाराज जी ने कहा कि आज के बाद सभी स्वामी ज्ञान नाथ जी महाराज को अपना रहबर मानते हुए इनकी हर आज्ञा का पालन करना ही आप सबका पहला कर्तव्य है। सभी ने बाबा जी के इस फैसले का समर्थन किया और हाथ खड़े करके निराकारी जागृति मिशन की विचारधारा का मिलजुल कर प्रचार-प्रसार करने का संकल्प लिया। इस तरह पारम्परिक रूप से गुरूगद्दी की रस्म निभाते हुऐ हुजूर बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज ने स्वामी ज्ञाननाथ जी महाराज को अपना उतराधिकारी घोषित करके निराकारी जागृति मिशन की

बागडोर स्वामी जी को सौंपकर प्रभु चिंतन में लीन रहने लगे।

वैसे तो बाबा जी ने अपने जीवन का ज्यादातर समय कानपुर यू.पी. में बिताया लेकिन बाबा जी इतने विरक्त वृत्ति के थे कि उन्होने एक दिन यह निश्चय कर लिया था कि मैं इस नश्वर शरीर का त्याग कानपुर में नही करूंगा उनका कहना था कि अतिंम समय में मेरा ध्यान सिर्फ इस निर्गुण–निराकार परमात्मा और सद्गुरू के श्री चरणों में ही लीन रहे। जैसा कहा वैसा ही किया एक दिन बाबा जी ने महापुरूष मौजी लाल जो कानपुर के उच्च कोटि के महापुरूष है और निराकारी जागृति मिशन कानपुर शाखा के प्रभारी भी हैं उनको अपने पास बुलाकर कहा कि मैं संगरूर पंजाब जाना चाहता हूँ।

वैसे तो हुजूर महाराज सभी से प्रेम करते थे लेकिन कानपुर और संगरूर कि सगंत के साथ हुजूर महाराज का स्नेह कुछ ज्यादा ही था । बाबा जी संगरूर के बारे में सत्संग में भी हमेशा चर्चा करते थे कि यहाँ की संगत हमेशा तन, मन, धन से सेवा करने मे तत्पर रहती है। ऐसे श्रद्धालुओं का लोक–परलोक दोनो सुधर जाते है।

"जाके राम जी धनी उसे काहे की कमी।"

प्रत्यक्ष को प्रमाण की जरूरत नही आज लौकिक और अलौकिक सुखों से भरपूर है संगरूर और कानपुर के श्रद्धालु।

हुजूर बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज के आदेश

सत्संग स्थल में जाते हुए सतगुरू स्वामी ज्ञान नाथ जी महाराज

की पालना करते हुए महापुरूष मौजी लाल ने संगरूर में महापुरूष कमल को फोन पर बताया कि हुजूर महाराज पंजाब आना चाहते हैं। महापुरूष कमल, बहन हरपाल कौर, माता शान्ति डीम्पल और कई अन्य महापुरूष तुरंत बाबा जी को लेने कानपुर रवाना हो गये। संगरूर आकर बाबा जी ने कहा बस अब हम अंतिम समय तक यहीं रहेंगे। हुआ भी बिलकुल ऐसे ही। एक दिन हुजूर महाराज की तबीयत कुछ खराब हुई तो बाबा जी ने सभी महापुरूषों को अपने पास बुलाया। धीरे–धीरे बाबा जी के इर्द–गिर्द सत्संगियों का हुजूम उमड़ पड़ा। बाबा जी ने चारों तरफ अपनी दृष्टि घुमाई और धीरे से कहा कि क्या अभी मेरे अजीज स्वामी ज्ञान नाथ जी महाराज नहीं पहुँचे।

चण्डीगढ़ तुरंत स्वामी जी को फोन पर संदेश दिया कि आप फौरन संगरूर पहुँच जाओ। जब स्वामी जी इजि. हेमराज सिंह, श्रीमति प्रेम, दर्शना देवी चौ.पवन कुमार, राजकुमार, बक्शा राम, आदि के साथ सगंरूर पहुँचे तो ज्यों ही स्वामी जी ने हुजूर महाराज के श्री चरणों में नतमस्तक होकर धन निराकार कहा तो आवाज सुनते ही बाबा जी कहने लगे लगता है कि स्वामी जी आ गये हैं। धीरे से बाबा जी स्वामी जी की पीठ पर प्यार और दुलार भरा हाथ फेरते हुऐ कहने लगे कि आपको बस अंतिम दर्शन देने और करने के लिए यहाँ आने की तकलीफ दी है।

स्वामी जी आपको जो मिशन की बागडोर सौंपी

सतगुरू स्वामी ज्ञान नाथ जी महाराज का स्वागत करते हुए श्रद्धालु

है इसी को आगे बढ़ाना ही आपकी गुरू भक्ति है थोड़ी देर खामोश रहने के बाद हुजूर महाराज ने कहा कि मैंने आपकी बहुत परीक्षाऐं ली और कुछ मनमुख एवं पथभ्रष्ट लोगों ने आपका विरोध भी किया लेकिन मैं आपके संयम और सहनशक्ति को देखकर अति प्रसन्न हूँ। आप सभी परीक्षाओं मे पास हुऐ। इसीलिऐ निर्भय होकर इस पावन पवित्र ज्ञान को जन-जन तक पहुँचाओ परमपूजनीय सदगुरू शहनशाह बाबा बूटा सिंह जी महाराज, बाबा महताब सिंह जी महाराज और मेरी आध्यात्मिक शक्ति भरा हाथ, आशीष और आर्शीवाद हमेशा आपके साथ रहेगा। हुजूर महाराज जी ने कहा कि अब आप वापिस चण्डीगढ़ जाओ और मुझे आपसे उम्मीद ही नही बल्कि पूर्ण आशा है कि आप मिशन की जिम्मेवारी बखूबी निभाओगे।

संगरूर पंजाब में 17 नवम्बर 2003 को सदगुरू बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज ने सभी श्रद्धालुओं को अपना अंतिम आदेश और उपदेश दिया और सब को धन निराकार कहकर अलविदा कहा। हुजूर महाराज आराम की मुद्रा में लेट गये और तू ही निराकार, तू ही निराकार, तू ही निराकार महामंत्र का सिमरण करते हुऐ निराकारलीन हो गये।

संगरूर में ही हुजूर महाराज की अंतिम यात्रा बड़ी धूमधाम से बैण्ड-बाजे के साथ निकाली गई। हुजूर महाराज जी का पार्थिव शरीर एक फूलों से सजी हुई गाड़ी में अंतिम संस्कार भूमि तक ले जाया गया आगे-आगे फूलों से

20 अक्टूबर 2002 को संगरूर, पंजाब में
एक विशाल रूहानी सत्संग का आयोजन किया गया
जिसमें यू0पी0 (कानपुर), पंजाब, हरियाणा, दिल्ली आदि
से आये समस्त श्रद्धालुओं की मौजूदगी में
हुजूर लक्ष्मण सिंह जी महाराज
निराकारी जागृति मिशन (रजि0)
का विमोचन करते हुए।

सतगुरू स्वामी ज्ञान नाथ जी महाराज मीडिया से मुखातिब होते हुए।

सजी हुई गाड़ी और पीछे-पीछे तू ही निराकार, तू ही निराकार, तू ही निराकार महामंत्र की अमर ध्वनि के साथ वातावरण भी निराकारमय हो गया और ऐसा लग रहा था कि वास्तव में साकार और निराकार एक ही है।

सबसे पहले स्वयं स्वामी ज्ञान नाथ जी महाराज और महापुरूष कमल ने हुजूर महाराज के अर्थी को कंधा दिया और अंत मे अपने हृदय के सम्राट सदगुरू शहनशाह बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज के पार्थिव शरीर को स्वामी जी ने मुखाग्नि देकर अंतिम संस्कार किया। इस अवसर पर मौजूद सभी श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते हुऐ स्वामी ज्ञान नाथ जी महाराज ने कहा कि हजूर महाराज बाबा लक्ष्मण सिंह जी का आदेश और उपदेश मानना ही हम सबके लिए बाबा जी के प्रति सच्ची पुष्पांजलि और श्रद्धांजलि होगी।

निराकारी जागृति मिशन की शुरूआत

परमपूजनीय बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज के साथ गाँव बब्याल अम्बाला हरियाणा में हुई ज्ञान चर्चा

.....

बब्याल अम्बाला 15 मार्च 1998 महापुरूष रत्न लाल की देख–रेख में रूहानी सत्संग का आयोजन किया गया। आस–पास से निराकारी जागृति मिशन के अनेकों श्रद्धालुओं और अन्य लोगों ने इस सत्संग में महापुरूषों और मातृशक्ति के रूहानी प्रवचनों और भजनों का खूब आनंद लिया।

हुजूर महाराज जब भी कानपुर यू. पी. से हरियाणा में सत्संग फरमाने आते थे तो अपने पैतृक गॉव बब्याल भी जरूर जाते थे। गाँव बब्याल बाबा जी की पावन जन्म भूमि है। इसी गाँव में बाबा जी का जन्म हुआ और यहीं से उन्होने शिक्षा ग्रहण की। जैसा कि हुजूर महाराज बहुत ही विनम्र और उच्चकोटि के ब्रह्मज्ञानी, आत्मवेत्ता सत्गुरू थे जब भी बाबा जी यहॉ आते थे तो अनेकों लोग अपनी–2 समस्याऐं लेकर उनके पास अक्सर आते रहते थे। हुजूर महाराज सभी की समस्याओं का समाधान बहुत ही सहज ढंग से कर देते थे और प्रभु परमात्मा के सिमरण के लिए सभी आने वालों को प्रेरित करते थे। मुझे भी इस सत्संग में शरीक होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और बाबा जी के मुखारविंद से अमृत वचन सुनने को मिले।

सत्संग शुरू होने से पहले सांई बुल्लेशाह की

पावन काफियाँ महापुरूष सपट्टर सिंह जो गाँव बोह की संगत के प्रमुख है। उन्होने पढ़कर साध-संगत को निहाल किया।

माटी घोड़ा, माटी जोड़ा, माटी दा असवार,
माटी माटी नू दौड़ावे माटी दी खड़कार,
माटी माटी नू मारन लग्गी, माटी दे हथयार,
जिस माटी पर बहुत माटी, सो माटी हंकार।
माटी माटी नू देखण आई, माटी दी ए बहार,
हस्स खेड फिर माटी होवे, पैंदी पांउ पसार,
बुल्ला एह बुझारत बुज्झे,
तां लाह सिरों भोएं मार।

हुजूर महाराज ने बड़े ही सहज और सरल शब्दों में इस शब्द का अर्थ समझाया। बाबा जी ने अरदास की धन-धन मेरे सतगुरू पूर्ण गुरू महताब, बार-बार करूँ वंदना नमस्कार हर बार। आप ना आते जगत में तो जल मरता संसार, जग तारन को आ गये मेरे पूर्ण गुरू महताब। जो बोले तिस बलिहार, धन निराकार।

हुजूर महाराज ने रूहानी प्रवचनों में फरमाया कि साध-संगत जी इस संसार की तमाम चीजें नाश्वान हैं और हमेशा रहने वाली नही है। बस महापुरूषों सबसे महत्वपूर्ण और हमेशा हमारा साथ देने वाला इस पारब्रह्म निर्गुण-परमात्मा का ज्ञान एवं ध्यान है। इस निराकार परमात्मा का सिमरण और सत्गुरू के आदेश-उपदेश की

पालना से ही हमारे जीवन का सुधार और उद्धार हो सकता है। संसार की सब चल अचल सम्पत्ति, उपाधियाँ-उपलब्धियाँ जाने वाली हैं हमेशा रहने वाली नही हैं। संसार की तमाम चीजें मिट्टी से ही बनी हैं और इन चीजों का इस्तेमाल करने वाला इंसान भी मिट्टी से ही बना है। कहने का भाव, यह इस निर्गुण-निराकार प्रियतम् परमात्मा का एक खेल है।

यह मिट्टी ही मिट्टी के साथ खिलवाड़ कर रही है। यह मिट्टी ही मिट्टी को जन्म दे रही, यही इसकी परवरिश कर रही है, यह मिट्टी ही मिट्टी को देख रही है। दिखने वाला रंग, रूप, आकार भी मिट्टी है और देखने वाला यह इंसान भी मिट्टी है। यह मिट्टी मिट्टी को ही मार रही है।

आप जी ने फरमाया की यह माटी ही माटी के साथ क्रीड़ा करके इस माटी में ही मिल जायेगी। सत्गुरू महाराज ने कहा कि साध-संगत जी कुल-मिलाकर यह मिट्टी का ही खेल है।

आप जी ने फरमाया कि महापुरूषो सांसारिक विकारों में ज्यादा लम्पट ना हों। इन सब सीमाओं से ऊपर उठो। असलियत की पहचान करो। आप जी ने बड़े गम्भीर होकर कहा कि हमारा एक-एक श्वास कितना कीमती है। सिकंदर महान का उद्धारण देते हुऐ कहा कि अंत समय में उसको अपनी माता श्री के दर्शन करने के लिए एक श्वास भी

नही मिल सका। सभी वैद्यों-हकीमों ने जबाब दे दिया था और सिंकदर को बड़े ही स्पष्ट शब्दों में बता दिया गया था कि हे राजन ये श्वास परमेश्वर की तरफ से गिने-चुने मिलते हैं। इनमें कोई बदलाव नहीं किया जा सकता। सिंकदर ने एक लम्बी आह भरते हुए कहा कि काश कि दुनिया के लोगों को एक श्वास की कीमत पता चल जाये। आप जी ने कहा कि इन श्वासों की कीमत जानने के लिए निश्चय ही एक कामिल मुर्शिद की जीवन में जरूरत होती है। परिपूर्ण और आत्मदर्शी वक्त के हाकिम सत्गुरू के बिना यह रहस्य समझ में नही आ सकता।

हुजूर महाराज ने मौलाना रूम जी का उद्धारण देते हुए कहा कि 'किसी रास्ते पर चलने वाले यात्री को तलाश कर "**क्योंकि उसके बिना यह रास्ता अकथ और कल्पना न किए जाने वाले खतरों से भरा हुआ है**" इसीलिए संतमार्ग में सबसे महत्वपूर्ण एक यही बात है कि मुर्शिद कामिल और वक्त का हाकिम होना चाहिये। आप जी ने फिर साई बुल्लेशाह की काफियों का वर्णन करते हुए कहा कि इश्क अल्लाह की जात है, इशक अल्लाह का अंग, इश्क अल्लाह मौजूद है, इश्क अल्लाह का रंग। अर्थात सभी धर्मो के सद्ग्रथों, उपनिषदों-पुराणों, वेदों-शास्त्रों का सार और तत्ववेत्ता संत महापुरूषों का भी यही मानना है कि आपसी प्रेम और ब्रह्मज्ञान ही दवाई है सब रोगों की। क्योंकि यह निर्गुण-निराकार परमात्मा सब के रोम-रोम में ज्ञान एवं

प्रेम के रूप में बैठा है।

"हरि व्यापक सर्वत्र समाना,
प्रेम से प्रकट होये मैं जाना।"

प्रेमा भक्ति ही सबसे श्रेष्ठ भक्ति है। इसी लिए बड़े ही स्पष्ट शब्दों में आप जी ने कहा कि-

सतगुरू के प्रति सच्चा और निःस्वार्थ प्यार ही गुरमत लाइन का सार है। परमात्मा की जात भी यही प्रेम है, यह इलाही नूर ही परमात्मा है, इसके दर्शन करना और इसके साथ जीते जी एकरस होना ही परमात्मा से मिलाप करना है।

इसलिए महापुरूषों आपस में प्रेमभाव रखना ही इस निर्गुण-निराकार परमात्मा से प्यार करना है। भगवान कृष्ण ने गीता में धर्नुधर अर्जुन को भी पावन उपदेश देते हुए यही कहा कि मुझे मिलने से पहले मेरी प्रकृति से प्यार कर। सब में मुझ अविनाशी निर्गुण-निराकार को और निराकार में सब को देख। हे अर्जुन इसी प्रेम की लड़ी में यह संसार बंधा हुआ है। बस आज इतना ही काफी है। साद संगत जी प्यार नाल आखो धन निराकार जी।

कल्याणपुर, कानपुर में रूहानी प्रवचनों को सुनने के लिए उमड़ता जन समूह

परमवंदनीय हजूर बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज के साथ कल्याणपुर, कानपुर में सत्संग के दौरान हुई ज्ञान चर्चा

.....

कल्याणपुर, कानपुर 10 मार्च 1999 महापुरूष मौजी लाल जी की देख–रेख में रूहानी सत्संग का आयोजन किया गया। आस–पास से आए श्रद्धालुओं ने रूहानी प्रवचनों और भजनों का खूब आनंद लिया। भाई साहब मौजी लाल जी एक उच्चकोटि के महापुरूष हैं और निराकारी जागृति मिशन कानपुर शाखा के प्रभारी भी हैं। यह परिवार हुजूर महाराज जी के बहुत ही नजदीक रहा है और निराकारी जागृति मिशन को पूरी तरह से समर्पित है। जब भी कानपुर में कोई संत समागम होता है तो मौजी लाल, श्रीमती वीना और परिवार के सभी सदस्यों का विशेष योगदान होता है। सतगुरू महाराज ने मुझे कहा कि स्वामी जी यह परिवार मेरी निजी तौर पर और साध–संगत की हमेशा सेवा में तत्पर रहता है। निश्चय ही ऐसे महापुरूषों के अथक प्रयास से यह मिशन आगे बढ़ेगा और ऐसे महापुरूषों के ऊपर हमेशा सत्गुरू का दया भरा हाथ रहेगा।

सत्संग शुरू होने से पहले महापुरूष मौजी लाल जी ने दूर–दराज से आऐ सभी श्रद्धालुओं का अपने घर सत्संग में आने के लिए धन्यवाद किया और सतगुरू की महिमा पर व्याख्यान देते हुऐ कहा कि वाकई ही सतगुरू बहुत ही महान है यह सतगुरू की ही कृपा है कि हम सब को आज

यह प्रभु की चर्चा सुनने और साध–संगत की चरण धूलि लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। जैसे संतो ने कहा भी है कि **संत-समागम हरि कथा तुलसी दुर्लभ दोये।** वास्तव में संतों का दर्शन और प्रभु के ज्ञान की चर्चा सौभाग्य से ही प्राप्त होती है। मुझे अपार हर्ष हो रहा है क्योंकि आज हम सब को ये दोनो अर्थात संतो के पावन दर्शन और श्रीहरि कथा सुनने को मिल रही है। महापुरूषो हुजूर महाराज के रूहानि प्रवचनों को सब ने ध्यान से सुनना है और जीवन में सतगुरू महाराज के मुखारविंद वचनों पर अमल भी करना है। तभी हमारे जीवन का उद्धार और सुधार होगा।

सत्संग मे सबसे पहले श्रीमती वीना जी ने पावन वाणी का शब्द पढ़कर साध–संगत को निहाल किया।

साची प्रीति हम तुम सिउ जोरी, तुम सिउ जोर ओर संग तोरी, माधव तुम नाहि तोरहु तो हम नही तोरहि, तुम सिउ तोर कवन सिउ जोरहि, संतन मोको पूँजी सौंपी, उतरया मन का धोखा, धर्मराय अब कहा करेगा जब फाटयो सगला लेखा।

रूहानी प्रवचनों से पहले हुजूर बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज ने सत्गुरू भगवान के श्री चरणों में अरदास की। धन–धन मेरे सतगुरू पूर्ण गुरू महताब, बार–बार करूँ बंदगी नमस्कार हर बार। जो बोले तिस बलिहार, धन निराकार। साध–संगत जी प्यार नाल आखो जी धन

निराकार। हुजूर महाराज ने कहा कि जिसका प्यार सत्गुरू और निराकार के प्रति अडिग और सच्चा है। सिर्फ वही मोक्ष–मुक्ति का अधिकारी बन सकता है।

साध–संगत जी सारी दुनिया का लगाव एक तरफ और सत्गुरू का प्यार एक तरफ इतनी बड़ी महिमा है सतगुरू के प्रेम की। बाबा जी ने कहा कि हे सच्चे पातशाह बस अब तो मैने संसार के सभी रिश्ते–नातों को छोड़कर तेरे साथ सच्ची प्रीत कर ली है। कृपा करके यह प्रेम–प्रीति का रिश्ता मेरे साथ हमेशा बनाकर रखना। क्योंकि तेरे सिवाय मेरा कोई भी नही है मैने अपने जीवन काल में अच्छी तरह निरख–परख करके देख लिया है कि संसार के सभी रिश्ते स्वार्थ पर ही टिके हुऐ है। सिर्फ तेरा प्यार ही सच्चा और हमेशा रहने वाला है। हे निर्गुण–निराकार परमात्मा अपनी रहमत बनाकर रखना कि मुझे संतो का प्यार और निराकार का दीदार हमेशा मिलता रहे। सतगुरू महाराज ने आगे कहा कि मेरे सतगुरू ने मुझे यह रूहानी ज्ञान की पुँजी दे दी है और इस पारब्रह्म निर्गुण–निराकार परमात्मा का दर्शन दीदार करके मेरे सभी संशय और भ्रम दूर हो गये है।

अब यह बहुमूल्य निज स्वरूप आत्मा का ज्ञान प्राप्त करके मेरे सभी कर्मो–धर्मो का लेखा–जोखा समाप्त हो गया है और आठों पहर बारह याम मुझे इसी ओत–प्रोत निर्गुण–निराकार के ज्ञान की मस्ती चढ़ी रहती है। इस निराकार हस्ती के दर्शन करके मेरा जीवन धन्य हो गया है।

बस महापुरूषो इस निर्गुण-निराकार परमात्मा को जान-पहचान कर इसके साथ हमेशा जुड़े रहो। साध-संगत जी यह करनी और अनुभव का विषय है-

"यह करनी का खेल है नाहि बुद्धि विचार,
कथनी छोड़ करनी करे तब पावे कुछ सार।"

जीवन में जैसा आप कहते हो वैसा करके भी दिखाना है। झूठी आशाओं और कल्पनाओं के भरोसे मत बैठे रहना। बाबा जी ने पावन बाईबल का उदारहण देते हुए कहा कि हवा चलती है जहाँ यह सुनाई देती है तुम उसकी आवाज सुनते हो पर यह नही बता सकते कि यह कहाँ से आती है और कहाँ जाती है। कहने का भाव कि जीते जी मरना सीखो। जब तक मनुष्य दोबारा जन्म नही लेता वह प्रभु की बादशाहत नही देख सकता।

इसीलिए अपने आत्म स्वरूप का ज्ञान एवं बोध होना बहुत ही जरूरी है-

क्या तू नही जानता कि तू पवित्र हरि मन्दिर हैं तथा परमात्मा की धारा तेरे अन्दर निवास करती है और निरंतर हिलोरे दे रही है, इसीलिए तू परमात्मा ही है। यह सब कुछ नजारे तुम्हारे अन्दर है। बस जरूरत है नित्यप्रति अभ्यास करके इनको देखने की। अंर्तमुखी होकर आप इन सब रूहानी नजारों को बाखूबी देख सकते हैं। इस अंग-संग निर्गुण-निराकार परमात्मा की बादशाहत कहीं आसमान से नही गिरेगी यह

सबकुछ पहले से ही आपके अन्दर विद्यमान है।

महापुरूषों यह याद रखो कि केवल मानव शरीर में ही और जीवित सत-स्वरूप हस्ती द्वारा ही शरीर से उपर उठकर ही परमात्मा से मिला जा सकता है। साध-संगत जी इस निर्गुण-निराकार एवं सर्वाधार शब्द से जुड़कर, एक सामान्य व्यक्ति भी महान व्यक्तित्व का स्वामी बन जाता है। इस निराकार परमात्मा का निरंतर ध्यान करने से उसके सामने आत्मा के भेद स्वतः ही प्रकट हो जाते हैं।

साध-संगत जी ऐसा ज्ञानवान महापुरूष अड़सठ/ 68 तीर्थों का फल प्राप्त कर लेता है। इस निराकार का कोई अंत नही है यह वास्तव में बेअंत है। यह हमेशा साथ-साथ है। मैं संसार के अंत तक तेरे साथ रहूँगा। न मैं तुझे त्यागुगाँ, न छोड़कर जाउँगा। बाबा जी ने कहा कि-

"रूप अनेक एक है स्वामी,
सब घट-घट के अंर्तयामी।"

महापुरूषो जैसे समुद्र में लहरें, भंवर, फेन आदि उठते हैं। लेकिन पानी वहीं पानी ही रहता है। ठीक इसी प्रकार से ये लहरें कुछ देर अपनी क्रीड़ा करके वापिस पानी में ही एकरूप हो जाती है।

इसलिए इसे अपने आप में परिपूर्ण और सबकुछ करने में समरथ निराकार परमात्मा को जानकर तत्वदर्शी महापुरूषों की दृष्टि निराकार परमात्मा के साथ जुड़कर एकाकार हो जाती है। द्वैत समाप्त होकर इस अद्वैत

स्वरूप में समरस होकर अमरता को प्राप्त हो जाती है। महापुरूषो बस आज के लिऐ इतना ही काफी। शेष चर्चा बाद में करेगें। साध–संगत जी जो बोलें तिस बलिहार, धन निराकार।

सत्संग सम्पन्न होने के बाद गुरू का अटूट भण्डारा बरताया गया और सभी महापुरूष अपने–2 घर चले गये। हुजूर महाराज भी आराम फरमाने लगे। शाम के समय फिर हम सब बाबा जी के पास बैठ गये और फिर ज्ञान चर्चा का दौर शुरू हो गया। हुजूर महाराज ने कहा कि महापुरूषो किसी को कुछ पूछने की इच्छा हो तो कहो। जितना समय प्रभु के यशोगान में बीत जाये तो बहुत ही अच्छा है।

अवर काज तेरे किते ना काम मिल साध-संगत
भज केवल नाम। समझ-समझ के मुक्ति पावे
काल फाँस के बीच न आवे।

यह संत महापुरूषों की पवित्र वाणी है। समझने की जरूरत है। जीवन में दो महत्वपूर्ण काम पहला सत्संग, ज्ञानवान महापुरूषों की संगत, दूसरा हर समय इस तू ही निराकार महामंत्र का नित्यप्रति सिमरण। सिर्फ यही महामंत्र इस घोर कलयुग में भव बंधनो से मुक्त करने वाला है।

महापुरूष मौजी लाल ने हुजूर महाराज से प्रार्थना की बाबा जी भक्ति मार्ग में सबसे महत्वपूर्ण बात क्या है और जिज्ञासु को क्या करना चाहिये जिससे उसका जीवन सार्थक सिद्ध हो जाये। हुजूर महाराज ने कहा क्या बात है,

महापुरूषो आपने ऐसा सवाल किया है जिसमें अध्यात्म का सारा रहस्य छिपा है। अब आप सभी महापुरूषों एवं मातृशक्ति ध्यान से सुनो यह जो मैं आपको बताने जा रहा हूँ सारे अध्यात्म का सार है। यह गागर में सागर है और बिंदू में सिंधू हैं। अगर आप इसको जीवन में धारण करोगे तो निश्चय ही आप सब का कल्याण होगा।

सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय के लिऐ तीन महत्वपूर्ण सिद्धातों को आत्मसात करने की जरूरत है। पहला सतगुरू परिपूर्ण और आत्मदर्शी होना चाहिये, दूसरा उसके अंतर में सतशब्द प्रकट हो और तीसरा वह इस निर्गुण-निराकार परमात्मा के साथ अभेद हो अर्थात जीते जी एकरूप हो गया हो।

क्योंकि इस नर नारायणी देह के अंदर यह आत्मतत्व एक बहुत ही कीमती जौहर है। संत मार्ग में सिर्फ सूरत–शब्द योग, अनहद शब्द मालिकेकुल परमात्मा से मिलने की एक परिपूर्ण युक्ति है। आत्म समर्पण संत मार्ग में बहुत ही अहमियत रखता है।

देखो बेटा तन, मन, धन अर्थात अपना सबकुछ इस निर्गुण–निराकार परमात्मा के साक्षात स्वरूप वक्त के हाकिम ब्रह्मनिष्ठ सतगुरू को जीते जी समर्पित कर देना ही आत्म समर्पण कहलाता है। वैसे भी डाक्टर साहब अंत में सबकुछ छोड़ना ही है। क्यों न इस संसारी झमेले से

जौते जी छुटकारा पा लिया जाये। अगर ज्ञान की दृष्टि से देखा जाये तो यहाँ पर हमारा कुछ भी नही है जैसे आपको इस निर्गुण–निराकार एवं सर्वाधार परमात्मा का ज्ञान देते हुए स्पष्टतौर से बताया जाता है कि यह तन मन धन सबकुछ इस निर्गुण–निराकार परमात्मा का है। जीवन इस निराकार एवं सर्वाधार परमात्मा की मर्जी पर छोड़ देना चाहिये। जो यह करेगा ठीक करेगा। डाक्टर साहब गुरू नानक साहब का जीवन के प्रति ऐसा ही दृष्टिकोण था वह हमेशा कहा करते थे कि–

हे प्रभु जो मैं कहता हूँ वह नही बल्कि जैसा तू चाहे वैसा करो और मेरी नही बल्कि आपकी इच्छा पूरी हो। क्योंकि यह परमात्मा उन्ही पर दया-मेहर करता है जो इसकी इच्छा के अनुसार जीवन बसर करते है।

डॉक्टर साहब इस की इच्छा पर सबकुछ छोड़कर आप निश्चिंत हो जाओ क्योंकि सारी सृष्टि की व्यवस्था यह ओत–प्रोत निराकार परमात्मा स्वयं अपने तरीके से ही करता है। यह आश्चर्यजनक परंतु अकाट्य सत्य है।

हमेशा इसी का धन्यवाद करो और ऐसा एहसास करो कि जो मैं हूँ आपकी कृपा से हूँ और जो नही हूँ वही भी आपकी कृपा से हूँ।

इसीलिए बेटा संसार से भागना नही इसी में

रहकर जागना है और जो सो रहे हैं उनको भी जगाना है। आपने सुना होगा जब मंदिर में प्रार्थना की जाती है यही अंत में कहा जाता है कि हे भगवान जैसा तू चाहे मेरे लिए वैसा ही कर तेरी इच्छा पूर्ण हो। ऐसे ही मुस्लिम धर्म में और ईसाई धर्म में तथास्तु या आमीन कहकर प्रार्थना करते है जिसका सीधा सा अर्थ होता है कि जैसा तू चाहे वैसा ही हो। बेटा सत्गुरू और सच्चे गुरमुख भी हमेशा यही सोचते है कि सत्गुरू परमात्मा के सिवाय उनका कोई परमहितैषी नही है। जितना ज्यादा सूरत–शब्द, ज्योति–नाद योग का अभ्यास होगा आपके अंदर उतनी ही द्रढ़ता अपने आप आ जायेगी।

इसीलिए आत्मनिर्भर हो जाओ क्योंकि परमात्मा उन्ही की सहायता करता है जो अपनी सहायता आप करते है। आप स्वयं के प्रति सच्चे है तो किसी से डरने की जरूरत नही है। इसीलिए महापुरूषो हकीकत के खोजी बनो और इस विश्वव्यापी सच्चाई की खोज करो। इसको जानकर इसी का निरंतर ध्यान करते हुऐ इसको तमाम सृष्टि के प्रपंच में व्यापक जानते हुए इसमे ठहरने का अभ्यास करो और यह अनुभव करो कि हमारा असली स्वरूप यही है। वास्तव में हम यही निर्गुण–निराकार स्वरूप है। इसी सच्चाई के बारे में चिश्ती साहब फरमाते है कि–

तू ज्ञान की आँख को खोल ताकि खुदा का जलवा तुझे नजर आ जाये। तू केवल आँख ही बन जा और बोलने व सुनने का रास्ते बंद कर ले।

डाक्टर साहब यह निर्गुण–निराकार परमात्मा बहुत ही अदभुत और सबसे निराला है। अशब्द है, सभी कारणों का महाकारण है, अपने आप में अडोल और स्वयं स्थितप्रज्ञ है, अकाटय और अकथनीय है। बस डाक्टर साहब निरंतर सत्संग सेवा और सिमरण करते रहो यह परमसता स्वयं ही प्रकट हो जाती है। धन निराकार जी।

श्रीमती वीना जी ने हुजूर महाराज के श्री चरणों में विनती की बाबा जी दासी के मन में एक सवाल उठा है अगर आपकी इजाजत हो तो दासी अर्ज करे। हाँ जी क्यों नही, कहिये जो भी आप जानना चाहते हैं। बाबा जी यह ज्ञान तो हमें आपकी कृपा से हो गया है कि हमारा असली स्वरूप यही निर्गुण–निराकार है। इस आत्म ज्ञान अर्थात परम आनंद की अवस्था में हमेशा रहने के लिऐ क्या–2 सावधानियाँ बरतनी चाहिये। वीना बेटा आपका यह सवाल बहुत ही अच्छा है। अब आप सब मेरी बात की तरफ ध्यान दो। आत्मा और परमात्मा के बीच मन एक सेतु / पुल का काम करता है। यह मन हमारा परममित्र भी है और दुश्मन भी है। अगर दृष्टिकोण सकारात्मक है तो यही मन परमात्मा की तरफ ले जायेगा अगर दृष्टिकोण नाकारात्मक है तो यह मन पतन का कारण बन जाता है। मन में भी इतनी प्रबल शक्ति है कि कभी–कभी इसके आगे किसी की भी नही चलती। यह मन इतना प्रबल होता है कि बुद्धि को भी चकमा दे देता है। धैर्य को भी यह कई बार तोड़ देता है, विवेक को भी विचलित

कर देता है और भ्रम में डाल देता है। यह मन दशों दिशांओ को भी हिला देता है।

इसीलिए इस चंचल और चलायमान मन को समझने और समझाने के लिए साधक को तीन महामंत्र सत्संग, सेवा और इस निर्गुण–निराकार एवं सर्वाधार परमात्मा का सिमरण एवं ध्यान अपने अंतःकरण में हमेशा–2 के लिऐ धारण कर लेना चाहिये। इन तीनो महामंत्रों का पालन करके आप एक ऐसी परमआनंद वाली अवस्था को प्राप्त कर लोगे–

जहाँ से विचार भी वापिस लौट आते है, बुद्धि भी तर्कहीन हो जाती है, चित चिंतन शून्य हो जाता है। बस रह जाता है चारों तरफ, अंदर-बाहर, आगे-पीछे, ऊपर-नीचे यही निर्गुण-निराकार परमात्मा। यही अवस्था ज्ञान, बोध एंव परमआनंद की अवस्था है। जहाँ सभी विषयों का अंत, कुछ भी कहने-सुनने, देखने-दिखाने की लालसा समाप्त हो जाती है। बस यहीं रूक जाओ। इससे उपर नहीं विचार जाके मन बसियो निराकार।

इससे आगे कुछ भी नही है। वास्तव में आपकी अंतिम मंजिल यही है। बस इसका ध्यान करते हुए यही हो जाओ और आप वास्तव में हैं भी यही। इस तरीके से ध्यान करने से आपका ध्यान निश्चय ही दृढ़ हो जायेगा और सच्चाई का साक्षात्कार होगा।

देखो बेटा वीना इस सच्चाई को आत्मसात करो और मिथ्यावाद को बिल्कुल छोड़ दो यह निर्गुण–निराकार परमात्मा हमेशा आपके साथ था वर्तमान में भी है और भविष्य में भी आपके अंग–संग रहेगा। जहाँ भी चाहो जिस परिस्थिति में चाहो इसको सजदा कर सकते हो। जैसे आलिवर होम्स एक अमेरिकन विद्वान कहते है कि–

जहाँ भी हम श्रद्धा विश्वास और प्रेम भावना से मालिक के आगे झुक जाये वही स्थान पवित्र है। जो इस निर्गुण-निराकार परमात्मा को जानते और पहचानते हैं जो साहिबे दिल या सच्चे ज्ञानी है, उनका हृदय ही सच्चा मंदिर और मस्जिद है जिसमे मालिक स्वयं निवास करता है और जिसको प्रभु ने खुद बनाया है।

यह आप भलि–भांति जानते हैं कि यह निराकार हस्ती तमाम सृष्टि के कण–कण में समाई हुई है और हमेशा हमारे अंग–संग है। यही सच्चाई मगरिबी साहिब फरमाते है कि–

प्रियतम तेरी बगल में है। तू क्यों उससे बेखबर है।
यह तेरे अंदर है पर तू दर-ब-दर भटक रहा है।

इसीलिए स्वार्थ, अज्ञानता और धार्मिक तंगदिली को छोड़कर बस असलियत को पहचानो। शरीर से तुम इंसान हो, इसीलिए इंसानियत की शान प्रकट होनी चाहिये। आत्मा से तुम परमात्मा के अंश हो परमतत्व प्रकट

होना चाहिये। जब सतगुरू की दया मेहर से दिव्यज्ञान नेत्र खुल जाता है, तब सबकुछ साफ नजर आने लगता हैं बेटा वीना आप और डाक्टर मौजी लाल मुझे दिलोजान से प्यार करते है और निरंतर सेवा मे लगे रहते है इसीलिए मुझे आप जैसे श्रद्धालुओं से आशा ही नही पूर्ण विश्वास है कि आगे आने वाले समय में आप जैसे महापुरूषों के सहयोग से निश्चय ही निराकारी जागृति मिशन का बहुत प्रचार–प्रसार होगा। मैं भली–भांति जानता हूँ कि आपका परिवार शुरू से तन मन धन से मिशन की सेवा कर रहा है ऐसे महापुरूषों के निश्चय ही अहोभाग्य है और उनके ऊपर परमात्मा के साक्षात स्वरूप वक्त के हाकिम तत्ववेत्ता सतगुरू का दया–मेहर भरा हाथ हमेशा रहता है। ऐसे महापुरूष ही मोक्ष–मुक्ति के अधिकारी होते है। आप इस रहस्य को समझाते हैं।

जो अपने सतगुरू पर कुर्बान हो जाता है अपना सबकुछ न्यौछावर कर देता है सतगुरू भी ऐसे महापुरूषों से कोई परदा नही रखता पलभर में मालिकेकुल निर्गुण-निराकार परमात्मा का खुली आँखों से दर्शन-दीदार करा देता है।

सबकुछ जानने वाले को भी जानना और उसको आधार देने वाले कुल मालिक की हस्ती को जानने का ज्ञान भी सतगुरू करा देता है।

ऐसे महापुरूषों के जाने–अनजाने में किये गए

तमाम तीनों ताप और संतापों को सतगुरू अपने ऊपर ले लेता है और उनको बिल्कुल निर्मल बना देता है। यह बात बेटा आप भलि–भांति समझ लो कि यह सब परा विद्या और अपराविद्या का खेल है।

विद्याऐं दो प्रकार की होती है। बाहरमूखि जड़ तत्वों की पूजा, अनाप-शनाप धार्मिक कृत्य, ऋद्धि-सिद्धि, तरह-तरह के चमत्कार एवं करामातें, ऋग्वेद, यर्जुवेद, सामवेद, अथर्ववेद, वेद-शास्त्र, कुरान-पुराण और अन्य ग्रंथ, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, छंद, ज्योतिष आदि अपरा विद्या में आ जाते हैं। परा विद्या किसी बाहरी विद्या की मोहताज नही है। यह एक कुदरती विद्या है। जिसे जानने से सबकुछ जाना जा सकता है। परा विद्या से अविनाशी निर्गुण-निराकार परमात्मा का पलभर में खुली आँखों से दर्शन-दीदार हो जाता है।

अभी ज्ञान चर्चा चल ही रही थी महापुरूष दर्शन लाल और उनकी धर्मपत्नी रानी भी साथ ही बैठी थी अचानक श्रीमती रानी ने भी एक सवाल जानना चाहा और हुजूर महाराज से अर्ज की। बाबा जी ने कहा बेटा रानी आप कभी कभी कोई गिनी–चुनी बात करती हैं। आप भी कहिये क्या जानना चाहती हो। रानी ने कहा बाबा जी संसार में सबसे श्रेष्ठ और सदा रहने वाला ज्ञान यह आत्मा का ज्ञान है यह तो

हमने आपकी कृपा से जान लिया है और हमने एहसास भी कर लिया है। दासी तो बस इसी ज्ञान पर अडिग रहना चाहती है। कृपा करके बाबा जी इसी कैवल्य ज्ञान की चर्चा को आगे बढ़ाऐं। आपने बिल्कुल ठीक कहा रानी यह ब्रह्मज्ञान सोलह आने सच है। अगर आत्मज्ञान और विवेक वाली दृष्टि से देखा जाये तो संसार के तमाम विषयों के ज्ञान से यह आत्मा का ज्ञान ही सर्वश्रेष्ठ है। यह निर्गुण–निराकार परमात्मा स्वयं ही परमतत्व है। यह कोई फिरकेबाजी नही है और यह किसी के द्वारा बनाया नही जाता। यह अपने आप में स्वतंत्र हैं यह हमारे इस पार भी है और उस पार भी है।

जैसे सूर्य उदय होने से रात्रि का सारा अंधकार समाप्त हो जाता है। ठीक इसी प्रकार से आत्मा का ज्ञान एवं बोध होने से अज्ञानता भी समाप्त हो जाती है। यह निर्गुण–निराकार परमसत्ता शुरूआत, मध्य और अंत तक एकमिक और एकरस है। इसकी तुलना संसार की किसी भी चीज से नही की जा सकती। जैसे केले के वृक्ष पर फल आने के बाद केले के वृक्ष को काट दिया जाता है। ठीक इसी तरह से–

निज स्वरूप आत्मा का ज्ञान एवं बोध होने पर सभी कर्म - क्रियाएं, संकल्प - विकल्प, बुद्धि के तर्क- वितर्क, हर्ष - शोक, सुख - दुःख, सांसारिक इच्छाऐं, तृष्णाएं स्वतः ही समाप्त हो जाती हैं।

इसीलिए साकार–निराकार भिन्न नही है। एक ही है। यह दृष्ठिमान जगत इसी निराकार में ही स्थित है।

जैसे समुद्र में लहरें चाहे छोटी हों या फिर बड़ी हो लेकिन है तो पानी। यह लहरें कभी भी समुद्र से भिन्न नही हो सकती। यही सोहम् वृति जीव आत्मा से लेकर परमात्मा तक पहुँचती है। इसीलिऐ हाथों से काम, वाणी से नाम और हृदय में रमे हुए राम का रमण होना चाहिये। चिंता छोड़ो, चिंतन करो। अगर आप चिंता करोगे तो यह परमात्मा निश्चिंत हो जायेगा और अगर आप निश्चिंत हो गये तो आपकी चिंता यह निराकार परमेश्वर खुद करेगा। क्योंकि कुछ प्राप्त करने और कुछ खो जाने की चिंता सबसे बड़ी समस्या है।

यह अंग संग निराकार परमात्मा अपने आप में बिल्कुल स्वतंत्र और हमेशा तटस्थ रहने वाली परमसत्ता है। इसीलिऐ उठते - बैठते, चलते -फिरते, खाते - पीते, सोते - जागते इसी का ध्यान करो और अपने आप को यही समझो।

आपका जीवन आनंदमय हो जायेगा। क्योंकि अंत में यही निर्गुण–निराकार परमात्मा ही शेष बचेगा। यह देखने में कुछ भी नही लगता लेकिन ज्ञान एवं विवेक से देखा जाये तो यह कुछ नही ही सबकुछ है। वास्तव में आप यही हो। इसी एक को जानो, इसी को मानो और इसका नित्यप्रति

सिमरण करते हुऐ यही हो जाओ। साध संगत जी समय काफी हो गया है। आज बस इतना ही काफी है। साध संगत जी प्यार नाल आखो धन निराकार जी।

इसी निर्गुण-निराकार आत्म स्वरूप के ध्यान में निमग्न होकर मन को विचारशून्य, बुद्धि को भ्रम, संशय, तर्क-वितर्क से खाली, अंहमभाव को छोड़कर, यही हो जाओ। वास्तव में आपका वास्तविक स्वरूप यही है।

गोविन्द नगर, कानपुर में ज्ञानचर्चा करते हुए हुजूर लक्ष्मण सिंह जी महाराज

सतगुरू शहनशाह हुजूर लक्ष्मण सिंह जी महाराज के साथ निम्नलिखित सत्संगों में हुई ज्ञान चर्चा का विवरणः

.....

परमपूजनीय हुजूर बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज के साथ 20 मार्च 1999, कानपुर यू.पी. में संत समागम के दौरान हुई ज्ञान चर्चा

.....

कानपुर, गोविंद नगर (संजय नगर) 20 मार्च 1999 में एक विशाल संत सम्मेलन का आयोजन किया गया। सौभाग्य से इस संत समागम में मुझे भी शरीक होने का मौका मिल गया। संत महापुरूषों ने सत्संग में ज्ञान की खूब अमृत वर्षा की। सभी ने महापुरूषों के भजन व शब्दवाणी और परमवंदनीय सतगुरू शहनशाह बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज के रूहानी सत्संग प्रवचनों का आनंद लिया।

सत्संग सम्पन्न होने के बाद हम संजय नगर के महापुरूषों सर्वश्री नत्था सिंह, राम अवतार, राधे, राम आसरे, रामप्यारी, किरन आदि हुजूर महाराज के साथ महापुरूष मौजी लाल जी के घर कल्याणपुर में आ गये। महापुरूष मौजी लाल जी बहुत ही सरल स्वभाव वाले और एक उच्चकोटि के महापुरूष है तथा निराकारी जागृति मिशन के कानपुर शाखा के प्रभारी भी हैं। यह परिवार हमेशा बाबा जी के बहुत ही नजदीक रहा है और मिशन की हमेशा तन, मन

और धन से सेवा करता रहता है। सतगुरू महाराज उनके घर अक्सर सत्संग फरमाने जाते रहते थे।

हुजूर महाराज ने अपने जीवन का ज्यादातर समय कानपुर में ही बिताया। इसीलिए कानपुर की साध–संगत को बाबा जी का भरपूर प्यार मिला। सत्संग भवन में सुबह–शाम प्रभु का गुणगान होता था। रविवार को सुबह और शाम को हमेशा सत्संग होना निश्चित था। कानपुर में हुजूर महाराज जगह–जगह जाकर इस अमोलक ज्ञान का प्रचार–प्रसार करते थे। जब भी बाबा जी हरियाणा, पंजाब में सत्संग फरमाने आते थे सत्संग के तुरंत बाद कहते थे कि महापुरूषो कानपुर वापिस भी जाना है। जब भी कानपुर में संत समागम होता है सारी साध–संगत बढ़–चढ़कर सेवा करती है।

शाम के समय मौसम भी खूब सुहावना था और हुजूर महाराज भी आनंद की मुद्रा में थे। सभी भाई–बहने और बच्चे मन ही मन सोच रहे थे कि बाबा जी कुछ ज्ञान की चर्चा करें तो कितना अच्छा होगा। मैंने हुजूर महाराज जी के श्री चरणों में कुछ आध्यात्मिक ज्ञान की चर्चा करने के लिऐ विनती की ताकि जीव आत्मा का कल्याण हो। बाबा जी ने कहा ठीक है इससे अच्छा मौका और क्या होगा। महापुरूष मौजी लाल, श्रीमती वीना जी, राहुल, रोहित, दीप्ति, महापुरूष राजा राम, श्रीमती सरस्वती, रवि बहन जी, रानी, दर्शन लाल, मिस्टर ओम प्रकाश चौहान आदि सभी महापुरूष बाबा जी के

समक्ष बैठ गये और सतगुरू महाराज गद्दी पर विराजमान हो गये। मैने परमवंदनीय बाबा महताब सिंह जी महाराज द्वारा रचित गीता से पावन पवित्र वाणी का शब्द पढ़ा

"दुःख भंजन तेरा नाम जी, दुःख भंजन तेरा नाम,
आठो पहर अराधिये पूर्ण सत्गुरू ज्ञान"

और हुजूर महाराज ने ज्ञान चर्चा शुरू कर दी। सबसे पहले निराकारी जागृति मिशन के श्लोगन का जयघोष किया, जो बोले तिस बलिहार धन निराकार' साद–सगंत जी प्यार नाल आखो धन निराकार' बाबा जी ने फरमाया कि यह जो निज स्वरूप आत्मा का अमोलक ज्ञान आपको दिया गया है यह उसको प्राप्त होता है जिसके प्रारब्ध, संचित और वर्तमान सत्कर्म बहुत ही अच्छे होते है। यह बहुमूल्य ज्ञान एक ऐसी औषधि है जिसका निरंतर सेवन करने से, सतगुरू महाराज के प्रति पूर्ण समर्पण और शरणागत भाव, तन, मन, धन, वचन और कर्म से तथा निःस्वार्थ भाव से सेवा करने से, शरीरभाव कर्ताभाव, भोग्ताभाव, अहम्भाव को पूर्णतयः तिलांजलि देकर अर्थात छोड़कर, सतगुरू भगवान जो जीता जागता एवं चलता फिरता परमात्मा और एक महान तीर्थ है, लीविंग मास्टर ऑन दा अर्थ, ब्रह्म, विष्णु, महेश और ब्रह्मण्ड में अन्य दिव्य शक्तियों से महान है। जो वक्त के हाकिम आत्मदर्शी सतगुरू को सर्वेसर्वा मानकर तथा उनके आदेश–उपदेश की बाखूबी पालना करता है उसके सहज मे ही संसार के तीनो दैहिक, दैविक और आत्मिक ताप–संताप

स्वतः ही समाप्त हो जाते हैं।

सतगुरू महाराज ने आगे फरमाया कि जो इंसान इस ज्ञान को प्राप्त करके आठो पहर बारह याम, उठते-बैठते, चलते-फिरते, खाते-पीते, सोते-जागते निरंतर इस आमने-सामने, चारों तरफ हर समय मौजूद निर्गुण-निराकार परमात्मा का ध्यान करता है। ऐसे ज्ञानवान महापुरूष का जीवन निश्चय ही धन्य हो जाता है। वह जीते जी इसके दर्शन करके आध्यात्म के मर्म को भली-भांति समझ लेता है। इस विश्वस्वरूप निर्गुण-निराकार को जान लेता है। इसको जानकर और पहचान कर इसके सगुण और निर्गुण दोनों स्वरूपों का ज्ञान यानि कि निराकार से साकार और साकार से निराकार का ज्ञान एवं बोध हो जाता है। ऐसा ज्ञानवान महापुरूष इसी के सिमरण और ध्यान में आत्म मस्त रहता है। इसी में रमण करता है और अंततः यही हो जाता है। ऐसे महापुरूषों के सभी संदेह और संशय दूर हो जाते हैं। सतगुरू कृपा से आत्मज्ञान द्वारा परमात्मा का अनुभव करके लौकिक और अलौकिक दोनों लोक सिमर जाते हैं।

महापुरूष मौजी लाल, प्रभारी कानपुर शाखा ने हुजूर महाराज से विनती की, बाबा जी आज आत्मज्ञान के बारे में ही चर्चा की जाये ताकि महापुरूषों के अंतःकरण में यह ज्ञान अच्छी तरह से समा सके और हम सब का कल्याण हो सके। हुजूर महाराज ने कहा अरे अगर ऐसा हो जाये और

इस ओत-प्रोत निर्गुण-निराकार परमात्मा की चर्चा हो तो आज इस सुहावनी घड़ी का मजा ही आ जायेगा। हुजूर महाराज जी ने कहा ठीक है सब तरह की बातों को छोड़ दो और जीवन में सबसे सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि और जो मानव जीवन का सबसे पहला और अंतिम उद्देश्य अर्थात निर्गुण-निराकार परमात्मा को जानना और वास्तविकता की पहचान करनी। आओ आज इसी विषय पर ही चर्चा करेगें।

सत्गुरू महाराज ने फरमाया कि देखो महापुरूषों अनेकों नाम इस अनामी निर्गुण-निराकार परमात्मा के है। लेकिन यह निराकार कोई नाम वाम नही है यह तो स्वयं सिद्ध और मालिकेकुल परमात्मा है। यह निराकार बिल्कुल ही विशुद्ध, निर्मल और हर तरह से मुक्त, एक है-पना और स्वतंत्र हस्ती है। इसका एक बार सिमरण करने से ब्रह्मण्ड की तमाम दिव्य शक्तियों का सिमरण स्वतः ही हो जाता है। सारा योग जप, तप, संयम् साधना-अराधना एक तरफ और इस निर्गुण-निराकार परमात्मा का ज्ञान एवं ध्यान एक तरफ इतनी महान है यह निराकार परमसत्ता। बेटा समझ गये हो इसकी महानता। इसका सिमरण एवं निरंतर ध्यान करने से, दृढ़ निश्चय करने से, लौकिक और अलौकिक जगत के तमाम कठिन से कठिन कार्य भी अति सरल और आसान हो जाते है। इस का ज्ञान और ध्यान जीवन के हर क्षेत्र में सफलता की कुँजी है। अभी तक जितने भी गुरू हुए हैं यह निर्गुण-निराकार उन सबका सत्गुरू है।

क्योंकि सब गुरू इसी से ही पैदा होते है और अपनी लीला करके अंततः इसी में ही समा जाते है।

हुजूर महाराज से श्रीमती वीना जी ने विनती की कि बाबा जी मेरे मन में हमेशा एक सवाल उठता है अगर इजाजत हो तो दासी अर्ज करे। बाबा जी ने कहा कि हॉ जी जरूर कहो जो भी आपका सवाल है। आज आप आध्यात्म जगत का कोई भी रहस्य पूछो जो आपकी पहुँच से परे है। वीना जी ने अपना प्रश्न बाबा जी के समक्ष रखा और कहा कि बाबा जी आमतौर पर देखा गया है कि कुछ महापुरूष यह बहुमूल्य ज्ञान रूपी रत्न प्राप्त करके यह कहते हैं कि हम गुरू इस शरीर को नहीं मानते हम तो इस ज्ञान को गुरू मानते हैं। ऐसे महापुरूषों की जीवन में क्या गति होती है। बाबा जी ने बढ़े गंभीर होकर कहा कि पहली बात तो बेटा सतगुरू से बेमुख हुऐ ऐसे लोग महापुरूष कहलाने के अधिकारी ही नहीं और ना ही ऐसे लोग सतगुरू की आशीष और आर्शीवाद के पात्र हो सकते हैं। ऐसे नासमझ–अज्ञानी लोगों से चार पदार्थ अर्थात काम, धर्म, अर्थ और मोक्ष धीरे–धीरे छिन जाते है। जीवन नीरस, और शुष्क बन जाता है। ऐसे पथभ्रष्ट और संतों का विरोध–प्रतिशोध करने वाले लोग जीवन में सुख–शांति से हाथ धो बैठते हैं। रही ऐसे लोगों के जीवन की गति, ऐसे लोग जो यह ज्ञान लेकर सतगुरू से बेमुख हो जाते हैं उनकी दुर्गति ही होती है। ऐसे पथभ्रष्ट लोगों का कल्याण कभी नहीं हा सकता है। हुजूर महाराज जी ने

कहा कि–

"सत्गुरू नू बिसारिया व्यापण सारे रोग"

ऐसे लोग ना इधर के रहते है और नाहि उधर के, अंततः नर्क में जाते है। जैसे–जैसे इंसान सत्गुरू से दूर और बेमुख होता है तो यह ज्ञान भी लोप होना शुरू हो जाता है। क्योंकि ज्ञान होने का अंहकार जब होता है तभी ऐसी दुर्दशा होती है। ऐसे लोग अज्ञानता और अंधकार के कारण सही रास्ते से भटक जाते है और धीरे–धीरे वहीं पर वापिस आ जाते है जहॉ से उन्होने यह गुरूमत लाईन की डगर शुरू की थी। ऐसे लोगों का धीरे–धीरे पतन हो जाता है और फिर दोबारा चौरासी के चक्कर में पड़ जाते है। यह काल की रंग–बिरंगी माया बहुत ही प्रबल है इससे हमेशा सजग और सचेत रहना चाहिये। बेटा अगर सतगुरू इस ज्ञान को दे सकता है तो जब चाहे वापिस भी ले सकता है। सतगुरू महाराज बाबा लक्ष्मण सिंह जी ने सांई बुल्लेशाह का जिकर करते हुऐ कहा कि शायद आपने पढ़ा भी होगा और सुना भी होगा कि बुल्लेशाह बारह साल तक अपने सतगुरू महाराज से बेमुख रहा और उसको सत्गुरू के दर्शन तक भी नसीब नही हुए।

आखिरकार बारह वर्ष के बाद सत्गुरू के प्रति उसका दृष्टिकोण बदला और फिर सत्गुरूदेव के श्री चरणों में नतमस्तक होकर अपनी भूल स्वीकार की और आगे से ऐसी गल्ती ना करने के लिऐ तोबा की। इसी लिऐ सत्गुरू की

हर बात पर फूल चढ़ाने चाहिये। समय के रहबर वक्तगुरू का आदेश–उपदेश मानना ही तो गुरमतलाईन का सार है। सतगुरू भगवान का आदेश और उपदेश ही भक्ति के दो पँख हैं जिनके सहारे से दिन–प्रतिदिन भक्ति मार्ग में सफलता मिलती है। हुजूर महाराज ने अचानक ही घड़ी की तरफ देखा और महापुरूष मौजी लाल से कहने लगे कि भाई साहब समय काफी हो गया है अब आप सब जाओ और याद रखो रास्ते में इधर–उधर की बातें मत करना इस अंग–संग परमात्मा का सिमरण करते हुऐ जाना। बाबा जी को सबने धन निराकार कहा और सब अपने अपने घर चले गये और बाबा जी भी आराम फरमाने लगे।

सतगुरू के मुख मे ही ब्रह्म स्थित है। सतगुरू ही ब्रह्म से मिलाता है। अप्रत्यक्ष को भी प्रत्यक्ष सतगुरू ही करता है। सतगुरू कृपा से ही शिष्य को दिव्यज्ञान चक्षु मिलता है और निज स्वरूप को पहचानने की क्षमता मिलती है।

हमारी आत्मा किये गये सभी कृत्यों का साक्षी है। सर्वव्यापक है, अपने आप में परिपूर्ण है, किसी आंतरिक और बाहर की शक्ति से प्रभावित नही होती। सदा सर्वदा मुक्त है, मुक्त थी और आगे भविष्य में भी मुक्त रहेगी।

निराकारी जागृति मिशन की शुरूआत

परमवंदनीय सत्गुरू
शहनशाह बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज के साथ
सत्संग के दौरान रतनपुर कानपुर में हुई ज्ञान चर्चा

.....

रतनपुर कानपुरः 10 फरवरी 2001ः महापुरूष सुंदर लाल के निवास पर रूहानी सत्संग का आयोजन किया गया। आस-पास से आए अनेको श्रद्धालुओं ने शब्द वाणी, भजनों का खूब आनंद लिया। भाई साहब सुंदर लाल का सारा परिवार निराकारी जागृति मिशन को पूरी तरह से समर्पित है।

हुजूर महाराज रतनपुर में इनके घर अकसर सत्संग फरमाने जाते रहते थे। इतफाक से मैं भी उस दिन कानपुर बाबा जी को मिलने गया हुआ था और इसी बहाने मुझे भी सतगुरू महाराज के अमृत वचन सुनने का मौका मिल गया। हुजूर महाराज के प्रवचनों से पहले पावन वाणी का शब्द महापुरूष सुंदर लाल जी ने पढ़कर साध-संगत को निहाल किया।

दरसन दीजै राम दरसन दीजै, दरसन तोरा जीवन मोरा, बिन दरसन क्यों जीवे चकोरा, माधो सतगुरू सब जग चेला, अबके बिछुरे मिलन दहेला, धन जोबन की झूठी आशा, सत् सत् भाषै जन रैदासा।

हुजूर महाराज ने सतगुरू भगवान के श्री चरणों में अरदास की। धन-धन मेरे सतगुरू पूर्ण गुरू महताब,

बार–बार करूँ वंदना नमस्कार हर बार। जो बोले तिस बलिहार, धन निराकार। साध–संगत जी अगर दिल में इस निर्गुण–निराकार परमात्मा से मिलने का शौक हो, और इसको जानने की तीव्र जिज्ञासा हो, तड़फ हो, एक पलभर में और एक इशारे मात्र से सारी सृष्टि के कर्ता–धर्ता को खुली आँखों से देखा जा सकता है।

इस निर्गुण–निराकार परमात्मा के ज्ञान और ध्यान के बिना जीव की ऐसी हालत हो जाती है जैसी चन्द्रमा के बिना चकोर की। महापुरूषो ऐसा कहा जाता है कि चकोर और चन्द्रमा का प्यार इतना सच्चा और पक्का होता है कि चकोर एक टकटकी लगाकर चन्द्रमा की ओर देखता रहता है। कहने का भाव कि जीव की परमात्मा के बिना ऐसी गति हो जाती है जैसे चंद्रमा के बिना चकोर की। जब चकोर चन्द्रमा के दर्शन जी भर के कर लेता है तभी चैन की सांस लेता है। ठीक इसी तरह से जब तक इस जीवआत्मा को अपने निज स्वरूप का बोध नही होता तब तक भटकन ही रहेगी। जब किसी वक्त के कामिल मुर्शिद की दया–मेहर होगी तभी यह जीवआत्मा अपने असली निर्गुण–निराकार स्वरूप को पहचान कर इसके साथ एकरूप हो सकेगी। साध–संगत जी आज अनेकों गुरूओं के रूप में प्रकट होकर यही निराकार शक्ति संसार को आध्यात्मिक ज्ञान से अवगत करा रही है।

आप जी ने अपने रूहानी प्रवचनों को जारी

रखते हुऐ कहा कि सभी गुरूओं का सतगुरू और सारी सृष्टि का सरताज यही निर्गुण–निराकार परमात्मा है। सभी गुरू इसी निराकार एवं सर्वाधार परमात्मा से प्रकट होते हैं और अपना कार्य करके जैसा भी उनको आदेश होता है अंततः इसी में समा जाते हैं। क्योंकि सभी का आधार और आसरा यही है। इसी की रजा से सब कुछ होता है। हुजूर महाराज ने बड़े ही ओजस्वी वचनों में फरमाया कि ऐ दुनिया के लोगो क्यों इस चचंल और चलायमान मन की भूल–भूलैया में उलझ रहे हो। आओ परिपूर्ण सतगुरू मिला है, ये निर्गुण–निराकार का ज्ञान भी बिल्कुल पूर्ण है, जिस सच्चे दरबार में आप बैठे हैं और यह अनमोल वचन सुन रहें हैं ये भी अपने आप में परिपूर्ण है।

अगर धन और जवानी के नशे में चूर और विषय विकारों में लम्पट होकर इंद्रियों के घाट पर ही गोते खाते रहे तो यह हीरा सा जन्म व्यर्थ मे चला जायेगा। फिर चौरासी का चक्कर शुरू हो जायेगा और जीवआत्मा जन्म–मरण के चक्कर से मुक्त नही हो सकेगी।

ये सब मन के संकल्प-विकल्प, तीव्र इच्छाऐं, परिवर्तशील संसार का आर्कषण और आसक्ति ही बंधन का कारण बनती है। इसीलिए जब यह जान लिया कि यह निराकार ही सबकुछ है। सभी कर्म इसी को समर्पित करते चलो।

इसी को सबकुछ मानकर प्रवृत्तियों को

दाँये–बाँये न जाने दो और एक निष्ठ होकर अंतःकरण को इसी निर्गुण–निराकार के अधीन समझो।

जहाँ प्रेम है, भक्ति है वहाँ पर कल्पना का नामोनिशान नही है। अगर मन, बुद्धि इसी में स्थिर हो जाये तथा इसी निराकार मे प्रविष्ट हों जायें तो फिर मै-तू का झगड़ा खत्म।

आज बस इतना ही काफी है। यह महत्वपूर्ण बातें जीवन में धारण करने वाली हैं। जो अमोलक बातें आपको बताई है इनकी तरफ जरूर गौर फरमाना। आपका जीवन मगंलमय हो जायेगा। साध–संगत जी प्यार नाल आखो धन निराकार जी। सत्संग सम्पन्न हुआ, सभी महापुरूषों ने भण्डारा ग्रहण किया अपने–2 घर चले गये और सत्गुरू महाराज भी आराम फरमाने लगे। शाम के समय हुजूर महाराज बहुत ही खुश मिजाज नजर आ रहे थे। अचानक बाबा जी ने मुझे बुलाया स्वामी जी क्या कर रहे हो लगता है कोई खास बात चल रही है तभी आप के पास महापुरूषों का हजूम उमड़ रहा है। आप जी ने कहा कि सब यहीं आ जाओ। सुनाओ किस विषय पर विचार कर रहे थे। मैने बाबा जी से विनती की महाराज जी आज ये महापुरूष मन और बुद्धि का किस्सा लेकर बैठे हैं। अपने अपने सुझाव दे रहे हैं। हम सब ने बाबा जी से नम्र निवेदन किया कि आप ही कृपा करो, आप तो जानी जान है। सतगुरू भगवान ने कहा अरे भाई कमाल की बात है, स्वामी जी जो कह रहे हैं

आपकी समझ में नही आया। कोई बात नही वाकई मन और बुद्धि का खेल ही निराला है। आओ हम आपको मन बुद्धि के बारे में स्पष्ट कर देते हैं। हम सब बड़े ही ध्यान से हुजूर महाराज के मुखारबिन्द से ज्ञान अमृत वचन सुनने लगे।

आप जी ने कहा कि वास्तव मे मन और बुद्धि का हमारे जीवन में विशेष महत्व है और इनके बारे में ज्ञान होना बहुत ही जरूरी है। महापुरूषो मन की माया बहुत ही प्रबल है।

यह मन ही त्रिगुणात्मक अर्थात रजोगुण, सतोगुण और तमोगुण का मूल आधार है। तमाम इच्छाऐं, कामनाऐं, संकल्प-विकल्प, कोरी कपोल कल्पनाऐं, मूढ़ मान्यताऐं, इसी चंचल और हमेशा चलायमान मन की फुरणाऐं और उपज है। यह मन ही तो है जो अंहकार, अंधकार, अज्ञानता को उतेजित करता है और इंद्रियों के विषयों भोगों के लिए उकसाता है। इसी मन से निराशा और आशाओं की झलक निकलती है। भय, भ्रम, संशय ईष्या, द्वेष, आपसी खींचातानी, आत्मग्लानि, काम, क्रोध, लोभ, मोह और अंहकार मन के ही विकार है।

महापुरूषो जब यह मन अपने पूरे आवेश में होता है तो मात्र कल्पना से ही सृष्टि की संरचना कर लेता है और फिर नष्ट कर देता है और बुद्धि का द्वार भी बंद कर देता है बुद्धि को भ्रमित करके अपना साम्राज्य स्थापित कर

लेता है।

हुजूर महाराज ने बुद्धि के बारे में समझाते हुए कहा कि जो व्यावहारिक जगत में सुख–दुःख, पाप–पुण्य, अच्छा–बुरा, छोटा–बड़ा, आदि का ज्ञान कराती है। जिस के माध्यम से लौकिक और आलौकिक जगत और तमाम विषयों की निरख–परख होती है। जिसके द्वारा जीव और ब्रह्म का आपस में संबध स्थापित होता है यही बुद्धि है। महापुरूषो कुछ और कहना हो तो कहो आज बहुत ही सुनहरा मौका है। मैने सतगुरू महाराज के सामने कुछ कहने का थोड़ा हौसला किया और विनती की बाबा जी साकार और निराकार, सगुण–निर्गुण दोनो प्रकार की भक्ति में क्या भेद है। आप जी ने कहा कि स्वामी जी आपने कितना बढ़िया और अदुभुत सवाल किया है। निश्चय ही आप सबके जीवन में यह बहुत ही काम आयेगा। स्वामी जी यह ध्यान से सुनने और समझने वाला रहस्य है। शायद आप ने सतगुरू बाबा महताब सिंह जी महाराज द्वारा रचित गीता पढ़ी होगी। बाबा महताब जी ने साकार–निराकार, सगुण–निर्गुण भक्ति के बारे मे विस्तार और बहुत ही स्पष्ट शब्दों में समझाया है। जैसे भगवान कृष्ण जी महाराज ने अर्जुन से कहा कि हे अर्जुन किसी भी योग–युक्ति को अपना ले अंततः मुझे ही प्राप्त हो जाओगे।

साकार और निराकार अर्थात सगुण-निर्गुण दोनो ही तरीके से भगवत प्राप्ति हो सकती है। इन दोनो मार्गो में कोई खास फर्क नही है। सगुण में

भक्ति और निर्गुण में ज्ञान को अपनाना पड़ता है लेकिन अर्थ दोनो का एक ही हैं। सगुण वाला मार्ग प्रेममय और भावनामय है और निर्गुण-निराकार वाला मार्ग बिल्कुल ज्ञानमय है। क्योंकि साकार से ही निराकार का ज्ञान बोध हो सकता है। अभ्यास मार्ग से ज्ञान मार्ग श्रेष्ठ है और ज्ञान मार्ग से ध्यान मार्ग अति श्रेष्ठ है और ध्यान मार्ग से भी श्रेष्ठ सभी कर्मो का फल बिल्कुल त्याग देना बहुत ही सर्वश्रेष्ठ है।

कहने का भाव जब यह रहस्य सतगुरू के द्वारा अच्छी तरह से समझा दिया जाता है फिर यह सब बाते स्पष्ट हो जाती है। स्वामी जी जिसके घर में दिया जलता है चोर प्रवेश नही कर सकते और सभी चीजे साफ नजर आने लगती है। इसी लिए जो यह ज्ञान आपको दिया गया है यह बिल्कुल सच है। इसी को जीवन में अंत समय तक धारण करके रखो, बेकार की बहसबाजी और शास्त्रों के आधार पर शब्दों के मकड़जाल में न उलझो, इसी निर्गुण–निराकार का सिमरण ध्यान करते हुए यही हो जाओ।

आओ आज सभी यह प्रण लें कि सतगुरू की हर बात पर फूल चढ़ाने है अर्थात इनके आदेश–उपदेश की बाखूबी पालना करनी है। क्योंकि सतगुरू और निराकार प्रियतम परमात्मा में कोई भेद नही है। बस अज्ञानतावश साधक यहीं मार खा जाता है और सतगुरू भगवान जिसके अंदर यह निराकार शब्द प्रकट है उसको एक सामान्य इंसान

समझ बैठता है। यह निराकार परमेश्वर साकार बनकर ही जीवों को चेताता है। बस समझने वाली तो यही बात है बाकी सब निर्रथक लौकिक शब्दों का मकड़जाल है। स्वामी जी–

हमारे सद्ग्रंथ और समय के तत्ववेता संत महापुरूष भी इसी बात को पुकार-पुकार कर कह रहें है कि तू अपने अर्शी पिता की तरह पूर्ण बन और याद रख कि पूर्णता केवल पूर्ण से ही प्राप्त हो सकती है दूसरा कोई तौर-तरीका है ही नही।

इसलिए यह अपने आप में परिपूर्ण निर्गुण–निराकार प्रियतम परमात्मा भी आपके सामने है और इस रहस्य को समझाने वाला साकार अर्थात् समय का सतगुरू भी आपके सामने है बस सख्त जरूरत है इस जन्म–जन्मांतरो से उलझी हुई पहेली को सतगुरू कृपा से समझने की। अच्छा महापुरूषो बस आज इतना ही बाकी चर्चा बाद में होगी। साध–संगत जी प्यार नाल आखो धन निराकार।

जहाँ न कोई नाम-निशान, न रंग, रूप, आकार, नाहि मन, बुद्धि, चित्त और अंहकार। बस रह जाता है एक है-पना, आनंद ही आनंद, स्वयं से स्वयं का परिचय अर्थात् परम मौन की अवस्था जिसका ब्यान लौकिक शब्दों में नही किया जा सकता।

सुख-दुःख, लाभ-हानि, संकल्प-विकल्प मन, बुद्धि, चित्त, जाति, धर्म, वर्ण, रंग,रूप, आकार ये सब प्रकृति के हैं और हमारी आत्मा इन सब से असंग अर्थात बिल्कुल भिन्न है।

परमवंदनीय बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज के साथ अर्मापुर कानपुर में हुई ज्ञान चर्चा

.....

कानपुर अर्मापुर 20 मार्च सन् 2001 महापुरूष ओम प्रकाश सिंह चौहान जी के घर बाबा जी सत्संग फरमाने अकसर जाते रहते थे। बाबा जी के साथ मुझे भी सत्संग में जाने का मौका मिल गया। महापुरूष चौहान जी का परिवार हुजूर महाराज के बहुत ही नजदीक रहा और सत्संग में हमेशा बढ़-चढ़कर सेवा करता रहता है।

सत्संग शुरू होने से पहले भाई साहब चौहान जी ने पावन वाणी का शब्द पढ़कर सगंत को निहाल किया-

वस्तु कहीं ढूँढे कहीं किह विध आवे हाथ।
कहे कबीर तब पाईयै जब भेदी लीजे साथ,
भेदी लिया साथ कर दीनी वस्तु लखाय,
कोट जनम का पंथ था पल में पहुँचा जाय।

सत्गुरू महाराज ने कहा जो बोले तिस बलिहार, धन निराकार। साध-संगत जी यह अमोलक निर्गुण-निराकार आत्मा का ज्ञान सिर्फ वक्त के हाकिम तत्वदर्शी सतगुरू की कृपा से ही हो सकता है इसके अलावा दूसरा कोई साधन है ही नही। अज्ञानता वश मनमुख लोग इसको जगह-जगह, तरह-तरह के तौर-तरीकों से पाना चाहते हैं। इस रहस्य को समझने के लिए ऐसे महापुरूष का पल्ला पकड़ा जो इसको जानता हो। इस निर्गुण-निराकार परमात्मा को जानना आसान भी है और मुश्किल भी है।

जिसको इस अंग–संग ब्रह्म का जानकार ब्रह्मज्ञानी महापुरूष मिल गया वह पलभर में ही इस सर्वव्यापी निर्गुण–निराकार हस्ती का खुली आँखों से दर्शन करा देता है। वरना ज्ञान की कमी के कारण इंसान मन की भूल–भुलैया में ही उलझा रहता है।

जैसे महापुरूषों का वचन है कि बेटे को पिता के बिना कोई नही जानता और न कोई बेटे के अतिरिक्त पिता को जानता है। या फिर वह जिसे बेटा ज्ञात करवाए। महापुरूषो ध्यान से सुनो कि हमारे रहबरों के मुख से निकले वचन क्या कहते है। मैं इतना बड़ा हूँ कि दुनिया में भी नही समा सकता। न आकाश की ऊँचाइयों में और न धरती पर समा सकता हूँ परंतु यह बात आपको आश्चर्यजनक लगेगी कि मैं मोमन के हृदय में समा जाता हूँ। यदि मुझे मिलने की इच्छा रखते हो जो मुझे वहाँ ढूँढो, तुम मुझे ढूँढ लोगे'। साध–संगत जी संसार में भिन्न–2 प्रकार के जीव हैं। जैसी किसी की करनी होती है, वैसा ही फल मिल जाता है।

मेरे सत्गुरू बाबा महाताब जी महाराज कहा करते थे कि तीन तरह के सत्संगी संसार में होते हैं। पहले मिश्री की तरह, दूसरे रूई की तरह और तीसरे पत्थर की तरह। जैसे मिश्री पानी में घुल–मिल कर एक रूप हो जाती है ऐसे ही जिनकी प्रीत सत्गुरू से सच्ची होती है वह तो मिश्री की तरह सत्गुरू के साथ समरस हो जाते हैं और अंततः मोक्ष–मुक्ति को प्राप्त कर लेते हैं। दूसरे वह जो रूई की तरह होते हैं जैसे रूई जब पानी में भिगो दी जाये जो भीग जाती है

लेकिन बाद में सूख जाती हैं। ऐसे जो सत्संगी होते है वह जब तक सत्संग में होते हैं उनके ऊपर कुछ ज्ञान और सतगुरू के उपदेश का असर होता है लेकिन सत्संग के बाद फिर मैं कौन और तू कौन वाली अवस्था में आ जाते हैं। तीसरे वह जो पत्थर के बराबर होते हैं ऐसे लोगों के ऊपर किसी प्रकार का असर नही होता बहुत समय सत्संग में बिताने के बाद भी वह पत्थर की तरह ज्यों के त्यों ही रहते हैं।

हुजूर महाराज ने कहा कि साध–संगत जी–"**जो दिसे सो है नाहि ज्यों बादल की छाई।**" कहने का भाव कि आपको इन आँखों से जो भी दिख रहा है वास्तव में यह है ही नही यह सब फनाह होने वाला है। जो यह सब दिख रहा है बिल्कुल निराला जहर है इसके आर्कषण में मत फँसो तन मन सब इसी निर्गुण–निराकार की रचना है। हमें पैदा करके हमारी यह परवरिश कर रहा है। लेकिन जो हमारा किया हुआ वायदा कि मैं तेरा नाम जपूँगा वह हम पूरा नही कर रहें हैं। यह निराकार परमात्मा तो अपना वायदा पूरा कर रहा है। लेकिन हम अपना वायदा भूल गये हैं। यह निराकार परमात्मा तो अपने वायदे पर अटल हैं लेकिन यह जीव कितना अभागा है जो अपने किये हुऐ वायदे को भूल गया है। इसीलिए जीवन में सुख–शांति और अक्षय आनंद की प्राप्त नही होती।

साध–संगत जी आप हर रोज सिमरण बोलते हुए यह कहते हैं कि– "**गुरू पूरा, ज्ञान पूरा, निराकार भी**

पूरा है, पूरी तेरी साध-संगत, दरबार भी पूरा है।'' लेकिन मुझे हैरानी होती है कि आप फिर फिसल जाते हैं। आपको यह हर तरह से पूर्ण सतगुरू मिला है। सत्गुरू के द्वारा दिया हुआ ज्ञान भी बिल्कुल पूरा है। क्योंकि यह ज्ञान सभी तरह के विषयों के ज्ञान का सार है। सबसे अहमियत वाली बात यह है कि यह निर्गुण–निराकार परमात्मा भी अपने आप में बिल्कुल परिपूर्ण है। नाहि इस निराकार में से कुछ निकाला जा सकता है और नाहि कुछ इसमें जोड़ा जा सकता है। आप इसको भूल सकते है। लेकिन यह बहुत ही दयालु और कृपालु है यह आपको कभी भी नहीं भूलता। क्योंकि जीव भूलनहार है और यह बक्शणहार है। इसलिए जाति, धर्म, मजहबों के चक्कर में मत पड़ो। ज्ञान और विवेक से विचार करो कितनी देर लगी है आपको मुक्त होने के लिए और प्रभु से मिलने के लिए। पल–पल यह निराकार शक्ति हमारी संभाल करती है। यही हमारा सच्चा दोस्त और परम हितैषी है। जिन्होंने इस हस्ती को जान लिया और इसी को अपना आधार मान लिया तो समझो बात बन गई।

साध–संगत जी यह सब केवल सिद्धान्त मात्र ही नही बल्कि एक सच्चाई है। यह जीवन की सच्चाई है क्योंकि जीवन की ज्योति मनुष्य के जन्म लेने के समय से ही उसके साथ चलती है और हर मनुष्य को इस संगीतमय ज्योति और प्रभु के गुप्त भेदों को जान सकने का अधिकार दिया गया है। यह निर्गुण–निराकार परमात्मा ज्योतियों की ज्योति, स्वयं ज्योति स्वरूप, नूरों का नूर है। यह स्वयं ही

प्रकाशित होता हैं। इसलिए इस इशारे को समझो जिसके द्वारा आपको इस निराकार सर्वशक्तिमान परमात्मा का पलभर में खुली आँखों से दर्शन हो गया है। जिनके अंतःकरण में यह ज्ञान की ज्योति जग गई उनका जीवन वास्तव में सार्थक सिद्ध हो जायेगा। आपको बार–बार पुकार–2 कर कह रहा हूँ कि बस यह जो कुछ नही है यही सबकुछ है। इससे जुड़े रहो, इसको मन में अच्छी तरह बसा लो। जो इस निराकार परमात्मा को सत्गुरू की दया–मेहर से पहचान लेता अंततः इसी का हो जाता है।

साध–संगत जी यह हमेशा आपके अंग–संग है। जिसने इसको जान लिया और जानकर इसी में आत्म मस्त हो गया तो समझो वह काल के प्रबल प्रकोप से मुक्त हो जाता है। इसको जानकर तीन दुःख अज्ञानता, अहंम और जन्म–मरण समाप्त हो जाते हैं ज्ञान से अज्ञानता दूर हो जाती है क्योंकि ज्ञान अज्ञान को खा जाता है। अज्ञानता ही ज्ञान का भोजन है। जब यह जान लिया कि यह सब तन, मन, धन इस निराकार और सतगुरू का है तो अहम् दूर हो जाता है। जब निज स्वरूप आत्मा की पहचान हो गयी तो समझो जन्म–मरण समाप्त हो गया। इसीलिए इसी को जानो, इसी को मानो और सत्संग, सेवा, सिमरण करते हुए यही हो जाओ। सच्चाई भी यही है कि आप यही हो जिसका दर्शन आपको ज्ञान देते हुऐ कराया जाता है। बस महापुरूषो आज इतना ही बहुत है। साध–सगंत जी प्यार नाल आखो जी धन निराकार।

निराकारी जागृति मिशन की शुरूआत

परमपूजनीय हुजूर बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज के साथ गॉव बोह अम्बाला हरियाणा में संत समागम के दौरान हुई ज्ञान चर्चा

.....

23 दिसम्बर 2001 गॉव बोह अम्बाला हरियाणा में एक विशाल संत सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस संत समागम में पंजाब, हरियाणा, चण्डीगढ़, दिल्ली, यू.पी., हिमाचल आदि से आए श्रद्धालुओं ने संत महापुरूषों के प्रवचनों और भजनों का खूब आनंद लिया।

हुजूर महाराज के रूहानि सत्संग प्रवचनों से पहले परमपूजनीय सतगुरू बाबा महताब सिंह जी महाराज द्वारा रचित गीता विचार का एक अध्याय महापुरूष राज कुमार ने पढ़कर सभी श्रद्धालुओं को निहाल किया। बाबा जी ने सत्संग प्रवचनों में फरमाया कि **'जन्म मरण के मिटे अंदेशे साधु के पूर्ण उपदेशे'** बाबा जी ने जयघोष किया जो बोले तिस बलिहार, धन निराकार। महापुरूषो इस निरंतर परिवर्तनशील संसार में बार-बार जन्म मरण का सिलसिला तभी खत्म होगा जब कोई वक्त का हाकिम, ब्रह्मज्ञानी, निर्गुण-निराकार परमात्मा को जानने वाला परिपूर्ण सतगुरू मिलेगा। तभी मोक्ष-मुक्ति मिल सकती है जब हम सतगुरू के आदेश-उपदेश की पालना करेंगे, अराधना और साधना करेगें तभी हमारे अंर्तमन में चढ़ी जन्म-जन्मांतरों की मैल और कुसंस्कार उतरेंगे और मन निर्मल होगा।

सतगुरू के प्रति पूर्ण समर्पण और शरणागत भाव से आत्म विकास होगा, विवेक और ज्ञान से आत्म सिद्धि अर्थात स्वयं को निरखने-परखने की अंर्तनिहित शक्ति जागृत होगी। क्योंकि स्मरण जितना सघन होगा समर्पण उतना ही तीव्र होगा और चेतना के नवीन आयाम खुलेगें। जब सतगुरू कृपा से आत्म साक्षात्कार होगा तभी अपने आप की शुद्धि, मानसिक संतुलन, व्यवहार में श्रेष्ठता, शारीरिक क्रियाओं की सफाई, विचारों में उत्कृष्टता स्वतः ही आ जायेगी। बाबा जी ने कहा कि जिसकी आसक्ति सर्वथा समाप्त हो गयी हो, जो देह अभिमान से और मोह-ममता से मुक्त है, जिसका चित सदैव निर्गुण-निराकार परमात्मा के ज्ञान में स्थित है ऐसे आचरण करने वाले के सम्पूर्ण कर्मो का क्षय हो जाता है और निज स्वरूप आत्मा का बोध होने से जीवन धन्य हो जाता है।

हुजूर महाराज ने कहा कि हे दुनिया के लोगों भ्रम-भूलेखों में ना पड़ो बस इस ओत-प्रोत निर्गुण निराकार परमात्मा को जान लो, इसी का हमेशा सिमरण ध्यान करो। इसको जाने बिना सुख-शांति और मुक्ति नहीं मिल सकती। यह आत्मा इस निर्गुण-निराकार परमात्मा को मिलने के लिए वियोग में जन्म-जन्मातरों से तड़प रही है। जैसे रोगी को अगर पहनने के लिये नये-नये वस्त्र और खाने पीने के लिए स्वादिष्ट व्यजंन दे दिये जाये और रोग की दवाई ना दी जाये उसको कुछ भी अच्छा नहीं लगता जब तक उसका रोग दूर

नहीं होता। ठीक इसी तरह से जब तक आप इस अंग-संग निराकार परमात्मा को नहीं जान लेते तब तक कुछ भी करते रहो संतुष्टि नही मिलेगी। इसीलिए मैं बार-बार, पुकार-पुकार कर कह रहा हूँ कि हे दुनिया के लोगों आओ पूर्ण सतगुरू आ गया है। ब्रह्मज्ञान ले लो, इसको जान लो, इस निराकार परमात्मा की पहचान कर लो, इसका ध्यान करके यही हो जाओ क्योंकि तुम्हारा असली निज स्वरूप यही है। जैसे कोयला जब आग में होता है तब तक लाल रहता है और जब आग से बाहर निकाल दिया जाता है वह कोयला काला हो जाता है ठीक इसी प्रकार से जब आप इसको जानकर इसके साथ जुड़ जाओगे फिर आत्मा के इर्द-गिर्द कुसंस्कारों की कालिख और नहीं रहेगी।

सत्संग सम्पन्न होने के बाद बाबा जी महापुरूष बरखा राम के घर आराम फरमाने लगे। महापुरूष बरखा राम गॉव बोह की सगंत के प्रमुख थे और एक बहुत उच्चकोटि के महात्मा थे उनका निराकारी जागृति मिशन के प्रचार-प्रसार के लिए विशेष योगदान रहा। सभी महापुरूष सतगुरू भगवान के जागने का इंतजार कर रहे थे। अचानक बाबा जी गहरी नींद से जाग गये और सभी महापुरूष बाबा जी के समक्ष बैठ गये। सतगुरू महाराज ने कहा, स्वामी जी बलदेव नगर अम्बाला वाले राज कुमार महापुरूष को बुलाओ। बाबा जी ने महापुरूष राजकुमार राजू से कहा कि आप जी बताओ आज किस विषय पर चर्चा की जाये। महापुरूष राजकुमार जी ने विनती की, बाबा जी मेरे ख्याल में इसी

निर्गुण–निराकार परमात्मा की चर्चा की जाये ताकि महापुरूषों का ज्ञान और ध्यान ज्यादा से ज्यादा दृढ़ हो जाये। ठीक है सभी ध्यान से सुनो और जो आपको बताया जाता है इसको अपने जीवन में धारण करो तभी मेरे बताने और आपके सुनने का फायदा होगा।

सतगुरू भगवान ने ज्ञान चर्चा से पहले अरदास की **'धन धन मेरे सतगुरू पूर्णगुरू महताब, बार बार करूँ बंदगी नमस्कार हर बार'** साध–संगत जी प्यार नाल आखो धन निराकार' साद सगंत जी वास्तव में यह निराकार हस्ती और समय का हाकिम सतगुरू धन्य हैं मैं बलिहार जाता हूँ ऐसे तत्ववेत्ता सतगुरू पर जिसने हम सबको यह अमोलक ज्ञान की दात दी है। सारी सृष्टि में व्याप्त होने वाला और व्याप्त करने वाला यही है। इस निर्गुण–निराकार परमात्मा को जानने से नाम, रंग, रूप आकार–प्रकार तथा तमाम सांसारिक प्रपंच का बंधन टूट जाता है। त्रिगुणात्मक माया में बुरी तरह फॅसी आत्मा जीव दशा और जीव पना से मुक्त हो जाती है। कहने का भाव संसार के विषयों का लोप होने पर केवल यह अद्वैत स्वरूप, ज्ञान स्वरूप निर्गुण–निराकार परमात्मा ही बाकी रह जाता है।

महापुरूष विजेन्द्र, प्रमुख शालीमार कालोनी, अम्बाला शहर निराकारी जागृति मिशन के आजीवन सदस्य और बहुत ही विनम्र एवं सहज स्वभाव वाले उच्च कोटि के महापुरूष हैं। महापुरूष विजेन्द्र और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती

नीलम परिवार सहित निराकारी जागृति मिशन की तन मन और धन से सेवा के लिऐ पूर्ण समर्पित हैं। मिशन के सभी रूहानि सत्संगों में बढ़ चढ़कर योगदान देते हैं। महापुरूष विजेन्द्र जी ने हुजूर महाराज से विनती की, बाबा जी कुछ महापुरूषों ने ज्ञान भी प्राप्त कर लिया है, सत्संग में भी आते हैं, विचार भी करते हैं, बार–बार मत्था भी टेकते हैं लेकिन फिर भी उनके व्यवहार में बदलाव क्यों नही आता।

सतगुरू महाराज ने कुछ गंभीर होकर कहा कि हॉ विजेन्द्र जी आप बिल्कुल ठीक कह रहें है। देखो इसमें सतगुरू का और निराकार परमात्मा का कोई दोष नही है। जैसे मिश्री होती है, रूई होती है और पत्थर होता है। अगर इनको पानी में भिगोया जाये तो मिश्री तो पानी में घुल–मिलकर एकरूप हो जाती है, रूई पानी में भीग जाती है और पत्थर ज्यों का त्यों रहता है उसके ऊपर पानी का कोई ज्यादा प्रभाव नही पड़ता। पत्थर को जब पानी से बाहर निकाल देते है वह सूखा ही रहता है। ठीक इसी तरह से कुछ महापुरूष तो मिश्री की तरह होते हैं जो यह ज्ञान प्राप्त करके इसका निरंतर अभ्यास करके इसमें जीते जी एकरस हो जाते हैं। कुछ रूई की तरह होते है जो इसमें भीग तो जाते हैं अर्थात उनको ज्ञान तो होता है लेकिन सूक्ष्म रूप से अहम्भाव सताता रहता है और कुछ ऐसे भी होते है जिनके ऊपर पत्थर की तरह ज्यादा प्रभाव नही पड़ता।

हुजूर महाराज जी ने महापुरूष विजेन्द्र की

तरफ मुस्कराते हुए कहा कि महापुरूषो आपने मिश्री की तरह बनना हैं। आपके ऊपर इस निर्गुण–निराकार एवं सर्वाधार सर्वव्यापी परमात्मा और सतगुरू का हमेशा दया भरा हाथ रहेगा। बस विजेन्द्र बेटा घबराना मत कठिनाईयां जीवन में आती हैं और चली जाती है। संघर्ष करते रहो अंततः तुम्हारा कल्याण होगा। इस सर्वव्यापी, अजर, अमर, अविनाशी परमचैतन्य परमात्मा को हमेशा याद रखो, इसका निरंतर ध्यान रखो और जीते जी इसके साथ समरस हो जाओ यही मानव जीवन की सबसे सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि है और जीवन जीने की सहज कला है। बाबा जी ने कहा कि केवल झुकने से, बार–बार मत्था टेकने से, कुछ दान–पुण्य करने से काल की प्रबल माया से छुटकारा नही हो सकता। जैसे नीम का वृक्ष भी निबौलियॉं आने पर झुक जाता है लेकिन उसका फल अर्थात निबौली कड़वी होती है और आम का वृक्ष भी फल आने पर झुक जाता है लेकिन आम का फल मीठा होता है।

इसीलिए साद–संगत जी आप सबने नीम के वृक्ष की तरह नही बनना बल्कि आम के वृक्ष की तरह बनना है। मेरे कहने का भाव कि हम सब के अंदर एक दूसरे के प्रति प्रेम, प्रीती और प्यार, सत्कार, वक्त पड़े पर किसी की मदद करने की भावना, आपसी भाईचारा, अपने सतगुरू के प्रति अटूट आस्था और इस ज्ञान में दृढ़ता, पूर्ण निष्ठा होनी चाहिये। हुजूर महाराज ने नतमस्तक होते हुए कहा कि मैं

अपने सतगुरू महताब सिंह जी महाराज पर बलिहार जाता हूँ और अपने आपको बहुत ही भाग्यशाली समझता हूँ कि हमें सतगुरू की दया से यह निराकार का अमोलक ज्ञान मिला है। अब मुझे यह दिव्य दृष्टि मिल गयी है जब एकाग्रता से देखते हैं तो मुझे अमीर–गरीब, धनी–निर्धन, अच्छा–बुरा, अपना–पराया, स्त्री–पुरूष नही दिखाई देता। सब में निर्गुण–निराकार के ही दर्शन होते हैं। बस यही असलियत है और सुखमय जीवन जीने की सहज–सरल युक्ति है।

निर्रथक विचारों को भीतर प्रवेश न होने दो ज्यादा से ज्यादा समय प्रभु चिंतन में बिताओ तभी वास्तविकता सामने आएगी

निराकारी जागृति मिशन की शुरूआत

सत्गुरू बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज के साथ
कानपुर पनकी में सत्संग के दौरान हुई ज्ञान चर्चा

.....

कानपुर पनकी यू0पी0 5 अप्रैल 2002 डा. फूल चंद के निवास पर रूहानि सत्संग का आयोजन किया गया। इस सत्संग में मुझे भी शरीक होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सत्संग में सभी महापुरूषों, मातृशक्ति एवं बच्चों ने भजनों और प्रवचनों का खूब आनंद लिया।

हुजूर महाराज के प्रवचनों से पहले महापुरूष ओम प्रकाश सिंह चौहान जी ने पावन वाणी का शब्द पढ़कर संगत को निहाल किया

'सच्चा साहिब एक तू जिनि सचो सचु बरताइया,
जिस तू देहि तिसु मिले सचु तो जिनी सचु
कमाइया, सतिगुरू मिलिअै सचु पाइया जिनके
हिरदै सचु बसाइया, मूरख सचू न जाणनी
मनमुखी जन्म गवाइया,
विचि दुनियाँ काहे आइया'

सत्गुरू महाराज ने अपने रूहानी प्रवचनों में फरमाया कि धन–धन मेरे सतगुरू महताब तू कितना महान है, किन शब्दों से तेरा धन्यवाद कँरू। वास्तव में सतगुरू ऐसा ही होना चाहिये जो जीवन का पूर्णरूप से रूपांतरण कर दे।

बाबा जी ने दोनो हाथ जोड़कर, नतमस्तक होकर अरदास की जो बोले तिस बलिहार, धन निराकार'

बाबा जी ने मेरी तरफ इशारा करते हुऐ कहा कि स्वामी जी आज जहॉ यह प्रभु का गुणगान हो रहा है यह महापुरूषों का परिवार हैं। डा. फूल चंद जी एक बहुत ही अच्छे पढ़े-लिखे विद्वान और परोपकरी स्वभाव वाले उच्चकोटि के महापुरूष हैं। एक डाक्टर होने के नाते हमेशा समाज की सेवा में लगे रहते हैं। मेरे स्वास्थ्य का हमेशा ध्यान रखते है। मानवता, परोपकार, आपसी भाईचारे की भावना इनमें बहुत है। जब भी मैं इनको याद करता हूँ डा. फूल चंद तुरंत सेवा में हाजिर हो जाते हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि ऐसे महापुरूषों के अथक प्रयास से निराकारी जागृति मिशन की विचारधारा का खूब प्रचार-प्रसार होगा। जब भी इस इलाके में कोई सत्संग होता है तो डा. फूल चंद और उसके सारे परिवार का विशेष योगदान होता है।

हुजूर महाराज ने रूहानी ज्ञान चर्चा जारी रखते हुऐ आगे कहा कि महापुरूषो आप वाकई सौभाग्य वाले हो क्योंकि आपको यह निर्मल, तटस्थ और अपने आप मे शुद्ध, बुद्ध, मुक्त एवं परमचैतन्य ज्ञान मिला है। ध्यान से सुनो हमारे रहबरों और पीर पैगंबरों की पावन वाणी पुकार-2 कर कह रही कि यह हमारे अंग-संग निर्गुण-निराकार परमात्मा हमेशा सच है। यह पहले भी सच था, वर्तमान में भी सच है और आगे भविष्य में भी अकाट्य सच रहेगा। इसके हुक्म से जो कुछ भी होता है बिल्कुल ठीक होता है। यह निराकार हस्ती वक्तगुरू आत्मवेता महापुरूषों के रूप मे समय-समय

के अनुसार प्रकट होती है। जब यह निराकार प्रियतम परमात्मा दयालु होता है साधक जो भी चाहे प्राप्त कर सकता है। बस इसको रिझाना है, इसके ऊपर अपना सर्वस्व कुर्बान कर देना है। इसके आगे दोनो हाथ खड़े करके पूर्णरूप से समर्पित हो जाना है।

हमेशा इसके साक्षात स्वरूप वक्त के सतगुरू की रजा में रहना ही भक्ति मार्ग की पराकाष्ठा और अध्यात्म का सार है। अगर एक हाथ संसार के ऐशो-आराम, अंहता, ममता, तृष्णा की तरफ रहेगा और दूसरा हाथ सतगुरू की तरफ रहेगा फिर सफलता नही मिलेगी। ऐसी स्थिति को ही दोजक की स्थिति कहा जाता है। ऐसी स्थिति वाला इंसान ना इधर का रहता है और नाहि उधर का। जैसे भगवान कृष्ण ने गीता में पावन आत्मिक उपदेश देते हुऐ कहा कि हे धर्नुधर अर्जुन अगर तू मुझे मिलना चाहता है तो सबसे पहले मेरी प्रकृति से प्यार कर और सबमें मुझ अजर, अमर, अविनाशी निर्गुण-निराकार स्वरूप को और मुझमें सब को समभाव से एक रस जान। आगे हुजूर महाराज जी ने रूहानी ज्ञान चर्चा को जारी रखते हुऐ बड़ी ही ओजस्वी वाणी में दूसरी मिशाल देते हुऐ कहा कि-

हे इंसान जब तक तू खुदा के बंदों को खुश नही करेगा तब तक तू मालिकेकुल निर्गुण-निराकार परमात्मा की रजा की प्राप्ति नही कर सकेगा। हे इंसान अगर तू चाहता है कि मालिक तुझ पर

मेहरबान हो तो खुदा की खिलकत के साथ प्यार कर।

साध–संगत जी इस वास्तविकता की पहचान करने के लिये परिपूर्ण तत्वदर्शी वक्त गुरू का होना अति जरूरी है।

सिर्फ ब्रह्मज्ञानी संत महापुरूष ही इस निराकार परमात्मा का पलभर में खुली आँखों से दर्शन-दीदार करा सकता है।

इसके अलावा दूसरा कोई जरिया है ही नही। जैसे सब की प्यास पानी से ही बुझती है, ठीक इसी प्रकार सबकी मुक्ति भी इसी निराकार परमात्मा को जानने और इसी का निरंतर ध्यान करने से ही होगी। जैसे सभी के लिऐ हवा, पानी, अग्नि, सूर्य, चंद्रमा एक बराबर है ठीक इसी तरह से मोक्ष–मुक्ति के लिए निज स्वरूप आत्मा का ज्ञान भी एक ही है। जैसे तेज बुखार का इलाज करने के लिऐ एक ही औषधि का इस्तेमाल किया जाता है चाहे मरीज अमीर हो गरीब हो, किसी भी धर्म को मानने वाला हो, किसी भी जाति में पैदा हुआ हो, चाहे आस्तिक हो या नास्तिक हो, ज्ञानी हो अज्ञानी हो। ठीक इसी तरह से विषयों विकारों और जन्म–मरण से छुटकारा पाने के लिऐ भी सबके लिऐ एक ही ब्रह्मज्ञान रूपी औषधि है।

परमात्मा कोई दस, बीस, पचास, सौ नही हैं सारी सृष्टि में ओत-प्रोत यह निर्गुण-निराकार

सत्ता अनादि काल से एक ही है और भविष्य में भी एक ही रहेगी।

साध–संगत जी यही आपका निज और असली स्वरूप है। यह अंश और अंशी एक ही है अर्थात आत्मा और परमात्मा एक ही है। इसके अनेकों नाम हमने अपने आप ही रखे हैं। अगर ज्ञान की दृष्टि और विवेक से विचार किया जाये तो यही निष्कर्ष निकलेगा कि यह निर्गुण–निराकार अद्वैत स्वरूप और अनामी है अर्थात इसका कोई विशेष नाम नही है। जाकि रही भावना जैसी प्रभु मूरत देखी तिन तैसी। जब इंसान चतुराई और भेदभाव को छोड़कर आर्तभाव से इस निर्गुण–निराकार परमचैतन्य परमात्मा को पुकारेगा यह उसकी पुकार अवश्य सुनेगा। लेकिन अज्ञानता वश मनमुख इंसान यह हीरा सा जन्म व्यर्थ में ही कौड़ियों के भाव लुटा देता है और अंत में हाथ मलता रह जाता है। अगर बहुत कुछ जानने के बाद भी अपने निज स्वरूप को नही जाना तो संसार का आवागमन, जन्म–मरण का सिलसिला खत्म नही होगा। अगर यह है तो सबकुछ है और अगर यह निर्गुण–निराकार परमसत्ता नही है तो समझो कुछ भी नही है। इसी के होने से सबकुछ है। इसी लिए पुण्य आत्माओं इसी एक को जानो इसकी पहचान करके, सब में इसको और इसी में सबको मानो। सब तरह के भेदभाव छोड़कर प्रेम–प्रीती की भावना से ओत–प्रोत होकर एक हो जाओ। यही मनुष्य जीवन का असली उद्देश्य है।

तोपखाना, अम्बाला कैन्ट में ज्ञान चर्चा सुनने के लिए उमड़ता जन सैलाब

हुजूर बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज के साथ सत्संग के दौरान अम्बाला कैंट, तोपखाना, हरियाणा में हुई ज्ञान चर्चा

.....

अम्बाला कैंट तोपखाना 7 मई 2002 महापुरूष कमल जी की देख–रेख में रूहानी सत्संग का आयोजन किया गया। आस–पास के श्रद्धालुओं ने इस सत्संग में खूब बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। महापुरूष कमल जी निराकारी जागृति मिशन के महासचिव भी हैं और पूरी तरह से मिशन को समर्पित हैं। जब भी हुजूर महाराज कानपुर से हरियाणा में सत्संग फरमाने आते थे कमल जी के घर जरूर जाते थे।

भाई साहब कमल जी का पूरा परिवार शुरू से ही सतगुरू महाराज का बहुत ही अच्छा श्रद्धालु है। जब भी मिशन का कोई संत समागम होता है तो महापुरूष कमल जी और उनकी धर्म पत्नी श्रीमती रमा जी का विशेष योगदान रहता है। भाई साहब का पूरा परिवार तन, मन और धन से साध–संगत की खूब सेवा करता है। यह परिवार हुजूर महाराज के बहुत ही नजदीक रहा है और इस परिवार के उपर सतगुरू महाराज का दया भरा हाथ हमेशा ही रहा है।

सत्संग में महापुरूषों और मातृशक्ति ने भजनों और शब्द वाणी से साध–संगत को खूब निहाल किया। हुजूर महाराज के रूहानी प्रवचनों से पहले महापुरूष सपट्टर सिंह जी ने पावन वाणी का शब्द पढ़कर साध–संगत को निहाल

किया।

एको सिमरो नानका जो जल थल रहा समाये,
दूजा काहे सिमरिये जो जमे ते मरि जाय। जिसके
अंतर बसै निरंकार, तिसकी सीख तरे संसार,
बिन सतगुरू किनै न पायो, बिन सतगुरू किनै ना
पाया, सतगुरू विचि आप रखिउन करि परगट
अखि सुणइया। करन कारन प्रभु एक है दूसर
नाहि कोए, नानक तिस बलिहारणै जलि थलि
मही अलि सोए।

सत्गुरू महाराज ने कहा साध-संगत जी, जो बोले तिस बलिहार, धन निराकार। जरा विवेक और ज्ञान की दृष्टि से देखो और विचार करो कि यह निर्गुण-निराकार एवं सर्वाधार परमात्मा वाकई सृष्टि के तमाम कण-कण में समाया हुआ है। ऐसी कोई भी जगह नही है जहॉ यह ना हो। सबकुछ इसी परमसत्ता के बीच में स्थिर है। यह निराकार सर्वशक्तिमान परमात्मा जल, थल में समाया है। पूर्व से पश्चिम, उतर से दक्षिण, आकाश से पाताल, जड़ चेतन में सभी जगह समभाव से विद्यमान है। लेकिन इसको केवल वक्त के हाकिम आत्मवेत्ता सतगुरू द्वारा प्रदत्त ज्ञान चक्षु से ही देखा जा सकता है इन चर्म नेत्रों से इसका दर्शन कभी भी नहीं हो सकता है। इन सांसारिक चर्म नेत्रों से तो सिर्फ यह नश्वर एवं परिवर्तनशील संसार ही दिखता है।

साध-सगंत जी जब इस आत्म ज्ञान का रंग

अंतःकरण मे पूरी तरह से चढ़ जायेगा तो इस निराकार परम सत्ता का दर्शन सब जगह होगा। अगर गहराई और ज्ञान की दृष्टि से देखा जाये तो ऐसा एहसास होगा कि यह आकाश से पार एवं परे है। बस इसी को सब में और सब को इसी में जानो इसके सिवाय दूसरा है ही नही। यही अनेकों आकारों-प्रकारों में तमाम सृष्टि के प्रपंच में व्याप्त है। इसी का ध्यान, इसी निर्गुण-निराकार का हर समय सिमरण। अगर इसके सिवाय किसी दूसरी चीज का ध्यान आता है तो बस यही अज्ञानता और नासमझी है। क्योंकि अगर इस एक से दूसरे का ध्यान आता है, फिर तीसरे का, चौथे का और इसी तरह से किसी पाँचवीं चीज का ध्यान आयेगा। इस तरह से एकता से अनेकता में चला गया यह अभागा जीव। एक दिन फिर ऐसा आता है कि बस अनेकता में ही उलझ कर रह जायेगा, और अपने असली स्वरूप का ध्यान लोप हो जाता है। ऐसी स्थिति में अपने असली घर अर्थात आत्म बोध को वापस आना बड़ा ही मुश्किल हो जाता है। इसीलिए इसको हमेशा याद रखो और अपने आप को यही निर्गुण-निराकार रूप समझो, इसी में जीते जी आत्म स्थित हो जाओ।

हुजूर महाराज ने आगे कहा कि महापुरूषो जिसके अंदर यह शब्द स्वरूपी हर जगह रमा हुआ राम प्रकट हो जाता है वह इसे भली-भांति जान लेता है कि यह निराकार एवं सर्वाधार अजर, अमर, अविनाशी परम सत्ता हमेशा मेरे अंग-संग है। ऐसा संत महापुरूष जिसके अंदर यह निराकार

परमात्मा प्रकट हो उसकी चरण–शरण में जाकर जो भी प्राणी इसको जान–पहचान लेता है वह भी उसी सद्गति को प्राप्त होता है। महापुरूषो काश कि संसार के सभी लोगों को यह ज्ञान एवं बोध हो जाये कि हम सब का प्रियतम पिता यही निर्गुण–निराकार परमात्मा है। यही सब का प्राण दाता है। लौकिक और अलौकिक जगत के सभी सुख आराम और वैभव देने वाला भी यही है। इसी को सर्वेसर्वा मानकर इसी की धुन में मस्त रहो। जब इस दुनिया में आप और मैं नही थे तब भी इस दुनिया के सभी काम काज इसी की दया से हो रहे थे।

इसीलिए साध–संगत जी अपने अंदर से कर्ता भाव कि मैं कर रहा हूँ यह बिल्कुल मिटा दो। जब कर्ताभाव मिटेगा तभी वास्तविकता सामने आयेगी। क्योंकि करने कराने वाला सिर्फ यही निर्गुण–निराकार परमात्मा है। इसके अलावा दूसरा है ही नही। यह अपने आप में बिल्कुल परमशांत, परमचैतन्य, अद्वैत स्वरूप एवं तटस्थ है। इसके होने का कभी भी अभाव नही होता और जो परिवर्तनशील प्रकृति है इसका कभी भाव नही होता। क्योंकि यह प्रकृति जो इसकी एक परछाई मात्र है। यह संसार कुछ भी नही है यह कोरा भ्रम, स्वप्न मात्र मायाजनित जाल है। संसार की इस निराकार परमात्मा के सामने कोई सत्ता नही है। महापुरूषो इस परिपूर्णता को जानकर, आत्मा में तृप्त एवं आत्मप्रज्ञ हो जाओ। क्योंकि संसार से सर्वथा भिन्न आप एक चेतन सत्ता

हो। स्वयं को चेतन जानना ही परम शांति का आधार है।

इस निर्गुण–निराकार को जानने के बाद और कुछ जानने की गुंजाइश ही नही रह जाती। यही कर्ता, धर्ता और संहार कर्ता है। आप इस परिवर्तनशील संसार को अपना समझते हो यह सबसे बड़ा भटकाव और छलावा है यह कभी किसी का नही हुआ और नाहि किसी का होगा यह सभी वेदों–शास्त्रों का सार और ब्रह्मज्ञानी महापुरूषों का अनुभव है। आप यह तन, मन, बुद्धि, चित और अंहकार नहीं हो, इंद्रियॉं, ज्ञानेद्रियॉं और कर्म इंद्रियॉं भी नहीं हो, अंतःकरण भी नहीं हो। इन सबको प्रकाश देने वाली, सबकी द्रष्टा, अजर, अमर, अनादि, अव्यय, सनातन–पुरातन हमेशा कायम–दायम और बिल्कुल कूटस्थ रहने वाली पावन पवित्र आत्मा हो। हमेशा इसके ऊपर बलिहार जाओ, इसके साक्षात स्वरूप सतगुरू की रजा में रहो। क्योंकि साकार और निराकार मे कोई भी भेद नहीं है। जैसे हुक्म मुझे सत्गुरू के रूप में निराकार परमात्मा का होता है दास आपको अर्ज कर देता है। अब करना तो आप ने ही है। जैसे–2 आप इस निराकार प्रियतम परमात्मा और इसके साक्षात स्वरूप तत्वदर्शी सतगुरू को समर्पित हो जाओगे तो यह निराकार परमेश्वर भी आपको सदा अंग–संग होने का एहसास करा देगा।

साध–संगत जी जब सभी आग्रहों–विग्रहों को छोड़कर यथार्थ तत्व को सतगुरू की दया–मेहर से जान

लिया और इसको जान-पहचानकर इसमें स्थिरता प्राप्त कर ली फिर ऐसे ज्ञानवान महापुरूष के ऊपर कर्म का कोई भी सिद्धांत लागू नही होता। वह समभाव से सबकुछ करता हुआ भी कुछ नही करता और कुछ नही करता हुआ भी सबकुछ करता है। महापुरूषो इसकी महिमा अपरम्पार है इसका आंकलन करना मुश्किल ही नही बल्कि असंभव है क्योंकि कोई आज तक ऐसा पैमाना नही बना जिससे नाप कर बता दिया जाये कि यह इतना बड़ा है। इस निर्गुण-निराकार परमात्मा की तुलना संसार की किसी चीज से नही की जा सकती। इसमें कोई भी कमी नहीं है, यह हर तरह से परिपूर्ण और भरपूर है। यह तीनो कालों में सच था, सच है और आगे भविष्य में भी सच रहेगा।

इसीलिए महापुरूषो इस काल की त्रिगुणात्मक माया से सजग और सचेत रहो। जैसे सोया हुआ मनुष्य जब तक नींद से जागता नही है तब तक उसको स्वप्न सच्चा लगता है। जैसे दीपक के प्रकाश में खोई हुई वस्तु ढूँढ ली जाती है। ठीक इसी प्रकार से जब अज्ञानता रूपी सपना टूट जायेगा और ज्ञान रूपी सवेरा हो जायेगा और सबकुछ स्पष्ट नजर आयेगा। जैसे दर्पण रगड़ने से साफ हो जाता है उसके ऊपर जमी धूल साफ हो जाती है। इसी तरह से ज्ञान लेने के बाद सत्संग, सेवा और सिमरण से ऑखों के आगे से अज्ञानता का पर्दा हट जायेगा और इस प्रेम एवं ज्ञान स्वरूप परमात्मा का दर्शन पलभर में खुली ऑखों से हो जायेगा। जब

नजर साफ होती है तो सबकुछ साफ नजर आता है। इस निज स्वः स्वरूप आत्मा के ज्ञान का उदय होते ही संसार के सब प्रकार के विषयों का ज्ञान इसी में ही विलीन हो जाता है।

बस साध-संगत जी आज जरूरत है इस अमोलक ज्ञान को आत्मसात करने की और इस ज्ञान का अनुसरण करने की। सब जगह व्याप्त होने वाला और व्याप्त करने वाला यही निर्गुण-निराकार परमात्मा है। इस आत्मतत्व की विस्मृति अर्थात इसको भूल जाना ही अज्ञानता है और यही अज्ञानता फिर संसार में बार-बार जन्म-मरण के बंधन और आसक्ति का कारण बनती है। जैसे महापुरूषों ने कहा कि जहॉ बंधन हैं वहॉ मुक्ति नही और जहॉ मुक्ति और विरक्ति है वहॉ बंधन नही। इसीलिए निज स्वरूप आत्मा को जानकर, आत्मा में ही रमण करके आत्म स्वरूप में एकमिक अर्थात समभाव से एकरूप हो जाना ही मोक्ष कहलाता हैं। बस महापुरूषो आज के लिऐ इतना ही काफी है। साध-संगत जी सब प्यार नाल आखो धन निराकार जी।

परमपूजनीय सत्गुरू बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज के साथ

बलदेव नगर अम्बाला हरियाणा में सत्संग के दौरान हुई ज्ञान चर्चा

.....

15 जुलाई 2002: बलदेव नगर अम्बाला हरियाणा में गुरू पूर्णिमा के पावन पर्व के उपलक्ष्य पर बलदेव नगर अम्बाला के प्रमुख महापुरूष चौधरी पवन कुमार के निवास पर एक विराट रूहानी संत सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस समागम में भी पंजाब, हरियाण, दिल्ली, यू.पी. से भारी सख्या में महापुरूषों ने हिस्सा लिया। सत्संग शाम के समय आयोजित किया गया। मौसम भी बहुत ही सुहावना था। महापुरूषों, मातृशक्ति और बच्चों ने सत्संग का खूब आनंद लिया।

हुजूर महाराज के प्रवचनों से पहले पावन ईलाही वाणी का शब्द महापुरूष पवन जी ने पढ़कर साद सगंत को निहाल किया।

'साजनड़ा मेरा साजनड़ा निकट खलोइडा मेरा
साजनड़ा, जानीअड़ा हरि जानिअड़ नैण
अलोइआड़ा हरि जानीअड़ा, नैण अलोइआ,
घट-घट सोइया अति अमृत प्रिय गूड़ा, नाल
होवंदा लहि ना सकंदा सुआउ न जाने मूडा,
माइया मदि माता होछी बाता मिलण न जाई भरम

घड़ा, कह नानक गुर बिन नाही सुझे हरि साजन सभके निकट खड़ा'

हुजूर महाराज ने जयघोष किया 'जो बोले तिस बलिहार, धन निराकार, साद–सगंत जी प्यार नाल आखो धन निराकार धन–धन मेरे सतगुरू आप वाकई ही धन्य हो। तूने अनहोनी को भी होनी कर दिया जो बहुत ही असंभव था ऐसे कठिन काम को पलभर में करके दिखा दिया। जो मैंने कभी सपने में भी नही सोचा था ऐसी महान हस्ती अर्थात इस निर्गुण–निराकार परमात्मा का आपने पलभर में खुली ऑखों से दर्शन करा दिया। महापुरूषों

यह निर्गुण-निराकार हस्ती हर समय हमारे साथ-साथ है जैसे हमारे साथ हमारी परछाई चलती है ठीक इसी तरह से यह निराकार प्रियतम परमात्मा भी हमारे अंदर-बाहर सृष्टि के रोम-रोम में समाया है।

सत्गुरू में और इसमें कोई फर्क नही। यही निर्गुण–निराकार समय के अनुसार हमें चेताने और काल की विकट त्रिगुणात्मक माया के अज्ञान और अंधकार से छुटकारा दिलाने के लिये सतगुरू के माध्यम से संसार में प्रकट होता है।

हुजूर बाबा लक्षमण सिंह जी महाराज बहुत स्पष्टवादी तथा बिल्कुल निर्भीक और महान व्यक्तित्व के धनी थे। जो कुछ भी कहना होता था सब के सामने कह देते

थे। हुजूर महाराज जी का सतगुरू देव महताब सिंह जी महाराज के प्रति अटूट प्रेम था। हमेशा उनका ही गुणगान करते रहते थे। बाबा जी ने रूहानी प्रवचनों को जारी रखते हुए आगे फरमाया कि–

आओ दुनिया के लोगो भ्रम-भूलेखों को छोड़कर इस अडोल परमसत्ता निर्गुण-निराकार परमात्मा को जान लो। संसार में अगर जानने और जानकर मानने योग्य कोई हस्ती है तो बस यही निर्गुण-निराकार हस्ती है। यह अब मेरी ऑखों में बस गया है। मुझे आठो पहर बारह याम, दिन-रात, पल-पल इसी की याद आती रहती है और इसी का ध्यान रहता है।

यह निराकार प्रियतम परमात्मा सृष्टि के सभी घटों अर्थात चौरासी लाख योनियों अंडज, जेरज, सेतज, उद्भुज चारों खानियों की जीवो में तथा जड़–चेतन में ओत–प्रोत है।

सत्गुरू देव जी महाराज ने आगे अपनी ज्ञानचर्चा को जारी रखते हुए फरमाया कि हम सब का आधार और सहारा यही हैं। इसी के होने से हम सब जिंदा है। यही निर्गुण–निराकार परमात्मा हम सब का सच्चा दोस्त और परम हितैषी है। साद–सगंत जी दुनिया की शान–शौकत, यश–मान–कीर्ति, चल और अचल सम्पदा, रिश्ते–नाते हमेशा रहने वाले नहीं है। ये सब स्वार्थ पर ही आधारित है।

लेकिन यह सर्वशक्तिमान, सबकुछ करने में समरथ निराकार प्रियतम परमात्मा ही अंत में हमारा सहाई होगा। इसको कोई आपसे अलग नहीं कर सकता।

यह हमेशा था, वर्तमान में भी है, आगे भविष्य में भी ज्यों का त्यों रहेगा। इसकी पहचान कर लो, इसी का हमेशा ध्यान करते रहो, आपका ध्यान इतना गहरा और भावातीत हो कि अंत समय इसके सिवाय कोई दूसरा याद ही ना आये। इसका ध्यान उठते-बैठते, चलते-फिरते, सोते-जागते, खाते-पीते हमेशा करते रहो और जीते जी यही हो जाओ।

ध्यान करो कि हम मात्र यह पंचभौतिक शरीर नहीं है बल्कि हम इस शरीर के अंदर रहने वाली पावन पवित्र आत्मा है।

महापुरूषों यह गुरमतलाईन का बहुत ही बड़ा रहस्य है कि–

अनेकों प्रकार की कठोर तपस्या करके, घर-बार छोड़कर जगंलों मे जाकर समाधि लगाकर, मात्र बाहरमुखि पूजा-अर्चना, वेद-कतेब आदि का गहनतम पठन-पाठन करके, दान-पुण्य, व्रत-उपवास करके, इस विश्वस्वरूप निर्गुण-निराकार परमात्मा को नही जाना जा सकता।

साध–सगंत जी इस महान सूत्र को गॉठ बॉध लो

कि इस निराकार हस्ती को सिर्फ समय के हाकिम, वक्तगुरू आत्मदर्शी महापुरूष की दया–मेहर से आमने–सामने बैठकर पलभर में खुली ऑखों से देखा जा सकता है और जाना जा सकता है। महापुरूषों गुरू और सतगुरू में यही फर्क होता है कि गुरू हमेशा बाहरमूखि कर्मो–धर्मो, अनाप–शनाप धार्मिक कृत्यों पर ज्यादा जोर देता है और अपने साथ जोड़ता है। आप देख रहें है कि इस अघोर कलयुग में स्वयंभू अर्थात सैल्फ स्टाईलड गुरूओं की कोई कमी नहीं है एक बाढ़ सी आई हुई है। एक सामान्य व्यक्ति के लिए यह फैसला करना मुश्किल ही नहीं बल्कि नामुमकिन है कि किस गुरू की शरण में रहकर जन्म–मरण और संसार के आवागमन का गोरख धंधा समाप्त हो सकता है। बस इसी अंसमजस में हीरा सा मनुष्य जन्म कौड़ियो के भाव व्यर्थ में लुट जाता है।

आज के भौतिकवाद एवं पदार्थवाद के चलते दौर में धर्म दर्शन की बजाये प्रदर्शन बन गया है। हर गली कूचे एवं चौराहे पर बहुत ही आकर्षित और प्रभावित करने वाले लच्छेदार वेदों–शास्त्रों पर आधारित कथा वार्ताऐं और ज्ञान गोष्ठियॉं सुनने को मिलेंगी। यह सदेंश और उपदेश देने वाला हर गुरू यह दावा करता है कि बस और सिर्फ बस वह अपने आप में परिपूर्ण है। लेकिन महापुरूषो सावधान रहने की जरूरत है और वास्तविकता की खोज करने में अपना जीवन लगाना है। महापुरूषों दास ने भी इस मुकाम पर

पहुँचने के लिए अनेको धर्म गुरूओं से इस विषय पर ज्ञान चर्चा की। जिनका आज के समय में चारों दिशाओं में खूब बोल–बाला है। जिनके पास बहुत ही सम्पति है, लाखों लोग जिनको सलाम करते हैं और आगे–पीछे चक्कर काटते हैं।

महापुरूषो दास ने अंत में यही पाया कि ये सब जड़ माया के दीवाने और सिर्फ वाहवाही लूटने के सिवाय तथा संसार में यश–मान कीर्ति प्राप्त करने के अलावा कुछ भी नहीं है। महापुरूषो दास सद्गुरूदेव महताब सिंह जी महाराज पर बार–2 बलिहार जाता है और ऐसी महान विभूति को हमेशा नतमस्तक रहेगा जिसने मेरी कोई जाति, धर्म, वर्ण और किसी प्रकार की पहचान नही पूछी। जैसे ही मैं सदगुरू शहनशाह हुजूर महताब सिंह महाराज की पावन चरण–शरण में गया उनको नतमस्क हुआ तो मेरे कृपालु और बहुत ही दयालु सतगुरू ने अपनी दया मेहर से मात्र एक पलभर में मुझे इस निर्गुण–निराकार परमात्मा का खुली ऑखों से दर्शन दीदार कराकर मेरी जन्म–जन्मातरों की परमात्मा से मिलने की तीव्र जिज्ञासा को शांत कर दिया।

महापुरूषो यह कही सुनी बात और कोई अतिश्योक्ति नही बल्कि सोलह आने सच है और मेरा निजी अनुभव है कि सतगुरू हमेशा देता है लेता नही। आत्मदर्शी सतगुरू की जिसके उपर दया–मेहर हो तो उसके जीवन की हवाऐं और फिजांऐ बदल जाती है। महापुरूषो इतिहास इस बात का गवाह है कि –

जो भी वक्त के तत्ववेत्ता सत्गुरू की तन, मन, वचन और कर्म से पावन चरण-शरण में गया तो जीते जी ऐसा ज्ञानवान महापुरूष इस निर्गुण-निराकार एवं सर्वाधार परमात्मा के साथ एकाकार हो गया और मोक्ष-मुक्ति को प्राप्त हो गया। सद्गुरू हमेशा अपने साथ नहीं बल्कि इस निर्गुण-निराकार परमात्मा की पहचान कराकर इसी का ध्यान करने का उपदेश देता है और हमेशा के लिऐ जीते जी इसी के साथ जोड़ देता है। वास्तव में यही वास्तविकता है। इसी लिए एक को जानो, एक को मानो, एक हो जाओ।

सत्संग सम्पन होने के बाद हुजूर महाराज ने कुछ समय महापुरूष चौ.पवन कुमार के निवास स्थान पर आराम किया। संगरूर की संगत को रात को ही वापिस जाना था। महापुरूषों ने सतगुरू महाराज को जगा दिया। संगरूर वाले महापुरूषों ने बाबा जी को धन निराकार कहा और वापिस संगरूर चले गये। हुजूर महाराज बहुत ही आनंद की मुद्रा में बैठे थे। हुजूर महाराज जी ने मुझे बुलाया और कहा स्वामी जी अब आपने मुझे जगा दिया है मुझे अब नींद नहीं आयेगी। मैंने सतगुरू भगवान से विनती की हुजूर महाराज काफी महापुरूष अभी यहीं ठहरे हुए हैं। कुछ महापुरूष आपसे मिलना भी चाहते हैं। बहुत अच्छा बुलाओ जो भी मिलना चाहते हैं। अगर मेरी बताई हुई बात से किसी का जीवन सुधरता है तो मुझे बहुत खुशी होगी। सभी महापुरूष

और मातृशक्ति तथा बच्चे हुजूर महाराज जी के समक्ष बैठ गये और हुजूर महाराज ने ज्ञान चर्चा शुरू कर दी। सभी महापुरूषों ने अपने-अपने सवाल बाबा जी से पूछे और सत्गुरू महाराज ने सभी के सवालों के जबाब बहुत ही सरल और सहज भाषा में समझाये। बाबा जी ने कहा चौधरी साहब आप भी कुछ पूछिये। महापुरूष पवन कुमार ने बाबा जी से विनती की, हुजूर महाराज आज मुझे बहुत खुशी हो रही है कि आप जैसे सत्गुरू भगवान की पावन चरण धूलि मुझे मिली है। वाकई ही मैं बहुत ही खुशनसीब हूँ। मैं बहुत दिनों से मन ही मन सोचता था कि आप कभी यहॉ बलदेव नगर अम्बाला में भी दर्शन देंगें। हुजूर महाराज आज कृपा करके सूरत शब्द योग, ज्योति-नाद एवं शब्दधुन के बारे में ही चर्चा की जाये ताकि सभी महापुरूषों का ज्ञान तथा ध्यान और ज्यादा पक्का हो जाये। बाबा जी ने कहा ठीक है, चौधरी साहब आपने बहुत ही अच्छा सवाल पूछा है। ऐसे महापुरूषों के दर्शन करके मुझे बहुत ही आनंद मिलता है। क्योंकि ज्यादातर लोग दुनियावी बातें ज्यादा करतें है और लौकिक जगत की नाश्वान चीजें ही मागते हैं। आपने जो प्रश्न पूछा है निश्चय ही इससे सभी को आध्यात्मिक डगर पर चलने की ज्यादा से ज्यादा प्रेरणा मिलेगी।

महापुरूषो ध्यान से सुनो आज की ज्ञान चर्चा निश्चय ही आपके जीवन में काम आयेगी।

संत मार्ग में सबसे पहले वर्णात्मक नाम उसके

बाद यह धूनात्मक नाम आता है। इसको सूरत शब्द योग भी कहा जाता है। जब साधक अंर्तमूखी होकर परमेश्वर का ध्यान करता है। साधना करते हुए वर्णात्मक नाम का नित्यप्रति सिमरण करते हुए इस धूनात्मक नाम अर्थात अनहद शब्द, शब्दधुन को जागृत कर लेता है। जब यह शब्दधुन हमारे अंदर प्रकट हो जाती है तो समझो आप अपने अंदर निर्गुण-निराकार परमात्मा के बहुत ही नजदीक है।

साध-सगंत जी यह शब्दधुन एक बहुत ही आलौकिक संगीतमयी सुरीली आवाज है जो धुरधाम, अमर लोक, निजघर, आत्मलोक से सीधी परमात्मा का आत्मा के लिए अमर संदेश लेकर आ रही है। यह शब्दधुन हमारी आत्मा के लिए निर्गुण-निराकार परमात्मा का एक इलाही फरमान है, परमात्मा के प्यार का आत्मा के लिए एक संदेश है।

महापुरूष पवन कुमार ने हुजूर महाराज से विनती की सतगुरू महाराज क्या इस शब्दधुन की दुनिया के किसी साज-आवाज से तुलना की जा सकती है। महाराज जी ने कहा कि वैसे तो किसी से भी इस अनहद शब्द की तुलना नहीं की जा सकती। लेकिन साधक को समझाने के लिए उदाहरण के तौर पर लौकिक जगत के संगीत के साज आदि और संसार की चीजों के साथ तुलना करके समझाया

जाता है कि यह शब्दधुन ऐसी होती है। यह अनहद शब्द हमेशा समरस और एक जैसा रहता है। यह हमारी आत्मा की जान है और इलाही फरमान है।

इसी शब्दधुन की मदद से हमारे शरीर में फैली चेतना एक जगह अर्थात तीसरे तिल में इक्टठी होती है और इसी की सहायता से हमारी रूह रूहानि सफर को पूरा करने में सक्षम होती है। 'धुर की वाणी आई जिन सगली चिंत मिटाई' इसी शब्दधुन के अभ्यास से हमारे अंर्तमन से अंधकार, अज्ञानता और मन के उपर से जन्म-जन्मांतरों की चढ़ी मैल उतरती है और आत्मा जीते जी निर्गुण-निराकार परमात्मा के साथ एकरूप हो जाती है।

अगर आप ज्ञान दृष्टि से देखो तो यह निराकार है, इसका कोई रंग, रूप, आकार-प्रकार नही है, यह बिल्कुल अडोल, परमशांत, बिल्कुल मौन, चेतना का भण्डार है। अपने आप मे स्थिर है। लेकिन फिर भी अपनी मौज से सबकुछ करने मे समरथ है। यह बिना आँखों से भी देख सकता है, कानों के बिना भी सबकी पुकार सुनता है, बिना हाथों से भी सबकुछ कर सकता है, बिना जीभ से भी किसी भी शरीर में प्रकट होकर सबकुछ उच्चारण कर देता है।

सत्गुरू बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज के साथ 2 सितम्बर 2002 को कैथल हरियाणा में हुई ज्ञान चर्चा

.....

कैथल हरियाणाः में महापुरूष ओम प्रकाश जी की देख-रेख में दो सितम्बर 2002, रविवार को रूहानी सत्संग का आयोजन किया गया। आस-पास से आए श्रद्धालुओं ने संत-महात्माओं के रूहानी प्रवचनों और मातृशक्ति एवं बच्चों द्वारा प्रस्तुत किये गये भजनों का खूब आनंद लिया।

सतगुरू शहनशाह हुजूर बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज का पण्डाल में पॅहुचने पर सारी साद-संगत ने माल्यार्पण करके भव्य स्वागत किया और जो बोले तिस बलिहार धन निराकार, सतगुरू बाबा बूटा सिंह जी महाराज की जय, सतगुरू बाबा महताब सिंह जी महाराज की जय, सर्व संत समाज की जय की ध्वनि से पण्डाल का सारा वातावरण आनंदमय, ज्ञानमय, प्रेममय हो गया। हुजूर महाराज ने गुरूगद्दी पर विराजमान होने से पहले सारी साद-संगत को हाथ जोड़कर नतमस्तक होकर कहा साद-सगंत जी प्यार नाल आखो धन निराकार। हुजूर महाराज के रूहानी प्रवचनों से पहले तुलसी दास जी महाराज की पावन वाणी का शब्द महापुरूष ओम प्रकाश जी ने प्रेम के साथ पढ़कर साद-सगंत को निहाल किया और कहा कि

नीच-नीच सब तर गये संत चरण लवलीन,
जाति के अभिमान से डूबे बहुत कुलीन

सत्गुरू महाराज ने विचार करते हुए फरमाया कि इस पारब्रह्म निर्गुण निराकार परमात्मा से अगर कोई मिलना चाहता है, खुली आँखों से पलभर में देखना चाहता है, अपने अंग–संग इसका एहसास करना चाहता है कि वास्तव में यह परमचैतन्य परमसत्ता हमेशा मेरे साथ है तो निश्चय ही ऐसे साधक के रास्ते में जो सबसे बड़ी दीवारें हैं जो अज्ञानता वश इस अभागे जीव ने खुद ही खड़ी कर ली है। जाति, धर्म, वर्ण, मजहब, ऊंचा–नीचा, अमीरी–गरीबी, विद्ववता, उपाधि– उपलब्धि आदि यह सब इंसान ने खुद अपने आप ही बनाई हुई मूढ़ मान्यतायें वाद–विवाद की जड़ें है।

आप जी ने फरमाया कि अरे भाई आप को दूसरे प्रण में यह पावन ज्ञान देते हुऐ बताया गया है कि जैसे–

इस निर्गुण-निराकार परमात्मा की कोई विशेष जाति मजहब नही है ठीक इसी प्रकार से हमारी भी कोई विशेष जाति, धर्म, वर्ण और कोई विशेष मजहब नही है। हम सब एक ही परमपिता की संतान हैं। महापुरूषों जाति तो पशु-पक्षियों की होती है। जो जाति, धर्म, वर्ण, मजहब की दीवारों और बंधनों में उलझ गया तो ऐसे पथभ्रष्ट धर्मान्ध और बेमुख इंसान का धीरे-धीरे पतन हो जाता है।

क्योंकि भक्तिमार्ग में यह मतभेद और

अलगाववाद ही सबसे बड़ी रूकावट और जहर जो आहिस्ता–2 साधक को नर्क के गर्त में फिसला देता है। इंसान तो बस इंसान है, प्रेम–प्यार का प्रतीक है। व्यर्थ में ही ऐंठता फिरता है पगला यह जीव।

ऊँची जाति में पैदा होने का अंहकार, अक्षर ज्ञान का अंहकार, वेदों-शास्त्रों और धार्मिक पोथियों के पढ़ने, पूजा-पाठ, व्रत-उपवास एवं अनेकों प्रकार के अनाप-शनाप धार्मिक कृत्यों तथा निर्रथक मूढ़ मान्यताओं का अंहकार, किसी प्रकार ऋिद्धि-सिद्धि, चमत्कार और करामात का अंहकार साधक के जीवन में पतन का कारण बन जाता है।

ऐसा पथभ्रष्ट बेमुख इंसान फिर वहीं चला जाता है जहाँ से उसने यात्रा शुरू की थी और अंततः हाथ मलता रह जाता है। बस ऐसे ही यह हीरा सा जन्म कौड़ियों के भाव लुट जाता है

आप जी ने बुल्लेशाह का उदाहरण देते हुए फरमाया कि बुल्लेशाह दी जाति ना कोई, शाह इनायत पाया है। इसीलिए महापुरूषो अगर जीवन का वास्तव में आनंद लेना है तो इन सब भ्रमों और सांसारिक बंधनों से उपर उठ जाओ तभी आध्यात्मिक मार्ग में सफलता मिलेगी। आप जी ने आगे कहा कि "**जात-पात पूछे ना कोई, हरि को भजे हरि का होई**" हुजूर महाराज ने कहा कि श्री राम जी ने क्या

भीलनी की जाति पूछी थी नही महापुरूषों सिर्फ श्री राम जी ने भीलनी का भक्तिभाव और प्रेमभाव ही देखा और आपने सुना कि भीलनी ने एक मिशाल कायम कर दी। दूसरी तरफ अनेकों ऋषि–मुनि जिन्होने शबरी का निरादर किया उनको भगवान का आर्शीवाद प्राप्त नही हुआ। अंहकार के कारण उनकी सब तरह की साधना और भक्ति व्यर्थ में ही धरी की धरी रह गई। क्योंकि महापुरूषों भक्ति मार्ग में सूक्ष्म से अति सूक्ष्म रूप से अंहकार ही पतन का कारण बनता है।

वेदों–शास्त्रों और अनेकों सदग्रंथों में अनेकों आख्यान और व्याख्यान आप पढ़ सकते हैं और हमारा इतिहास भी इस बात का साक्षी है कि अनेकों धुरंधर ऋषियों–मुनियों को अंहकार ने धराशाही कर दिया। इसीलिए हर तरह से साधना के दौरान इस अंहकार रूपी राक्षस से बचना है और काल की त्रिगुणात्मक माया से सचेत रहना है। क्योंकि यह काल की रंग–बिरंगी माया बहुत ही विकट और प्रबल है। सत्गुरू की कृपा रूपी कवच और इस निर्गुण–निराकार एवं सर्वाधार परमात्मा के पावन नाम सुमिरण ही इस रजोगुण, सतोगुण और तमोगुण की विकराल माया से बचा जा सकता है। दूसरा बचाव का कोई उपाय है ही नही। साद–सगंत जी अगर आप सतगुरू के मुखारविंद से निकले वचनों को सत्–सत् करके मानोगे तो जीवन में यह सतगुरू के वचन सोने पर सोहागा साबित होंगे। इसलिए इन मूढ़ मान्यताओं और रूढ़ीवाादी विचारधारा को बिल्कुल

छोड़ दो, इनसे उपर उठ जाओ तभी जीवन का कल्याण होगा और मोक्ष–मुक्ति की प्राप्ति होगी।

आप इस अंग–संग निर्गुण–निराकार परमतत्व को वक्त के हाकिम महापुरूष की कृपा से पहले जान लो फिर अराधना और साधना से मात्र इसी का नित्यप्रति ध्यान करो। एकाग्रता और समग्रता से आपका ध्यान इतना गहरा और पक्का हो जाये कि आप को बस इस निर्गुण–निराकार प्रियतम परमात्मा का दर्शन–दीदार हर समय होता रहे। यह आपके हमेशा आठों पहर बारह याम यानि कि पल पल अंग–संग है। अंग–संग का मतलब कि हमारे शरीर के हरेक अंग के संग अर्थात हमेशा हम सब के साथ–साथ। साद–संगत जी जब यह अहम्भाव समाप्त हो जाता है, मन, बुद्धि, चित और अंहकार से परे अपनत्व यानि कि निज स्वः स्वरूप आत्मा का ज्ञान हो गया। इस अकाटय सत्य स्वरूप परमतत्व का खुली ऑखों से दर्शन करके दिव्यदर्शी बन गये, समदर्शी बन गये, बस इस ज्ञान स्वरूप परमात्मा के दिव्य दर्शन करके सच्चा प्रेम हो गया फिर साद–सगंत जी दो नही बस यही ओत–प्रोत निर्गुण–निराकार परमात्मा जिसने सारी सृष्टि को अपनी गोद मे बैठा रखा है। सृष्टि के रोम–रोम में, जड़–चेतन, स्थूल जंगम स्थावर में समभाव से यह सर्वव्यापक है।

जब आप ने इस निर्गुण–निराकार सत, चेतन और आनंद स्वरूप को भली–भांति जान लिया और पहचान

लिया।

जब आपको यह बोध हो गया कि मैं यह मात्र शरीर नही बल्कि एक अजर अमर अविनाशी, हमेशा ज्यों की त्यों रहने वाली पावन पवित्र आत्मा हूँ। फिर जाति, धर्म, वर्ण, रंग, रूप, आकार-प्रकार जन्म-मरण का सवाल ही नही उठता क्योंकि ये सब इस पंचभौतिक निरंतर परिवर्तनशील स्थूल शरीर के ही धर्म हैं और स्थूल शरीर के साथ ही बरतते रहते हैं आत्मा के साथ नही।

क्योंकि आत्मतत्व अपने आप में एक अडोल और स्वतंत्र परमचैतन्य हस्ती है। इसीलिए आप सब को पुकार-पुकार कह रहा हूँ कि दुनियाँ के लोगो आओ, पूरा सत्गुरू आ गया है, ये इस निर्गुण-निराकार परमात्मा को भली-भांति जानता है और हम सब को भी जना सकता है। पलभर में इस निर्गुण-निराकार परमात्मा का खुली ऑखों से दर्शन करा सकता है।। जिस प्रकार एक दुकानदार हर रोज दुकान खोलता है क्योंकि ग्राहक कभी भी आ सकता है और दुकानदार को लाभ हो सकता है। ठीक इसी प्रकार से नित्यप्रति सत्संग, सेवा और सिमरण को अपनाओ आपको कभी भी इसका फल मिल सकता है।

आप जी ने आगे फरमाया कि जब आपको इस निराकार परमात्मा से मिला दिया, इसका खुली ऑखों से दर्शन करा दिया, फिर जगह-जगह भटकने का सवाल ही

नही उठता। इसको अपने अंतःकरण में बसा लो। इसी का निरंतर ध्यान करते हुऐ अंततः इसी में स्थिर हो जाओ आपका कोई बाल बॉका नही कर सकता। महापुरूषो

जिनको यह ज्ञान मिल गया वह असली आँख वाले हो गये। जिसने इस ज्ञान और प्रेम स्वरूप परमात्मा को जान लिया, इसको अपना आधार मान लिया उसको फिर किसी का गम नहीं रहता वह हमेशा आत्ममस्त रहता है। साद-सगंत जी परमात्मा कोई दस बीस पचास सौ नहीं है, यह एक ही है और हमेशा हम सब के अंग-संग है।

जैसे सभी की प्यास पानी से ही बुझती है किसी और दूसरी चीज से नहीं इसी प्रकार हम सब एक ही नाम और निराकार परमात्मा का निरंतर ध्यान करते हुए भवसागर से पार होगें। जैसे प्रकाश देने के लिए एक ही सूर्य है ऐसे ही संसार के भवबंधनों से छुटकारा पाने के लिए भी एक यही परमात्मा है। इसी का ही सहारा लेना चाहिये। यही हम सबका परमहितैषी और जीवन का आधार है।

साद-सगंत जी हमारा मनुष्य जीवन और एक-एक श्वास बहुत ही कीमती है। सिकंदर एक बहुत ही महान व्यक्तित्व का धनी हुआ। उसने सारी दुनिया को अपने वश में करने की ठान रखी थी। काफी हद तक सिकंदर ने सफलता भी प्राप्त की। उसने मृत्यु के समय अपना आधा राज्य उस व्यक्ति को देने की घोषणा की जो उसे कुछ समय

जीवित रख सकें ताकि वह अपनी माता से मिल सके। परंतु महापुरूषो सभी वैद्य-हकीमों ने जबाब दे दिया और सिंकदर को कहा कि चाहे आप सारी सम्पति भी दे दो आपको इस समय एक श्वास भी फालतू नहीं मिल सकता। तब सिकंदर के ऑसू निकलने लगे और एक ठण्डी आह भरकर कहा कि अफसोस अगर मुझे मालूम होता कि जिंदगी में एक श्वास इतना कीमती है।

इसीलिए इस मनुष्य जन्म की कदर करो। इसीलिए यह सच ही कहा कि ऐ दिल तू जिंदा दिलो की परिक्रमा कर क्योंकि दिल में ही सच्चा काबा और काशी छिपा है। काबा शरीफ तो हजरत इब्राहीम ने बनबाया है लेकिन यह दिल तो खुद परमात्मा ने बनाया है और अपने मनचाहे स्थान पर खुद ही खुदा बैठा है। इसीलिए अपने वास्तविक स्वरूप का ज्ञान होना अर्थात अपने आप को आत्मा जानना और सबकुछ इसी निर्गुण-निराकार परमात्मा को ही समझना चाहिये। हमेशा इसी का ख्याल एवं ध्यान रखना सब में इसी को और इसको सबमें देखना, इसी को अपना आधार और परम सहारा मानना चाहिये। यह आत्मतत्व संसार की रचना से पहले भी यहॉ पर विद्यमान था। संसार के समाप्त होने पर भी यह ज्यों का त्यों कायम दायम रहेगा इसके उपर किसी प्रकार का प्रभाव नही पड़ता। यह प्रकृति के तमाम प्रपंच की उत्पत्ति के समय पैदा नही होता और प्रलय के समय इस निर्गुण निराकार परमात्मा का विनाश नही होता। यह हमेशा अपने स्वः स्वरूप में ज्यों का

त्यों अडिग बना रहता है। आप भी इसका निरंतर ध्यान करते हुए अडिग हो जाओ तभी जीवन की दशा और दिशा सुधरेगी।

साद-सगंत जी मनुष्य जीवन के सही लक्ष्य को जानने के लिए हम सब को अपने निज स्वरूप रूपी किताब को पढ़ना होगा। इसी आत्मा रूपी किताब में असली पहचान और ज्ञान छिपा है। सबकुछ जानने वाले को भी जिसके द्वारा जाना जाता है यही आत्मज्ञान है। आपको मूल रहस्य बता रहा हूँ। इसी ज्ञान से ही इस जीव का कल्याण होगा। आप जी ने पवित्र बाईबल का उदारहण देते हुए कहा कि-

वे लोग धन्य हैं जिनका मन पवित्र है, क्योंकि केवल सिर्फ उन लोगों को ही खुदा का दीदार हासिल होगा। इस सच्चाई को अच्छी तरह से समझो कि आत्मा का इस निर्गुण-निराकार परमात्मा से मिलन का अनुभव सिर्फ इसी ज्ञान के द्वारा ही किया जा सकता है।

आओ साद-सगंत जी इसको जानकर इसी का निरंतर ध्यान करते हुए इसे अपने चारों तरफ दॉयें-बॉयें, आगे-पीछे, ऊपर-नीचे, अंदर-बाहर, तमाम सृष्टि के प्रंपच में ओत-प्रोत समझते हुए जीवन बसर करना है। ऐसा करने से हम सब का लोक सुखी परलोक सुहेले होगा और मनुष्य जीवन का मकसद पूरा हो जायेगा। बस आज के लिऐ यही काफी है बाकी फिर चर्चा करेगें। साद सगंत जी प्यार नाल आखो धन निराकार।

सत्गुरू भगवान बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज के पावन जन्म दिवस पर गॉव कुराली में सत्संग के दौरान हुई ज्ञान चर्चा

.....

कुराली नारायणगढ़: 17 जनवरी 2003: में सतगुरू बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज के पावन जन्म दिवस के उपलक्ष्य पर विशाल रूहानि सत्संग का आयोजन किया गया। इस सत्संग में दूर-दराज से आये अनेकों श्रद्धालुओं ने अपनी हाजिरी दर्ज कराई। मातृशक्ति एवं महापुरूषों के भजनों एवं प्रवचनों का सारी सगंत ने भरपूर आनंद लिया।

हुजूर महाराज के प्रवचनों से पहले महापुरूष बक्शा राम जी ने पावन ईलाही वाणी का शब्द पढ़ा

'अखी वाझहु वेखणा, विणु कना सुनना, पैरा वाझहु चलना, विणु हथां करणा, जीभै वाझहु बोलना, इउ जीवत मरणा, नानक हुकम पछाणि के तउ खसमै मिलणा'

महापुरूष बक्शा राम और गॉव कुराली की समस्त साद-सगंत का निराकारी जागृति मिशन के प्रति बहुत ही अच्छा योगदान रहा। सभी महापुरूष एवं मातृशक्ति हमेशा तन, मन, धन से मिशन की सेवा करते रहते हैं।

हुजूर बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज ने रूहानि सत्संग प्रवचनों से पहले जयघोष किया जो बोले तिस बलिहार, धन निराकार, धन धन मेरे सतगुरू महताब सिंह जी

महाराज वाकई तू धनता के योग्य है मेरे पास ऐसी वाणी नही, जिससे तेरा धन्यवाद करूँ। सतगुरू महाराज ने प्रवचनों में फरमाया कि महापुरूषों आप सभी बहुत ही सौभाग्य वाले हो जिसने यह अमोलक निज स्वः स्वरूप आत्मा का ज्ञान एवं बोध प्राप्त किया है। मेरे ख्याल में वाणी का शब्द सुनकर आपको बहुत ही अजीब सा लगा होगा कि क्या हम इन ऑखों के बिना निर्गुण–निराकार परमात्मा को देख सकते हैं, कानों के बिना सुन सकते हैं, पैरों के बिना चल सकते हैं, हाथों के बिना काम कर सकते हैं, जीभ के बिना बोल सकते हैं, और जीते जी मर सकते हैं।

बाबा जी ने फरमाया कि इसमें हैरानी की कोई बात नही जब तक जीव आत्मा अपने असली स्वरूप की पहचान नही कर लेती तब तक ऐसा ही लगता है कि क्या यह सबकुछ संभव है, क्या ऐसा हो सकता है।

जब सद्गुरू की दया से निज स्वरूप आत्मा का दर्शन हो जायेगा तब असंभव भी संभव हो जायेगा और जन्म-जन्मांतरों का प्रभु से मिलने का सपना भी साकार हो सकेगा। इन स्थूल चर्म नेत्रों से नही दिख सकता परमात्मा बल्कि सतगुरू द्वारा दिये गये दिव्य ज्ञान चक्षु से हम इस निर्गुण-निराकार सर्वव्यापी, अंर्तयामी परम तत्व को एक इशारे मात्र से पलभर में खुली आँखों से देख सकते हैं।

बस आप यहाँ मार खा जाते हैं, आप सोचते हैं ऑखें देखती हैं। लेकिन नहीं, ज्ञान और विवेक से विचार करो कि ऑखों के अंदर बैठ कर भी कोई देखता है।

कहने का भाव ज्ञान चक्षु से देख सकते हैं। यह स्थूल कान नहीं अंदरूनी कान जो निरंतर अनहद शब्दधुन को सुनते हैं। क्योंकि यह शब्दधुन परमात्मा की जान है और निरंतर बहुत ही सुरीली आवाज में हम सब के अदंर हिलोरे दे रही है और हमें परमात्मा की याद दिला रही है। यह शब्दधुन हमें निजघर, आत्मलोक का रास्ता दिखा रही है। यह अनस्पोकन लैंगवेज/अनिवर्चनीय भाषा है। जीभ से नही बोली जा सकती।

इसका ध्यान करके देखो इसके हाथ-पैर नहीं हैं यह तो पहले ही सब जगह निराकार रूप में व्यापक है। इसको कहीं आने-जाने के जरूरत नही है। यह जहाँ देखो वहीं पर अपने आप में बिल्कुल भरपूर है। यह जब चाहे, जहाँ चाहे, जो चाहे कर सकता है।

हुजूर महाराज ने कहा कि महापुरूषों सारी कहानी की जड़ समय के हाकिम आत्मवेत्ता सतगुरू के आदेश–उपदेश की पालना करनी है। जब आप सदगुरू का हुक्म मानोगे सबकुछ यह निराकार स्वयं ही कर देगा। क्योंकि साकार और निराकार में, सतगुरू और निराकार परमात्मा में कोई फर्क नही है। सिर्फ अज्ञानतावश और निज

स्वरूप अर्थात आत्मा का ज्ञान एवं बोध न होने की कमी के कारण ही यह देखने में दो लगते हैं परंतु ज्ञान दृष्टि से यह एक ही है। यह एक ही अनेकों रूपों में सृष्टि में व्याप्त है। यह इस ओत–प्रोत प्रभुसत्ता का एक बहुत ही अदभुत और विलक्षण खेल है।

साद सगंत जी इस निराकार परमात्मा की यही खासियत है।

अगर आप ज्ञान दृष्टि से देखो तो यह निराकार है, इसका कोई रंग, रूप, आकार-प्रकार नही है, यह बिल्कुल अडोल, परमशांत, बिल्कुल मौन, चेतना का भण्डार है। अपने आप मे स्थिर है। लेकिन फिर भी अपनी मौज से सबकुछ करने मे समरथ है। यह बिना आँखों से भी देख सकता है, कानों के बिना भी सबकी पुकार सुनता है, बिना हाथों से भी सबकुछ कर सकता है, बिना जीभ से भी किसी भी शरीर में प्रकट होकर सबकुछ उच्चारण कर देता हैं।

स्वयं अपनी मौज में सतगुरू के माध्यम से खुद ही अपना भेद बता देता है। बस आप इसका यशोगान करते रहो, इसके साथ जुड़े रहो, सबमें इसी को और इस में सब को देखो। यह सब इसी का खेल है, आप निशचिंत होकर इस खेल को देखते रहो। इसी की चरण–शरण में रहो, हर वक्त इसी के आगे प्रार्थना करते रहो। सबकुछ इसी के हुक्म से हो रहा है। जब इस दिव्य ज्ञान का रंग आपके अंतःकरण में पूरी

तरह से चढ़ जायेगा तब सबकुछ अच्छा होगा।

महापुरूषो इस निराकारी जागृति मिशन में सबको एक ही ज्ञान दिया जाता है, एक इसी निर्गुण–निराकार परमात्मा की पहचान कराई जाती है। इसी लिए मैं हमेशा यह आवाज देता हूँ कि निरर्थक बहसबाजी में मत उलझो।–

बस अपने निर्गुण-निराकार आत्म स्वरूप को समझो। जैसे चाहे कोई अमीर है या गरीब है, ज्ञानी है अज्ञानी है, किसी भी धर्म में आस्था रखता हो, सबकी प्यास पानी से ही बुझती है, भूख खाना खाने से मिटती है। ठीक इसी तरह से मुक्ति भी सभी को परमात्मा के नाम एवं ज्ञान से ही मिलेगी। दूसरा और कोई विकल्प है ही नही।

जैसे गंगा में हरेक स्नान कर सकता है। पापी से पापी इंसान को भी गंगा यह नही कहती कि तू स्नान मत कर। इसलिए तमाम छल–कपट और मतभेद छोड़कर आओ इस अमोलक ज्ञान को प्राप्त कर लो। जब यह ज्ञान की ज्योति अतःकरण में प्रज्वलित हो जायेगी तब अंधकार और अज्ञानता अपने आप समाप्त हो जायेगी। क्योंकि ज्ञान हमेशा अज्ञान को समाप्त कर देता है।

सत्गुरू महाराज ने प्रवचनों को जारी रखते हुए आगे कहा कि

इस सर्वश्रेष्ठ और अमोलक आत्मज्ञान को अपने अंतःकरण में धारण कर लो, इसी के रंग में रंग जाओ और यही हो जाओ, इसमें

स्थिर हो जाओ। जैसे यह बिल्कुल स्थिर है। आप भी ऐसे ही बन जाओ तभी जीवन जीने का मजा आयेगा। क्योंकि संसार की तमाम चीजें नाशवान और क्षणिक है। इन स्थूल चर्म नेत्रों से जो भी दिखता है यह सब जहर के समान है।

आपको याद होगा, अगर नही तो याद करो कि जब यह ज्ञान आपको दिया गया था आपने प्रण दिया था कि यह तन, मन, धन सबकुछ सतगुरू का अर्थात इस निराकार परमात्मा का है। अब आप इसको अपना समझकर मन की भूल-भुलैया में क्यों उलझ रहे हो। आपने यह प्रण सतगुरू को दिया और सदगुरू ने आपको सभी कर्मो-धर्मो और संसार की तमाम अटकलों तथा भटकाव से मुक्त कर दिया। आपको एक इशारे मात्र से आपकी मंजिल पर पहुँचा दिया। आपको निराकार प्रियतम परमात्मा के खुली ऑखों से दर्शन दीदार करा दिये। यही अजर, अमर और अविनाशी है बाकी सब दिखने वाला प्रपंच छलावा, भटकावा और धोखा है।

देखो सतगुरू ने पलभर में आपको इस निर्गुण-निराकार परमात्मा का खुली ऑखों से दर्शन करा दिया है, इससे मिला दिया है। अब आप इसको अपने अंतःकरण में बसा लो। इसी में स्थिर हो जाओ। जिनको सतगुरू ने दया करके यह अमोलक ज्ञान दे दिया है वह जीते जी मुक्त हो गये है।

हम सब मिलजुल कर, सब को साथ लेकर चले तभी दुनिया में अमन और चैन हो सकता है। जैसे मछली सिर्फ पानी में ही जिंदा रह सकती। अगर मछली को पानी से बाहर निकाल दिया जाये तो वह जिंदा नही रह सकती। ठीक इसी तरह से ज्ञानवान महापुरूष भी इस ज्ञान रूपी अमृत के बिना नही रह सकता। साद-संगत जी सदगुरू कितना महान है कि एक इशारे में हमें इस निराकार परमात्मा का दर्शन खुली ऑखों से करा दिया है।

यह आपको कभी भी नही भूलता लेकिन यह अभागा जीव ही भूलनहार है। यह तो हमेशा बक्शणहार हैं।

अगर यह द्रोपदी की लाज बचा सकता है, प्रहलाद को लोहे के खम्बें पर एक चींटी का रूप धारण करके उसका हौसला बढ़ा सकता है और एहसास करा सकता है कि मैं तुम्हारे अंग-संग हूँ। अगर यह मीरा के जहर के प्याले को अमृत बना सकता है, जब हाथी का पॉव मगर मच्छ ने पकड़ लिया तब उसने प्रभु को पुकारा तो हाथी का पॉव मगर मच्छ से छुड़ाने मे इसी निर्गुण-निराकार परमात्मा ने मदद की। महापुरूषो इसीलिए मैं बार-बार पुकार-पुकार कर कह रहा हूँ कि-

यह सबकुछ करने में समरथ है। अगर आपका कोई काम नहीं होता चाहे वह लौकिक जगत का है और चाहे आलौकिक जगत का है तो आपने

समझ लेना चाहिये कि अभी आपकी साधना-अराधना अधूरी है। आपका विश्वास दृढ़ नही हैं। यही अपने आप की निरख-परख करने का सबसे सहज-सरल और कारगर तरीका है।

इसीलिए अपने दुनियावी काम–काज करते हुए इसका सिमरण करते हुए यही हो जाओ। यही जीवन जीने की सहज और अति सरल कला है। बस आज इतना ही काफी है इसी पर मनन चिंतन करो जो आज आपको बताया गया है। साध संगत जी प्यार और सत्कार के साथ कहो धन निराकार जी।

यह आत्मा सभी कारणों का महाकारण है। इसकी कोई सीमा नही। यह बिल्कुल ही असीम है। इसकी कोई शुरूआत, मध्य और अंत नही। यह बिल्कुल ही निर्लेप, निरंजन और निर्विकार है। यह निर्गुण-निराकार एवं सर्वाधार आत्मा है।

निर्रथक विचारों को भीतर प्रवेश न होने दो ज्यादा से ज्यादा समय प्रभु चिंतन में बिताओ तभी वास्तविकता सामने आएगी

रोहतक हरियाणा में रूहानी ज्ञान गंगा में गोता लगाते श्रद्धालु

निराकारी जागृति मिशन की शुरूआत

रोहतक, हरियाणा में **सत्गुरू बाबा लक्षमण सिंह जी महाराज** के साथ सत्संग के दौरान हुई ज्ञान चर्चा

.....

रोहतकः हरियाणा 30 मार्च 2003 निराकारी जागृति मिशन, शाखा रोहतक के प्रभारी महापुरूष सुनील कुमार की देख-रेख में एक विशाल रूहानी सत्संग का आयोजन किया गया जिसमें आस-पास से आए अनेकों श्रद्धालुओं ने भजनों एवं पावन वाणी के शब्दों से सगंत को निहाल किया।

महापुरूष सुनील जी बहुत ही सहज और सरल स्वभाव के महापुरूष हैं। हमेशा अपनी साद-संगत के सहयोग से निराकारी जागृति मिशन की तन, मन, धन, वचन और कर्म से सेवा करते हैं। जब भी रोहतक में संत समागम होता है महापुरूष सुनील जी और बीबी मधु का विशेष योगदान होता है। सतगुरू महाराज भी भाई साहब सुनील जी को दिल से चाहते थे और सत्संग के दौरान सुनील जी के घर ही विश्राम करते थे। जब तक हुजूर महाराज वहाँ ठहरते थे पारब्रह्म निर्गुण-निराकार परमात्मा के यशोगान की चर्चा होती ही रहती थी। हुजूर महाराज भी अपने रूहानी सत्संग प्रवचनों से सारी साद-संगत को आत्मविभोर कर देते थे। सभी महापुरूष और मातृशक्ति हुजूर महाराज के ज्ञान अमृत प्रवचनों का खूब आनंद लेती थी।

सतगुरू बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज के

रूहानी सत्संग प्रवचनों से पहले परम्परागत रूप से पावन वाणी का शब्द पढ़ा गया–

'जिउ जल महि जल आइ खटाना, तिउ ज्योति संगि जोज समाना, मिट गये गमन पाए विश्राम, नानक प्रभ के सद कुरबान'

हुजूर महाराज ने प्रवचनों से पहले कहा धन–धन मेरे सतगुरू तू वाकई धन्य है, जो बोले तिस बलिहार, धन निराकार' हुजूर महाराज ने फरमाया कि स्वामी जी सुन लिया आप ने कि संत महापुरूषों, हमारे रहबरों की कैसी अदभुत वाणी, सुनते ही अंतःकरण में कुरेद होती है। अब आप सब ज्ञानवान महापुरूष और मातृशक्ति ज्ञान की दृष्टि से विचार करके देखो कि इस शब्द में हमारे रहबर हमें क्या कहना चाहते हैं। अपने अंदर झांक कर देखो कि महापुरूषों के इन पावन वचनों से आप ने क्या सीखा है। इस निर्गुण निराकार परमात्मा का ज्ञान लेने के बाद आपके जीवन में कितना बदलाव आया है।

सद्गुरूदेव ने अपने प्रवचनों को जारी रखते हुऐ आगे फरमाया कि साध–संगत जी जैसे आप ने देखा होगा कि जब नदी पूरे उफान के साथ बहती है और पानी का बहाव बहुत ही तेज होता है, पानी में ऊँची–2 लहरें उठती हैं। लेकिन अंचम्भे की बात है कि कुछ देर क्रीड़ा करके लहरें वापिस पानी में ही समा जाती है अर्थात जिससे पैदा हुई थी अपने उसी मूल स्त्रोत में एकरूप हो जाती है। ठीक इसी

प्रकार से जब इस जीव आत्मा के तमाम प्रारब्ध, संचित और वर्तमान कर्मो का लेखा–जोखा समाप्त हो जायेगा। तब यह जड़ और चेतन अलग–अलग हो जायेगें। पॉचो तत्व अपनी–2 जगह चले जायेगें और चेतना अपने मूल स्त्रोत अर्थात इस विराट चेतना के समुद्र में समरस हो जायेगी। इस तरह से संसार का आवागमन और बार–2 जन्म–मरण का सिलसिला खत्म हो जायेगा।

बाबा जी ने कहा कि–

जलस तू ही, थलस तू ही, जमीं तू ही, जमा तू ही, मकी तू ही, मकां तू ही, नाम के धारे सगले जंत, नाम के धारे खण्ड ब्रहम्ण्ड, नाम के धारे समृति वेद कुरान, नाम के धारे सब ज्ञान ध्यान, नाम के धारे आकाश पाताल, नाम के धारे सगल आकार'

आप सब सतगुरू द्वारा बक्शी हुई ज्ञान की दृष्टि से देखो कि यह अंग–संग निर्गुण–निराकार परमात्मा सर्वव्यापी जल में, थल में, अग्नि, वायु, आकाश में और इससे भी परे यही निराकार हस्ती ओत–प्रोत है। महापुरूषो सबकुछ इसी में है, इसी के बीच में, इससे बाहर कुछ भी नही है।

साद–संगत जी–

यह निर्गुण निराकार ही ऐसा शब्द है, ऐसा नाम है जो सबका आधार है। इसी के सहारे सारी

चौरासी लाख योनियाँ है, अगर यह निर्गुण-निराकार परमात्मा है तभी हम सब जिंदा है। जब यहाँ पर पाचों तत्व और खण्ड-ब्रह्माण्ड नाम का कोई नामोनिशान नही था तब भी यह निराकार प्रियतम परमात्मा अपने आप में कायम-दायम था।

संत-महापुरूषों ने इसी का सिमरण ध्यान करके वेद-कतेब, सदग्रंथ, शास्त्र लिखे हैं। सभी तरह के ध्यान से इसी का ध्यान सबसे श्रेष्ठ है, सभी प्रकार के ज्ञान से उत्तम इसी निराकार हस्ती का ज्ञान श्रेष्ठ है। आकाश और पाताल का आधार भी यही है। दृष्टिमान जगत में सब रंग रूप आकार-प्रकार से बनी वस्तुओं का सहारा भी यही है। महापुरूषो कुल मिलाकर यह अपने आप में तटस्थ, कायम-दायम निराकार ही सबकुछ है। साध सगंत जी आज के लिए बस इतना ही काफी है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इन अमृत रूपी वचनों को अपने जीवन मे जरूर धारण करोगे तभी कल्याण होगा। साद-संगत जी प्यार नाल आखो धन निराकार जी।

सत्संग सम्पन्न होने के बाद हुजूर महाराज ने महापुरूष सुनील जी के घर कुछ देर विश्राम किया। अचानक कुछ महापुरूष सतगुरू महाराज से मिलने के लिए आ गये। फिर ज्ञान चर्चा का दौर शुरू हो गया। भाई साहब सुनील जी, दिनेश, पवन कुमार, मैडम मधु जी, दर्शना और अन्य महापुरूष बाबा जी के मुखारविंद से ज्ञान चर्चा सुनने के लिए

बैठ गये। मैडम मधु जी ने हुजूर महाराज से विनती की सतगुरू महाराज जी कृपा करके आज आत्मतत्व के बारे मे ही विस्तार से चर्चा की जाये ताकि हम सब के अंदर सतगुरू और निराकार भगवान के प्रति अडिग आस्था और दृढ़ विश्वास हो सके। सतगुरू महाराज ने कहा ठीक है। अब आप सब अपनी मन-वृतियों को एकाग्र करके ध्यान से सुनो। बीबी मधु जी-

यह आत्मा ही सभी कारणों का महाकारण है। इसकी कोई सीमा नही। यह बिल्कुल ही असीम है। इसकी कोई शुरूआत, मध्य और अंत नहीं। यह बिल्कुल ही निर्लेप, निरंजन और निर्विकार है। यह निर्गुण-निराकार एवं सर्वाधार आत्मा सर्वव्यापी है।

बेटा मधु कोई इंसान जाति, धर्म, वर्ण, रंग, रूप, आकार, अमीरी-गरीबी, ज्ञान-अज्ञान से भिन्न हो सकता है लेकिन आत्मा रूप में सभी एक हैं हम सब का प्रियतम पिता भी एक ही है। जैसे हमारे तत्ववेत्ता रहबरों की पावन वाणी हमे संदेश देती है कि एक पिता एकस के हम बारक बेटा मधु आत्मा सभी योनियों में, पेड़, पौधों, पशु-पक्षियों, जीव-जंतुओं में, तमाम जीवधारियों में, जड़-चेतन में बराबर रूप से कायम-दायम और हमेशा ज्यों की त्यों बरकरार रहती है। यह हमेशा ध्यान रखो कि हम यह मात्र शरीर नही बल्कि पावन पवित्र आत्मा है। इस आत्मा का

उत्पत्ति के समय जन्म नही होता और प्रलय के समय विनाश नही होता। सिर्फ यह शरीर ही बदलता है आत्मा अपने आप में स्थिर एवं तटस्थ रहती है। जब यह तमाम दृष्टिमान जगत नहीं था, यह प्रकृति नहीं थी तब भी यह आत्मतत्व ही यहाँ पर विद्यमान था।

इस अजर, अमर, अविनाशी आत्मा का जब ज्ञान एवं बोध हो जाता है फिर ऐसी स्थिति प्राप्त हो जाती है जहॉ साकार निराकार एक हो जाते हैं। जहॉ सभी सहारे और आसरे समाप्त हो जाते हैं। साधक स्वयं में अपने निज स्वः स्वरूप में हमेशा के लिए स्थिर हो जाता है। ऐसे ज्ञानवान महापुरूष को ऐसी अवस्था प्राप्त हो जाती है–

जहाँ न कोई नाम-निशान, न रंग, रूप, आकार, नाहि मन, बुद्धि, चित और अंहकार। बस रह जाता है एक है-पना, आनंद ही आनंद, स्वयं से स्वयं का परिचय अर्थात परम मौन की अवस्था जिसका ब्यान लौकिक शब्दों में नहीं किया जा सकता। अपने मूल अद्वैत स्वरूप में स्थिरता, यही हम सब का जन्म सिद्ध अधिकार है। अपनी परमचैतन्य अवस्था में हमेशा-2 के लिऐ समरस हो जाना। सुख-दुःख, लाभ-हानि, संकल्प-विकल्प मन, बुद्धि, चित, जाति, धर्म, वर्ण, रंग, रूप, आकार ये सब प्रकृति के हैं और हमारी आत्मा इन सब से असंग अर्थात बिल्कुल भिन्न है। जो वास्तव में है ही नही उसे स्वीकार ना करो।

हुजूर महाराज ने कहा कि अज्ञान का ज्ञान हो जाना ही ज्ञान है। बेटा मधु हमारी आत्मा किये गये सभी कृत्यों का साक्षी है। सर्वव्यापक है, अपने आप में परिपूर्ण है, किसी आंतरिक और बाहर की शक्ति से प्रभावित नहीं होती। सदा सर्वदा मुक्त है, मुक्त थी और आगे भविष्य में भी मुक्त रहेगी। इसी लिए आत्मा रूप में आप स्वयं ही ज्ञान स्वरूप हो, सत चेतन आनंद स्वरूप हो। जो आदि में भी नही था, वर्तमान में भी नहीं है, और अंत में भी नहीं रहेगा। हमें अज्ञानता वश लगता है कि यह दृष्टिमान जगत है लेकिन वास्तव में नहीं है। जिसकी कोई सत्ता ही नहीं वास्तव में वह है ही नहीं। असत् की कोई सता नहीं और सत् का कोई अभाव नहीं।

इसीलिए संसार की किसी भी चीज से तुम्हारा कोई लेन–देन नही है। तमाम काल्पनिक मान्यताएं, सांसारिक संबध, स्थितियॉ–परिस्थितियॉ, क्रियाएं–प्रतिक्रियाएं आदि। इन सब से तुम्हारा कोई संबध नही है।

यह संसार तुम्हारा नही है नाहि तुम संसार के हो। यह पंचभौतिक संसार पहले भी नही था, वर्तमान में भी नही है और भविष्य में नही रहेगा। यह सब कोरी कपोल कल्पना है। मन, बुद्धि, चित और अंहकार एक ही चेतन शक्ति के चार भिन्न-भिन्न नाम और स्तर हैं। बस कार्यक्षेत्र से अलग-2 माने जाते है। इसी लिऐ वाणी से जो बोला जाता है, मन से मनन किया जाता है, संकल्प से कल्पित

किया जाता है, चित से चिंतन किया जाता है यह सब मिथ्या है और मन की भूल-भुलैया है। आत्मा कर्ता और भोग्ता नहीं है।

राग द्वेष मन के धर्म है आत्मा के नहीं। तुम यह शरीर नहीं हो बल्कि निर्विकल्प, निर्विकार ज्ञान प्रेम एंव बोध स्वरूप आत्मा हो।

बेटा यह जो दिखाई दे रहा है यह सब रजोगुण, सतोगुण और तमोगुण का आवरण मात्र है। इसी त्रिगुणात्मक माया के पर्दे को हटाकार स्वयं को आत्मा जानो। संसार के रंग मंच पर कुछ करना सीखो। वक्त के हाकिम सतगुरू के आदेश-उपदेश की पालना करो। क्योंकि सतगुरू के मुख में ही ब्रह्म स्थित है। सतगुरू ही ब्रह्म से मिलाता है। अप्रत्यक्ष को भी प्रत्यक्ष सतगुरू ही करता है। सतगुरू कृपा से ही शिष्य को दिव्यज्ञान चक्षु मिलता है और निज स्वरूप को पहचानने की क्षमता मिलती है। तत्व बोध होते ही गुरू शिष्य के बीच का भेद समाप्त हो जाने पर परम पुरूष परमात्मा के साथ एकत्व की स्थिति प्राप्त हो जाती है।

आत्मतत्व का बोध होने से यह भली-भांति समझ में आ जाता हैं कि यह निर्गुण-निराकार परमात्मा हर काल में, हर क्षण मे, हर अवस्था में, हर स्थान अर्थात यह सर्वव्यापक सत्ता है। सत और असत का निर्णय करने वाली शक्ति अर्थात विवेक से सत को स्वीकार करना और असत को छोड़ देना ही तत्व बोध है।

मधु जी ने हुजूर महाराज से एक बार फिर नम्र निवेदन किया सदगुरू महाराज जी काफी दिनों से मेरे मन में एक सवाल बार-2 कुरेद करता है और हम भी आपके यहॉ रोहतक में आने का बहुत दिनों से इंतजार कर रहे थे। आखिर आज वह सौभाग्य वाली घड़ी आ ही गई है। आपको यहॉ देखकर आज मुझे बहुत ही हर्ष हो रहा है। बाबा जी ने कहा कि बीबी मधु जी कभी भी मन में सशंय नही रखना चाहिये। जितना जल्दी हो सके सशंय संदेह का समाधान ढूॅढना चाहिये। कहो आप क्या जानना चाहते है। हुजूर महाराज इस निज स्वरूप आत्मा के ज्ञान को प्राप्त करके अर्थात अपने आप को आत्मा जानकर फिर क्या करना चाहिये ताकि हमारा जीवन आनंदमय हो सके ? क्या अदभुत सवाल है आपका ? मुझे बहुत खुशी होती है जब कोई ऐसी जिज्ञासा लेकर संत महापुरूषों के पास आता है। हुजूर महाराज ने बड़े प्रेमभाव से फरमाया कि सुनो अब मेरी बात की तरफ तव्वज्जो देना आज की यह ज्ञान चर्चा जीवन में याद रखने वाली होगी और जिसने भी इसको जीवन में अपना लिया उस का निश्चय ही सुधार और उद्धार होगा। बेटा आपने देखा होगा और आप तो पढ़े-लिखे और आपकी बुद्धि बहुत ही कुशाग्र है। जैसे एक पौधा लगाया जाता है। अगर समय के अनुसार उसकी देख-रेख ना की जाये तो पौधे के आस-पास घास-फूॅस पैदा हो जाता है और उसके विकास अर्थात पौधे को फलने-फूलने से रोक देती है।

मेरा कहने का भाव कि समय के अनुसार पौधे को पानी, खाद और दॉय-बॉय का खरपतवार साफ करना अति जरूरी है। ठीक इसी प्रकार से इस बहुमूल्य ज्ञान को प्राप्त करके तीन महामंत्रों को अपने जीवन का अठूट हिस्सा समझना चाहिये।

यह अपने स्वः स्वरूप आत्मा का ज्ञान एवं बोध सूक्ष्म से भी अति सूक्ष्म है। इसी लिए इसको संभाल कर रखने के लिए नित्यप्रति सत्संग, सेवा, सिमरण जरूर करते रहना चाहिये। तभी जीवन में स्थिरता और आनंद की नित नयी से नयी अनुभूती होगी। जीवन की दिशा और दशा दोनों ही सुधरेंगी।

जैसे शेरनी के दूध को संभाल कर रखने के लिए सोने का बर्तन होना चाहिये। ठीक इसी प्रकार से इस अमोलक दिव्यज्ञान को संभाल कर रखने के लिए जिगरा चाहिये। यह दिल वाले और सतगुरू के प्रति पूर्ण समर्पित और शरणागत भाव रखने वाले महापुरूषों का काम है। इस महान एवं पूनीत कार्य को जाति, धर्म, वर्ण, मजहब, संम्प्रदायवाद, बहुदेववाद, रंग, रूप, आकार-प्रकार, अमीरी-गरीबी बाहरमूखी कर्मकाण्ड, निर्रथक रिति-रिवाज और दुनियावी सीमाओं में बंधे डरपोक और बुझदिल लोग नहीं कर सकते।

इसीलिए दृष्टिमान जगत की आसक्ति और बंधनों से पार एवं परे अपने निज स्वरूप आत्मा को

जानो-पहचानो और इसी निर्गुण-निराकार आत्मा का ध्यान करते हुए यही हो जाओ। इसी निर्गुण-निराकार आत्म स्वरूप के ध्यान में निमग्न होकर मन को विचारशून्य, बुद्धि को भ्रम, संशय, तर्क-वितर्क से खाली, अंहमभाव को छोड़कर, यही हो जाओ। वास्तव में आपका वास्तविक स्वरूप यही है। इसी परमरहस्य को जानने के लिए यह हीरा सा मानव जन्म मिला है। आज बहुत ही अच्छी बातें आपको सुनने को मिली बस जरूरत है इनको अपने अंतःकरण में धारण करने की। जो वक्त के हाकिम आत्मदर्शी सतगुरू के हुक्म की पालना करेगा उसका निश्चय ही कल्याण होगा। हुजूर महाराज ने कहा अच्छा मधु बेटा अब सब जाओ, साध-संगत की सेवा करो, सेवा करते हुऐ सिमरण भी करते रहना है। और इस ज्ञान पर विश्वास के साथ दृढ़ बने रहना।

हुजूर महाराज ने कहा कि महापुरूषो जैसे साकार-निराकार, आत्मदर्शी सतगुरू और परमात्मा एक ही है इसी प्रकार से संसार बनने वाली और संसार बनाने वाली यह सत्ता एक ही है।

इसीलिए आप यह अच्छी तरह से समझ लो कि मैं यह मात्र पंचभौतिक शरीर नही हूँ बल्कि इसमें रहने वाली और इसको चलाने वाली पावन आत्मा हूँ। सीमित नही असीम हूँ, एक जगह ही नही बल्कि सर्वव्यापक हूँ, नाशवान नही अविनाशी हूँ, दृश्य नहीं द्रष्टा हूँ। इस अंग-संग

अद्वैत स्वरूप निर्गुण-निराकार परमात्मा का ज्ञान एवं बोध होते ही साधक और साध्य, ज्ञान ज्ञाता तथा ज्ञेय, आत्मा परमात्मा एक हो जाते हैं।

इस निर्गुण–निराकार परमात्मा का खुली आँखों से दर्शन करके, इस निज स्वरूप आत्मा के ज्ञान को प्राप्त करके कुछ और प्राप्त करना बाकी नहीं रह जाता। इसको जान कर कुछ और जानना बाकी नहीं रह जाता। यह परमआनंद और मोक्ष–मुक्ति की परम अवस्था है। यही मनुष्य जीवन की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि और जीवन जीने की सहज और अति सरल कला है।

चिंता मत करो चितंन करो अगर आप चिंता करोगे तो परमात्मा निश्चिंत हो जाऐगा और अगर आप प्रभु का चिंतन करोगे तो आपकी चिंता स्वयं मालिकेकुल निर्गुण-निराकार एवं सर्वाधार परमात्मा करेगा। आप अपना काम करो और परमेश्वर को अपना काम करने दो। कभी कुछ प्राप्त करने की चिंता कभी कुछ खो जाने की चिंता बस इसी असमंजस मे हीरा सा अमूल्य जीवन बीत जाता है।

सत्गुरू बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज के साथ
सिंधी धर्मशाला कानपुर में हुई ज्ञान चर्चा

.....

कानपुर गोविंद नगर 15 मई 2003 सिंधी धर्मशाला में एक विशााल रूहानि सत्संग का आयोजन किया गया। इस संत समागम में सौभाग्य से मुझे भी हुजूर महाराज के दर्शन करने और उनके मुखारविंद से अमृत रूपी ज्ञान चर्चा सुनने का अवसर मिला।

सतगुरू महाराज जी के प्रवचनों से पहले महापुरूष राजा राम जी ने पावन वाणी का शब्द पढ़कर साध-संगत को निहाल किया।

चार अठारह नौ पढ़े, षट पढ़ि खोया मूल, सुरत सबद चीन्हे बिना, 'ज्यों पंछी चंडूल' सिम्रिति सासत्र पड़हि पुराणा, वादु बखाणहि ततु न जाणा, विण गुर पूरे ततु न पाइऐ सच सूचे सचु राहा है।

हुजूर महाराज ने रूहानी ज्ञान की अमृत वर्षा करने से पहले बहुत ही आर्त भाव से कहा जो बोले तिस बलिहार, धन निराकार साध-संगत जी हमारी रूह जन्म-जन्मांतरों से पारब्रह्म निर्गुण-निराकार परमात्मा से बिछुड़ी हुई है। जब कोई परिपूर्ण रूहानी वक्त का सतगुरू मिलेगा तभी इसके फंद कट सकेंगे। साध-संगत जी अगर चार वेद, छः शास्त्र, अठारह पुराण, नौ व्याकरण, उपनिषद, पुराण एवं महापुराणों और अनेकों सदग्रंथों तथा दर्शन शास्त्र

आदि का गहन अध्यन भी किया जाये फिर भी वास्तविकता का पता नही चल सकता। वक्त के हाकिम आत्मदर्शी परिपूर्ण सतगुरू के बिना यह उलझी हुई पहेली नही सुलझ सकती।

महापुरूषो ज्ञान के बिना, सूरत शब्द, ज्योति–नाद योग के बिना, मन की गति चंडूल नामक पक्षी जैसी हो जाती है जो जिसकी बोली सुनता है उसकी ही नकल करना शुरू कर देता लेकिन उसके हाथ कुछ भी नही लगता। ज्ञान की कमी के कारण मनमुख लोगों की भी यही गति होती है। सिर्फ पढ़ने–लिखने से और बड़े लंबे–2 लच्छेदार विचार करने से जीव का कल्याण नही हो सकता। यह किताबी ज्ञान एक बोझ सा बन जाता है और अंहकार का कारण बन जाता है। श्वेताश्वतर और कठ उपनिषदों में बहुत ही स्पष्ट शब्दों में कहा गया है कि–

आत्मा का ज्ञान वेदों, शास्त्रों, सदग्रथों के पढ़ने से प्राप्त नही होता और न उनके निरंतर सुनने से। क्योंकि आत्मा का ज्ञान मन, बुद्धि और किसी भी प्रकार की विद्या के द्वारा नही हो सकता। यह कहने या सुनने का विषय नही, बल्कि देखने दिखाने और अनुभव का विषय है। पढने-लिखने में चाहे तो सारी उम्र गुजार दो लेकिन असलियत का पता नही चलेगा।

इसी लिए इन सब सरहदों से पार एवं परे चलो।

दुनियावी आकर्षण और आसक्ति को बिल्कुल छोड़ दो। सबकुछ जानने वाले को भी जानना है और इसी को अपना आधार मानकर जीवन बसर करना है। अपना भी कल्याण करना है और दूसरों को भी प्रेरणा देनी है, जो इस ब्रह्मज्ञान को प्राप्त करके गहरी निद्रा में सो गये है। आओ उनको भी जगाऐं और साथ लेकर चलें, क्योंकि स्वामी जी है तो अपने ही महापुरूष। शायद आप सब को याद होगा जब आपने यह ज्ञान प्राप्त किया था सतगुरू महाराज को यह प्रण भी दिया होगा कि किसी से नफरत नही करनी। आप सब अपना प्रण याद करो और सदगुरू भगवान के वचनों को सत सत करके मानो। साध संगत जी इस निज स्वरूप आत्मा के ज्ञान को अपना आधार मानकर जीवन बसर करना है। अपना भी कल्याण करना है और दूसरों के बारे में भी भला सोचना है। सब के भले के लिऐ प्रियतम परमात्मा के समक्ष आर्त भाव से प्रार्थना करनी है। क्योंकि सबके भले में ही अपना भला है। महापुरूषो आज के लिऐ बस इतना ही। बस जरूरत है इस सच्चाई को अमलीजामा पहनाने की तभी कल्याण होगा। साध संगत जी प्यार नाल आखो धन निराकार।

सत्संग सम्पन्न हुआ और हुजूर महाराज ने कुछ समय के लिऐ विश्राम किया। कुछ महापुरूष बाबा जी से मिलने के लिये काफी समय से इंतजार कर रहे थे और मुझ से बार–2 आग्रह कर रहे थे कि हुजूर महाराज जी के दर्शन कब होगें। अचानक बाबा जी ने आवाज लगाई स्वामी

जी क्या कोई मिलने आया है। जी हुजूर महाराज कुछ महापुरूष आपसे मिलना चाहते हैं। आओ आप सभी आ जाओ। महापुरूष राजा राम, सरस्वती, वीना, मंजू, मौजी लाल, भाई साहब चौहान जी, हरियाणा और पंजाब की सगंत के कुछ महापुरूष सतगुरू भगवान के समक्ष बैठ गये। बाबा जी बड़े ही आनंद की मुद्रा में थे। कहिये आप की क्या कोई जिज्ञासा है अर्थात आप कुछ जानना चाहते हैं। महापुरूष राजा राम और सरस्वती जी ने हुजूर महाराज से विनती की, बाबा जी अगर आपकी आज्ञा हो तो हम एक विनती आपके समक्ष रखें, हॉ भई क्यों नही इससे बढ़िया क्या मौका होगा। यह तो बहुत अच्छा होगा आपके कारण इन सब को भी प्रभु चर्चा सुनने का मौका मिलेगा।

महापुरूष राजा राम और बीबी सरस्वती जी ने हुजूर महाराज जी से प्रार्थना की कि हुजूर महाराज हम आपके श्री चरणों में बैठकर आपके मुख से यह रूहानी सत्संग प्रवचन सुनकर बहुत ही आनंदित होते है। यह परिवार निराकारी जागृति मिशन की हमेशा तन मन और धन से सेवा करता रहता है। जहॉ पर भी संत समागम होता है महापुरूष राजा राम, बीबी सरस्वती जी अपने परिवार समेत हर कार्यक्रम में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते हैं। निश्चय ही इस परिवार का योगदान बहुत ही सराहनीय है। बीबी सरस्वती जी ने बहुत ही विनम्र शब्दों में कहा कि हुजूर महाराज हम यह एहसास करते हैं कि वास्तव में आत्मज्ञान की चर्चा ही जीव

का कल्याण कर सकती है। इसीलिए आज कृपा करके सत्संग और आत्मज्ञान की महिमा पर ही प्रकाश डालने की कृपा करें। ठीक है अगर आप सब की यही इच्छा है तो आज इसी रहस्य पर ही चर्चा करेंगे ।

हुजूर महाराज ने कहा कि बेटा सरस्वती सिर्फ इस अक्षर ज्ञान से जीव का कल्याण नही हो सकता। विद्या दो प्रकार की होती है पहली अपरा विद्या दूसरी परा विद्या। यह स्वः स्वरूप आत्मा का ज्ञान परा विद्या है यह विद्या अपने आप में बिल्कुल परिपूर्ण है और इस रूहानी ईलम को जो जानता है उसका जीवन धन्य हो जाता है और जो उसके उपदेश का पालन करता है वह भी उसी सदगति को प्राप्त होता है।

पवित्र बाईबल में भी वर्णन आता है कि वे लोग धन्य है जिनका मन पवित्र है, सिर्फ उन्ही लोगों को ही खुदा का दीदार हासिल होता है।

बेटा पप्पी वास्तव में आप सत्संग महिमा समझते हैं। मै हमेशा देखता हूँ कि आप हर सत्संग में बराबर आते हो और मेरी बात को ध्यान से सुनते हो। वास्तव में असली जीवन यही है आप जैसे सत्संगियों का इसी जन्म में ही कल्याण हो जायेगा। बस सत्संग सेवा और सिमरण के लिये हमेशा समय निकालें तभी वास्तविकता सामने आयेगी। सतसंगत मिल रहिये माधो जैसे मधुप मखीरा। सतगुरू

महाराज ने सत्संग की महिमा पर जोर देते हुआ कहा कि साध–संगत जी सत्संग की मानव जीवन में बहुत ही बड़ी महिमा है। जैसी संगत वैसी रंगत यह वाकई सोलह आने सच है।

सरस्वती बीबी मैं समझता हूँ कि आप का सतगुरू महाराज और इस निर्गुण–निराकार परमात्मा पर अटूट विश्वास है। बेटा अंतकाल में यही काम आयेगा। आप अपने मार्ग पर अड़िग रहो क्योंकि–

मोक्ष-मुक्ति का असली अर्थ संसार के सभी रिश्ते-नातों, सगे-संबधिओं, तमाम उपाधिओं-उपलब्धिओं और तरह-तरह की आसक्ति से आजाद हो जाना।

जीवन में बेटा यह असलियत याद रखना क्योंकि यह सभी वेदों–शास्त्रों, उपनिषदों, पुराण–महापुराणों और सभी धर्मो के सदग्रंथों का सार है कि वक्त का आत्मदर्शी सतगुरू अर्थात जो निर्गुण–निराकार परमात्मा को तत्व से जानता हो और यह ओत–प्रोत निराकार परमचैतन्य परमसत्ता ही सिर्फ अपने आप में मुक्त और स्वतंत्र है।

सतगुरू और इस निर्गुण-निराकार परमात्मा से तन, मन, वचन और कर्म से, पूर्ण समर्पण और शरणागत भाव के साथ जुड़ना और निरंतर इसी शुद्ध, बुद्ध और मुक्त स्वरूप निर्गुण-निराकार परमात्मा का ध्यान करते हुए यही हो जाना ही मोक्ष-मुक्ति है।

सत्गुरू और परमात्मा वास्तव में एक सिक्के के दो पहलू है जो हमेशा साथ–साथ चलते हैं। सिर्फ देखने में दो लगते हैं लेकिन वास्तव में एक ही है। भक्ति मार्ग में सतगुरू के प्रति प्रेम, प्रीती और प्यार की बहुत ही बड़ी महिमा है। जब निरंतर सत्संग, सेवा और सिमरण से अंतःकरण में अपने प्रियतम का ध्यान और सतगुरू की पावन छवी पूर्णतौर से बस जाती है तब अपने आप ही रोम–रोम पुकारने लगता है और नेत्र रिम–झिम बरसने लगते है। जब शिष्य सतगुरू के सच्चे आत्मिक प्रेम, प्रीति और प्यार का पूर्णरूप से रसास्वादन कर लेता है तब वह इस निर्गुण–निराकार परमात्मा के सभी रहस्यों को भली–भांति जान लेता है। जप, तप, व्रत सयंम, पूजा–पाठ, वैराग्य, ज्ञान, योग आदि और अनेकों प्रकार की साधनाओं से ऊँचा और श्रेष्ठ वक्त के आत्मदर्शी सतगुरू से प्रेम और उनके आदेश–उपदेश की पालना करना है। वह दिल मुबारक है जो अपने प्रियतम के विरह की अग्नि में तप रहा है, **वे ऑखें मुबारक हैं जो अपने प्रियतम की याद में आँसुओं के मोती बिखेर रही हैं।** इसीलिए बेटा सरस्वती सतगुरू के प्रति प्रेम–प्रीति और प्यार का दर्जा बहुत ही उॅचा है क्योंकि मालिकेकुल यह निराकार परमात्मा स्वंय भी तो प्रेम–ज्ञान, सत–चेतन–आंनद स्वरूप है।

शिष्य का अपने सतगुरू के प्रति सच्चा और पक्का आत्मिक प्रेम-प्यार प्रकट होने से वह इस निर्गुण-निराकार परमात्मा एवं सतगुरू की

आशीष और आर्शिवाद का अधिकारी बन जाता है। उसके पास सब नियामते इकट्ठी हो जाती है एक आम आदमी भी महान व्यक्तित्व का स्वामी बन जाता है। प्रेम न होने पर सब नियामते खत्म हो जाती है। इसीलिए अपने दिल में इतनी आह और चाह पैदा करो कि परमात्मा स्वयं तेरे पास आने और मिलने के लिए मजबूर हो जाये। क्योंकि प्रेम सबकुछ अर्पण कर देने का नाम और सतगुरू के प्रति निरंतर बना रहने वाला आकर्षण हैं जो तोड़े टूटता नही है छोड़े छूटता नही।

जैसी संगत होगी वैसा ही रंग चढ़ता जायेगा। सत्संग के प्रभाव से बहुत पापी से महापापी भी निर्मल हो जाता है। लेकिन एक बात ध्यान रखने वाली है महापुरूषो सत्संग प्रवचन ऐसे संत का सुनो जो इस निर्गुण–निराकार प्रियतम परमात्मा को जानता और पहचानता हो। कहने का भाव जिसके अंदर यह सतपुरूष प्रकट हो। दैहिक, दैविक और आत्मिक तीनो संतापों से छुटकारा पाने के लिऐ सत्संग बहुत ही जरूरी है। बेटा पप्पी–

सत्संग का लाभ उन्ही को मिलता है जिनका अपने सतगुरू के प्रति पूर्ण सर्म्पण एवं शरणागत भाव अगाध श्रद्धा, दृढ़ विश्वास, पक्का इरादा, जीवन का सच्चा लक्ष्य भगवतप्राप्ति हो। जितना खाली होकर सत्संग में आओगे उतना ही आनंद से भर जाओगे।

देखो ध्यान से सुनो और इस बात को जीवन में याद रखना। निश्चय ही आप सब का कल्याण होगा। भगवान कृष्ण जी सत्संग की महिमा और आत्मज्ञान के बारे कहते हैं कि हे उद्धव न योग, न ज्ञान, न धर्म पुस्तकों का स्वाध्याय, न जप, न तप, न त्याग, न दान, न पूजा–अर्चना, न वेदों का पाठ, न तीर्थ और न मन और इंद्रियों का दमन करने से जीव मुझे इतनी आसानी से पा सकते है जितनी आसानी से सत्संग द्वारा। सुन लिया बेटा सरस्वती इतनी बड़ी महिमा है सत्संग की। ये शब्द मैने नही बनाये बल्कि भगवान के मुख से निकले हुऐ सत वचन है और कभी भी झुठे नही हो सकते। बस जरूरत है इन पावन वचनों को मानने की और जीवन में अमलीजामा पहनाने की।

हुजूर महाराज ने महापुरूष राजा राम (उर्फ राजू) की तरफ इशारा करते हुए कहा कि मैनेजर साहब आप भी कुछ कहो। आपकी भी कुछ जिज्ञासा जरूर होगी। हुजूर महाराज जी हम सब को आपके ये अनमोल वचन सुनकर बहुत ही आनंद आ रहा है। कृपा करके इसी निर्गुण–निराकार के बारे में ही चर्चा करें। देखो बेटा राजू आप पढ़े–लिखे महापुरूष है और मेरी बात को अच्छी तरह समझते हो। यह सब दृढ़ता और विश्वास का खेल है। यह निर्गुण निराकार वास्तव में बहुत ही महान है। देखो आप ने इस निराकार सर्वव्यापक हस्ती की पहचान कर ली है। आओ पूरा सतगुरू मिला है, इस इशारे को समझो। संसार में इस ब्रह्मज्ञान से श्रेष्ठ

कोई भी चीज नही है। लेकिन इसको समझने के लिऐ अपने सतगुरू के प्रति पूर्ण शरणागत एवं सर्मपण भाव चाहिये।

काश कि सभी को यह ज्ञान हो जाये कि मेरा प्रियतम परमात्मा सब में निवास करता है। किसी फकीर ने यह सच ही कहा कि 'हे दिल तू जिंदा दिलों की परिक्रमा कर क्योकि जिंदा दिलों में सच्चा काबा छिपा है। क्योंकि काबा शरीफ तो हजरत इब्राहिम ने बनवाया है लेकिन यह दिल तो परमात्मा ने खुद बनाया है।

बेटा यह मार्ग बहुत कठिन भी है और आसान भी है। जिसकी समझ में आ गया तो आसान वरना बहुत ही मुश्किल है। यह प्रेम का मार्ग है पलटू साहिब तो यहॉ तक कह गये है कि–

परमात्मा से प्रेम करने का मार्ग इतना आसान नही है जितना कहा और सुना जाता है। क्या तुम अपना सिर अपने हाथों से काटने के लिऐ तैयार हो, अगर नही फिर परमात्मा से प्रेम करने के सपने ना देखो। यह कोई शक्कर की डली नही है जो खा लो, परमात्मा से प्रेम करने वाला प्रेमी तो हमेशा दिन-रात सूली पर लटका रहता है। जीते जी मर जाता हैं। अपना सबकुछ दाव पर लगा देता है। वे लोग कितने मूर्ख हैं जो परमात्मा के प्रेम को मौसी के घर की दावत समझकर प्रेमी बनते है।

महापुरूषो इस बात पर हमेशा सत्संग में जोर दिया जाता है कि सतगुरू के प्रति प्रेमभाव और निरंतर इस निर्गुण–निराकार परमात्मा का ध्यान ही भक्ति माार्ग में सफलता की कुॅजी है। पूर्ण सर्म्पण भाव के साथ किया गया प्रेम ही जीवन का प्राण और रस है। प्रेम के बिना जीवन नीरस और निष्प्राण हो जाता है। लेकिन राजू बेटा एक बात हमेशा जीवन में याद रखना कि यह सतगुरू के प्रति प्रेम इतना आसान नही जितना कहने–सुनने और किताबों में पढ़ने में आता हैं। जिन प्रेम कियों तिन ही प्रभु पायो अर्थात प्रेम कोई बनिये की दुकान नही है इसमें तो शरीर, प्राण, ईमान सब कुछ अपने प्रियतम पर न्यौछावर करने पड़ते है। हर प्रकार के लोभ को त्यागकर किया गया प्रेम ही सच्चा प्रेम है। बेकार का तर्क–वितर्क और कोरी कपोल कल्पना के आधार पर निर्रथक बहसबाजी का नाम प्रेम नही हैं। ख्वाजा हाफिज़ ने सच्चे प्रेम के बारे में बिल्कुल सच कहा है कि–

तू प्रियतम की जुल्फों में अपने दिल को कैद कर ले और अपने प्रियतम के ध्यान में मग्न हो जा, क्योंकि थोथी दलीले प्रेमी के नुकसान का कारण बनती है।

आज जो भी आप को बता रहा हूँ यह सोलह आने सच है और भक्ति मार्ग का सार एवं पराकाष्ठा है। काश कि सब के जीवन में सतगुरू का प्यार प्रकट हो जाये तभी वास्तविकता सामने आयेगी और इंसान मोक्ष–मुक्ति

का अधिकारी बन सकेगा। बेटा यह भक्ति मार्ग का परम रहस्य है।

सच्चा प्रेम दो दिलों को एक कर देता है और भेदभाव बिल्कुल मिटा देता है। सतगुरू के प्रति सच्चे प्रेम के बारे में क्या कहा जाये। सच्चे इश्क की पहचान यह है कि आशिक़ माशूक के ध्यान में उसी का रूप बन जाये ऐसे प्रेमियो पर मालिक भी आशिक हो जाता है और उनकी सब इच्छाओं को बिना मागें ही पूरी कर देता है।

बेटा ऐसी अवस्था जब प्राप्त हो जाती है तब सच्चा प्रेमी सतगुरू के प्रति पूर्णरूप से समर्पित होकर इस निर्गुण–निराकार का जीते जी साक्षात्कार कर लेता है और अंततः यही हो जाता है।

सच्चे प्रेमी की आँखों से आँखे मिलाने से जो आनंद पलभर में प्राप्त हो जाता है वह हजारों वर्ष कठोर तपष्या करने से भी नही मिल सकता। सतगुरू के प्रति सच्चा प्यार एक ऐसा सरूर है जो कभी कम नही होता।

जिज्ञासु के अंदर सच्चा प्रेम इस निर्गुण–निराकार परमात्मा के साक्षात स्वरूप वक्त के हाकिम आत्मदर्शी सतगुरू की दया–मेहर से और निरंतर नाम अर्थात शब्दधुन अनहद शब्द का अभ्यास करने से पैदा होता है। अभ्यास के दौरान जब हमारी सूरत, अनहद शब्द के

साथ जुड़ना शुरू करती है वैसे ही प्रेम अंतर में हिलोरे मारने लगता है। सतगुरू के प्रति सच्चा प्रेम सतगुरू के दर्शन करने से, सतगुरू के साथ वार्तालाप करने से और सतगुरू की पावन याद और ध्यान करने से होता है।

यह जीवन बहुत ही अनमोल है। श्वास–श्वास बहुत ही कीमती है। सिकंदर ने मृत्यु के समय आधा राज्य उस व्यक्ति को देने की घोषणा की जो उसे इतने समय जीवित रख सके जिसमें वह अपनी माता से मिल सके। परंतु सभी वैद्यों–हकीमो ने जबाब दे दिया कि चाहे सारी सम्पति भी दी जाये तब भी एक श्वास जिन्दगी में नही जोड़ सकते। तब सिकंदर के आँसू निकलने लगे और एक ठंडी आह भरकर कहा कि अफसोस अगर मुझे पता होता कि सांस इतनी कीमती है। इसीलिए हमेशा इस निर्गुण–निराकार एंव सर्वाधार परमात्मा का शुकराना करो जो यह करता है हमारे भले के लिऐ ही करता है। इसकी पहचान जब हो गयी बाकी कुछ भी जानने के लिये शेष नही बचा। आप सबको यह बहुमूल्य ज्ञान मिला हैं। इसकी कदर करो, इसको अंतःकरण में धारण करो। इस ज्ञान के बिना सबकुछ व्यर्थ और बेकार है। जिसने इस निर्गुण–निराकार को सतगुरू की कृपा से जान लिया। इसके दर्शन–दीदार करके वह भी यही हो जाता है। बस बेटा यही मनुष्य जीवन की सबसे श्रेष्ठ उपलब्धि और जीवन जीने की कला है। साध–संगत जी प्यार नाल आखो धन निराकार जी।

संगरूर पंजाब में हुजूर महाराज के रूहानी प्रवचनों से आत्मविभोर होते हुए श्रद्धालू

निराकारी जागृति मिशन की शुरूआत

परमवंदनीय हुजूर बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज के साथ 10 अक्टूबर 2003 को संगरूर पंजाब में हुई ज्ञान चर्चा

.....

संगरूर पंजाब 10 अक्तुबर 2003 में एक विशाल संत समागम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, यू. पी., हिमाचल से आए अनेकों महापुरूषों ने समागम की शोभा बढ़ाई और भजनों एवं शब्दवाणी से संगत को निहाल किया।

सतगुरू महाराज के रूहानी प्रवचनों से पहले पावन पवित्र वाणी का एक श्लोक पढ़ा गया 'एक जपो एक सलाह, एक ही सिमरो तन मन माह, एकस के गुण गाओ अनंत, तन मन जपे एक भगवंत' हुजूर महाराज ने सबसे पहले जयघोष किया, जो बोले तिस बलिहार, धन निराकार, धन धन मेरे सतगुरू तू वास्तव में धन्य है। बाबा जी ने रूहानी प्रवचन करते हुए फरमाया कि यह निर्गुण–निराकार परमात्मा एक था, एक है, और आगे भविष्य में भी ज्यों का त्यों एक ही रहेगा। सतगुरू कृपा से पहले इसकी पहचान कर लो, इसको जान लो, फिर इसी एक का जिसमें सब कुछ समाया है एकाग्रता और तन्मयता से निरंतर ध्यान करो। जिसके उपर सतगुरू के उपदेश और इस ज्ञान रूपी पारस मणि का रंग चढ़ जाता है। जो संसार में विचरण करते हुए इसी निर्गुण–निराकार परमात्मा के चिंतन में आत्म मस्त रहता है, जिसके

मन में इसके सिवाय कोई और नही, बस चारों तरफ इसी का एहसास होता है। ऐसा ज्ञानवान महापुरूष जीते जी जन्म–मरण के चक्कर से मुक्त होकर मोक्ष का अधिकारी बन जाता है।

हुजूर महाराज ने अपनी बात को जारी रखते हुए कहा कि यह जो महापुरूष शोभा राम जी मेरे पास बैठे हैं इस परिवार का और संगरूर की समस्त संगत का हमेशा ही निराकारी जागृति मिशन की तन, मन और धन से सेवा करने में विशेष योगदान रहा है। जब भी यहॉ संगरूर में संत सम्मेलन होता है, यहॉ के महापुरूष और बहन बढ़–चढ़कर सेवा करते हैं। बाबा जी ने कहा कि मेरे सतगुरू भगवान परमपूजनीय बाबा महताब सिंह जी महाराज जब भी यहॉ संगरूर में आते थे ज्यादातर महापुरूष शोभा राम के घर ही ठहरते थे। शुरू से ही भाई शोभा राम जी के परिवार और संगरूर की सारी संगत के ऊपर मेरे सदगुरू परमपूजनीय बाबा महताब सिंह जी महाराज की विशेष कृपा रही है। यही कारण है कि आज संगरूर की संगत ज्ञान से भरपूर, सतगुरू के प्रति श्रद्धावान, निष्ठावान, कर्तव्यपरायण और हर तरह से साधन सम्पन्न है। बाबा जी ने कहा कि महापुरूष शोभा राम और इनकी धर्मपत्नी माता शांति देवी सतगुरू भगवान के एक बहुत ही उच्चकोटि के अनन्य भक्त हैं। इन दोनों के अथक प्रयास और अन्य महापुरूषों के योगदान से यहॉ संगरूर में हमेशा सत्संग होता रहता है।

सत्संग के बाद बाबा जी आराम फरमाने लगे। शाम के समय हम सब हुजूर महाराज जी के साथ महापुरूष कमल के घर चले गये। सब बाबा जी के बहुत ही नजदीक से दर्शनों का आनंद ले रहे थे। महापुरूष कमल ने हुजूर महाराज से कुछ ज्ञान चर्चा करने के लिए आग्रह किया। बाबा जी ने कहा कि महापुरूषां मेरा तो काम ही इस निर्गुण–निराकार परमात्मा की महिमा का गुणगान करना है। मुझे वो इंसान बहुत ही प्यारा है जिसके मन में हमेशा परमेश्वर के नाम की चर्चा सुनने और सुनाने की प्रबल इच्छा होती है।

महापुरूष कमल जो एक बहुत ही अनुभवी एवं उच्च कोटि के महापुरूष हैं और निराकारी जागृति मिशन के प्रभारी भी हैं। कमल जी का पूरा परिवार सतगुरू महाराज के बहुत ही नजदीक रहा है। हुजूर बाबा महताब सिंह जी महाराज और हुजूर बाबा लक्ष्मण सिंह जी महाराज का इनको भरपूर प्यार और दुलार मिला। हुजूर महाराज कई बार कहा करते थे कि बेटा कमल आपने इस मिशन की तन, मन और धन से खूब सेवा करनी है, चिंता मत करना किसी भी चीज की कमी नही रहेगी। हमेशा सतगुरू के प्रति ईमानदार, वफादार, समर्पित और शरणागत रहो तभी जीवन जीने का आनंद आएगा। महापुरूष कमल जी ने बाबा जी से विनती की, सतगुरू महाराज इस अदृश्य और अव्यक्त निर्गुण–निराकार परमात्मा के दर्शन करने का कोई और

तौर–तरीका भी हैं। नहीं बेटा, बिल्कुल नही, इस ज्ञान के सिवाय कोई दूसरा साधन है ही नही।

बस महापुरूषो, जो दिखाई नही देता इसके दर्शन करने के लिए प्रज्ञा वाली ऑख, दिव्य ज्ञान चक्षु चाहिये। बेटा वक्त के हाकिम आत्मदर्शी सतगुरू की कृपा से ही इस विराट परमसत्ता के दर्शन–दीदार हो सकते हैं। हुजूर महाराज ने फरमाया कि सभी ध्यान से सुनो और हमेशा जीवन में याद रखना कि जिसके सम्पूर्ण कर्म इस स्वः स्वरूप आत्मा के ज्ञान की अग्नि में भस्मीभूत हो गये हों, तमाम संकल्प–विकल्प नष्ट हो गये हों, जिसके कर्म में फल की इच्छा ना छिपी हो, अर्थात जिसके कर्म निःस्वार्थ हो सिर्फ ऐसे ज्ञानवान महापुरूष को ही इस ओत–प्रोत निर्गुण–निराकार परमात्मा का हमेशा अंग–संग रहने का बोध एवं एहसास होता है और उसी का जीवन सार्थक सिद्ध होता है।

हुजूर महाराज ने कहा कि यह पावन पवित्र निराकार शब्द स्वरूप परमात्मा जो सारी सृष्टि के कण–कण में समाया हैं। यह सभी का आसरा और सहारा है। जो इसका सिमरण ध्यान करते हैं उनको अपने आप ही अनामी का परिचय एवं पहचान हो जाती है। इसी लिए–

हमेशा इसी निर्गुण-निराकार नाम की रटन, इसी की लगन, इसी निराकार नाम की धुन, इसी का ध्यान करने से ही वास्तविकता सामने आती है। इसी ज्ञान साधना से परमात्मा के दोनो स्वरूप

अर्थात सगुण/साकार, निर्गुण-निराकार का अनायास ही ज्ञान हो जाता हैं। इस सहज और अति सरल साधना में नये-नये रहस्य उजागर होते हैं। जो इस सार सत्य को विवेक से परख लेते है, वो जीवन के मर्म को समझ लेते हैं। ऐसे ज्ञानवान महापुरूष तन, मन, बुद्धि, चित और अंहकार की सीमाओं से पार एवं परे सर्वव्यापी, अजर, अमर, अविनाशी और सर्वशक्तिमान चेतना के भण्डार निर्गुण- निराकार परमात्मा के साथ जीते जी एकरूप हो जाते हैं।

कहाँ किसमें मै हूँ, कहाँ किसमें तू है,
यह तो सिर्फ कहने की गुफ्तगूं है,
जिसमें सब है, जो सब में है
इसको कोई क्या ढूँढे
यही हू-ब-हू है यही रू-ब-रू है।

धन निराकार जी